✳Website : www.kalamlok.com✳



वर्ष - 10 अंक - 178

कलम लोक

बक्सर, गुरूवार 29 अक्टूबर 2026

पृष्ठ - 8
मूल्य 2 रू.

"हमें अपने अभाव एवं स्वभाव दोनों को ही ठीक करना चाहिए; क्योंकि ये दोनों ही उन्नति के रास्ते में बाधक होते हैं।

सम्राट चौधरी के नेतृत्व में लोकतंत्र बचाओ पदयात्रा, पटना की सड़कों पर उतरी भाजपा





पटना (एजेंसी)।

बिहार में भारतीय जनता पार्टी विपक्ष के खिलाफ पदयात्रा निकालने जा रही है। इसे लोकतंत्र बचाओ, अराजकता हटाओ अभियान नाम दिया गया है। कुछ ही देर में कारगिल चौक से शुरू होकर जेपी गोलंबर तक यह पदयात्रा जाएगी। प्रदेश के सीएम सम्राट चौधरी इस पदयात्रा की शुरुआत की। इसमें बीजेपी के दिग्गज नेता शामिल हुए।

भाजपा अध्यक्ष संजय सरावगी सहित भाजपा के विधायक, नेता और कार्यकर्ता भी मौजूद रहे। वहीं, पार्टी नेता 'एसआईआर तो बहाना है, घुसपैठिये को बचाना है' का नारा लगा रहे थे।

संजय सरावगी ने कहा कि राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन, असम के सीएम हिमंता विश्वशर्मा, केंद्रीय मंत्री भूपेंद्र यादव प्रमंडल की पदयात्रा में शामिल होंगे। एसआईआर के मसले पर राजद और कांग्रेस नाहक प्रलाप कर रहा है। मृतकों का नाम कटने पर बवाल मचा रहे हैं। फर्जी नाम कटने पर रोना रो रहे हैं। आयोग ने अपना काम किया तो विपक्ष को लोकतंत्र खतरे में लग रहा है। अपनी जीत मिलने पर कुछ नहीं बोलते हैं। कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने पीएम के खिलाफ टिप्पणी की। न्यायालय पर टिप्पणी करते हैं। देश में 28 विप की सीटों में से एक पर भी कांग्रेस नहीं जीती। देश में अराजकता फैलाना चाहते हैं। देश प्रदेश की तरक्की हो रही है तो पच नहीं रहा है। विपक्ष का सुपड़ा साफ हो गया है। आम जनता के बीच विपक्ष के चाल, चेहरा और चरित्र को उजागर करेंगे।

बिहार बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष संजय सरावगी ने मंगलवार को जारी बयान में आरोप लगाया था कि कांग्रेस और इंडिया गठबंधन पूरे देश में झूठा नैरेटिव स्थापित करने की कोशिश कर रहा है। इसके विरोध में बीजेपी ने यह कार्यक्रम चलाने का फैसला लिया है। इस पदयात्रा का पहला चरण देश भर में 5 नवंबर तक आयोजित होगा। जिसे लेकर बिहार में भी व्यापक तैयारी की गई है। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि इसके तहत विपक्ष की राजनीति का जवाब देने के लिए बीजेपी अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित करेगी। उन्होंने आरोप लगाया कि विपक्ष हमेशा ऐसे मुद्दे उठाता है, जिन्हें देश की जनता पहले ही नकार चुकी है। वह चुनाव आयोग और संवैधानिक संस्थाओं पर सवाल उठाकर जनता के बीच भ्रम फैलाने का प्रयास करती है।

5 नवंबर तक चलेगा पहल चरण

बिहार बीजेपी के प्रदेश अध्यक्ष संजय सरावगी ने मंगलवार को जारी बयान में आरोप लगाया था कि कांग्रेस और इंडिया गठबंधन पूरे देश में झूठा नैरेटिव स्थापित करने की कोशिश कर रहा है। इसके विरोध में बीजेपी ने यह कार्यक्रम चलाने का फैसला लिया है। इस पदयात्रा का पहला चरण देश भर में 5 नवंबर तक आयोजित होगा। जिसे लेकर बिहार में भी व्यापक तैयारी की गई है। प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि इसके तहत विपक्ष की राजनीति का जवाब देने के लिए बीजेपी अलग-अलग कार्यक्रम आयोजित करेगी। उन्होंने आरोप लगाया कि विपक्ष हमेशा ऐसे मुद्दे उठाता है, जिन्हें देश की जनता पहले ही नकार चुकी है। वह चुनाव आयोग और संवैधानिक संस्थाओं पर सवाल उठाकर जनता के बीच भ्रम फैलाने का प्रयास करती है।

मोदी कहीं नहीं जाएगा... खरगे के 'बाप' वाले बयान पर बीजेपी का पलटवार, जारी किया गीत

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय जनता पार्टी ने कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को लेकर की गई 'बाप' वाली टिप्पणी के खिलाफ सोशल मीडिया पर अपना अभियान तेज करते हुए एक गीत जारी किया है, जिसमें कहा गया है कि मोदी कहीं नहीं जाएंगे क्योंकि जनता ने उन्हें चुना है। भाजपा के बड़े नेताओं से लेकर केंद्रीय मंत्रियों और पार्टी के अनेक पदाधिकारियों ने सोशल मीडिया में इसे शेयर किया है। इन पोस्ट में यह गीत साझा किया गया जिसमें मोदी की विभिन्न तस्वीरें दिखाई गई हैं।

भाजपा नेताओं संबित पात्रा, पीयूष गोयल, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव, दिल्ली की मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता और केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री अन्नपूर्णा देवी ने भी इस गीत का वीडियो साझा किया। गीत में कांग्रेस पर निशाना साधते हुए बार-बार कहा गया है, ' 'मोदी कहीं नहीं जाएगा।'' गीत के बोल हैं, ' '...आंखें झुका लो, कान खोल के सुन लो, मोदी कहीं नहीं जाएगा, मोदी कहीं नहीं जाएगा।'' इसमें विपक्ष पर तंज कसते हुए कहा गया है, ' 'तुमने सोचा झुका दोगे, पर शेर नहीं झुकता, जनता का जो साथ है, वो कभी नहीं रुकता।'' विपक्ष पर अपशब्दों का इस्तेमाल करने का आरोप लगाते हुए गीत में कहा गया है, ' 'तुम गाली पे गाली दो, वो काम दिखाता है, सपनों के भारत को वो आगे बढ़ाता है।''

राहुल गांधी ने क्या कहा?

कांग्रेस ने एक वीडियो साझा किया, जिसमें उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और मुख्य निर्वाचन आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार पर देश में वोट चोरी में शामिल होने का आरोप लगाया। राहुल गांधी ने कहा कि ये लोग जनता से डरे हुए हैं और अंतत: पकड़े जाएंगे। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने सभी के सामने सबूत रख दिए हैं और ये लोग कहीं भाग नहीं सकते। कांग्रेस ने सोशल मीडिया पर एक अन्य पोस्ट में पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे का एक वीडियो साझा किया, जिसमें उन्होंने पश्चिम बंगाल, हरियाणा, बिहार और महाराष्ट्र की सरकारों पर वोट चोरी का आरोप लगाया। खरगे ने कहा कि पार्टी इसके लिए जिम्मेदार लोगों को जवाबदेह ठहराएगी, उनकी पोल खोलेगी और उन्हें जेल भिजवाएगी।

राहुल गांधी का मोदी-शाह पर निशाना

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने टाटा समूह में चल रहे विवाद के बीच बड़ा बयान दिया है। उन्होंने इसके लिए अपरोक्ष रूप से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को जिम्मेदार ठहराया है। नेता प्रतिपक्ष ने बुधवार को एक्स पर लिखा कि टाटा समूह को आपराधिक तरीके से बर्बाद किया जा रहा है, और किसी भी कारोबारी नेता में एक शब्द बोलने की हिम्मत नहीं है। उन्होंने कारोबियों से पूछा कि वह कब तक चुप रहेंगे। राहुल ने एक्स पर लिखा, टाटा को आपराधिक तरीके से बर्बाद किया जा रहा है, और किसी भी कारोबारी नेता में एक शब्द बोलने की हिम्मत नहीं है। आप कब तक चुप रहेंगे? क्या तब तक, जब तक वे आप पर पूरी तरह कब्जा न कर लें? भारतीय कारोबार मोदी और

चुनाव आयोग के खिलाफ इंडिया गठबंधन की महारैली को सीजेपी का समर्थन, कहा- राष्ट्र सर्वोपरि

नई दिल्ली (एजेंसी)। कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार और मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के विरोध में विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' की ओर से आयोजित महारैली को समर्थन देने की घोषणा की है। यह रैली 1 नवंबर को दिल्ली के रामलीला मैदान में आयोजित की जाएगी। पार्टी ने सामाजिक माध्यम 'एक्स' पर एक बयान जारी कर रैली के प्रति अपना समर्थन व्यक्त किया और मुख्य चुनाव आयुक्त के इस्तीफे की मांग की।

सीजेपी ने अपने संदेश में कहा, ज्ञानू को जाना होगा और राष्ट्र सर्वोपरि है। पार्टी ने इस संबंध में अपना पत्र भी साझा किया है। उसने मतदाता सूची के पुनरीक्षण की प्रक्रिया पर सवाल उठाते हुए कहा कि लोकतंत्र में नागरिकों को अपनी सरकार चुनने का अधिकार होना चाहिए, न कि सरकार को अपने मतदाताओं का चयन करने का।

कॉकरोच जनता पार्टी ने अपने बयान में कहा कि लोकतंत्र का मूल सिद्धांत यह है कि जनता अपनी सरकार चुनती है। पार्टी का आरोप है कि विशेष गहन पुनरीक्षण की प्रक्रिया इस सिद्धांत को कमजोर कर सकती है। उसके अनुसार, इस प्रक्रिया को लेकर उठे सवालों के कारण मुख्य चुनाव आयुक्त ने निष्पक्ष चुनाव कराने वाली संस्था के प्रति आवश्यक भरोसा खो दिया है। सीजेपी ने कहा कि चुनाव आयोग की विश्वसनीयता और स्वतंत्रता बनाए रखने के लिए मुख्य चुनाव आयुक्त का इस्तीफा जरूरी है। हालांकि, ये पार्टी की ओर से लगाए गए आरोप और व्यक्त किए गए विचार हैं।

जनरेटर के धुएं से दम घुटने पर 2 युवकों की मौत, तीन गंभीर

क्योंझर (एजेंसी)। ओडिशा के क्योंझर जिले में लक्ष्मी पूजा के दौरान एक दर्दनाक हादसा सामने आया है। बंद कमरे में जनरेटर चलने से जहरीला धुआं भर गया, जिससे दम घुटने के कारण दो युवकों की मौत हो गई, जबकि तीन अन्य की हालत गंभीर बनी हुई है। सभी पांच युवक एक ही कमरे में सो रहे थे। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

पुलिस के अनुसार, घटना बांसपाल ब्लॉक के अंतर्गत नायकोटे थाना क्षेत्र के सुदुंगा गांव में हुई। पांच युवक एक बंद कमरे में सो रहे थे। इसी दौरान कमरे में जनरेटर चलता रहा और उससे निकलने वाला धुआं धीरे-धीरे अंदर भर गया। आशंका है कि धुएं के कारण दम घुटने से सभी युवक बेहोश हो गए।

चक्रवात अर्नब का कहर

आंध्र प्रदेश में तीन लोगों की मौत, 31 मकान क्षतिग्रस्त

अमरावती/भुवनेश्वर (एजेंसी)। चक्रवात अर्नब का सबसे अधिक प्रभाव आंध्र प्रदेश में देखने को मिला है। राज्य में तीन लोगों की मौत हुई है और 31 मकान क्षतिग्रस्त हुए हैं। तेज हवाओं, भारी बारिश और समुद्र का पानी तटीय बस्तियों में घुसने से कई इलाकों में बाढ़ जैसी स्थिति बन गई है। एहतियात के तौर पर करीब 57 हजार लोगों को राहत शिविरों में पहुंचाया गया है, जबकि 764 गांव प्रभावित बताए गए हैं।



राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (एनडीआरएफ) के महानिरीक्षक नरेंद्र सिंह बुंदेला ने बताया कि चक्रवात से आंध्र प्रदेश के उत्तरी और ओडिशा के दक्षिणी हिस्से प्रभावित हुए हैं। चक्रवात की तीव्रता धीरे-धीरे कम होने का अनुमान है, लेकिन तटीय और निचले इलाकों में भारी बारिश तथा तेज हवाओं का खतरा बना हुआ है। अनकापल्ली, विशाखापत्तनम, काकीनाडा और कोनासीमा जिलों में भारी बारिश हुई है। काकीनाडा में पुलिस ने बाढ़ के पानी में फंसे चार लोगों को सुरक्षित बाहर निकाला। वहीं, लंगरगाह क्षेत्र में केंद्रीय भंडारण निगम के गोदामों में फंसे कर्मचारियों को भी बचाया गया।

764 गांव प्रभावित, 57 हजार लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया; राष्ट्रीय आपदा मोचन बल की 39 टीमें तैनात

एनडीआरएफ ने आंध्र प्रदेश, ओडिशा, छत्तीसगढ़, झारखंड, तेलंगाना और यनम में कुल 39 टीमें तैनात की हैं। राज्य आपदा मोचन बल की 80 टीमें भी राहत एवं बचाव कार्य में जुटी हैं। एनडीआरएफ ने यनम में 39 लोगों को सुरक्षित बचाया है।

प्रशासन ने लोगों से अनावश्यक रूप से घरों से बाहर नहीं निकलने और बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों से दूर रहने की अपील की है। आपात स्थिति में नागरिक सहायता नंबर 112 या काकीनाडा पुलिस नियंत्रण कक्ष से संपर्क कर सकते हैं।

हिन्दू धर्म से जुड़े मामले में थलपति विजय की हाईकोर्ट ने कर दी खूब तारीफ

चेन्नई (एजेंसी)। मद्रास हाईकोर्ट ने हाल ही में एक मामले की सुनवाई के दौरान थलपति विजय की खूब तारीफ की है। मामला हिंदू मंदिरों में प्रवेश से जुड़ा है। हाईकोर्ट ने तमिलनाडु के मुख्यमंत्री सी जोसेफ विजय के मदुरै स्थित प्रसिद्ध मीनाक्षी अम्मन मंदिर के प्रवेश से जुड़े मामले का जिक्र करते हुए कहा कि ईसाई धर्म से ताल्लुक रखने वाले मुख्यमंत्री ने हिंदू मंदिर की आस्था का ध्यान रखा और यह समावेशी दृष्टिकोण का एक बेहद अच्छा उदाहरण है।



HC ने सुनवाई के दौरान कहा कि ष्टरूविजय से इस दौरान हिंदू धर्म में परिवर्तन करने के लिए नहीं कहा गया था, बल्कि उनसे सिर्फ मंदिर के आराध्य देवता में अपनी श्रद्धा और विश्वास की पुष्टि करने का अनुरोध किया गया था। जस्टिस जीआर स्वामीनाथन और जस्टिस पी मुरुगन की पीठ ने 30 अक्टूबर के अपने आदेश में कहा, 'माननीय मुख्यमंत्री, जो ईसाई धर्म को मानते हैं, उनसे हिंदू धर्म अपनाने के लिए नहीं कहा गया था। उनसे सिर्फ भगवान के प्रति अपनी आस्था व्यक्त करने का अनुरोध किया गया था। इसी को हम समावेशी दृष्टिकोण कहते हैं। 'बता दें कि हाईकोर्ट में मदुरै के थंगम वेंकटेश नाम के एक शख्स द्वारा दायर एक जनहित याचिका पर सुनवाई चल रही थी। याचिका में गैर-हिंदुओं को मंदिरों के मंडपम और कोडीमरम यानी ध्वज स्तंभ से आगे जाने से रोकने की मांग की गई थी। याचिका में तमिलनाडु भाजपा के आरोपों का भी जिक्र किया गया था। दरअसल पार्टी ने तिरुवन्नमलाई के अरुणाचलेश्वर मंदिर में एक गैर-हिंदू के टोपी पहनकर घुसने पर आपत्ति जताई थी। इसके अलावा मदुरै सेंट्रल के विधायक बदरुद्दीन मुस्तफा द्वारा कुंभाभिषेकम समारोह के दौरान मीनाक्षी मंदिर के गोपुरम (टावर) पर चढ़ने की घटना का भी हवाला दिया गया था। इन घटनाओं पर नाराजगी जताते हुए पीठ ने कहा कि 'चमचागिरी' या मीडिया के सामने दिखावे के लिए सदियों पुरानी मंदिर परंपराओं और नियमों को ताक पर नहीं रखा जा सकता। इसी वजह से कोर्ट को इस पर एक आधिकारिक और बाध्यकारी फैसला देना पड़ा है। हालांकि हाईकोर्ट ने अपने आदेश में कहा है कि यह नियम केवल आगमिक परंपरा वाले मंदिरों पर ही लागू होगा। शिरडी साईं बाबा मंदिर जैसे पूजा स्थलों पर यह आदेश लागू नहीं होगा, जहां सभी धर्मों के श्रद्धालु दर्शन के लिए आते हैं।

गैर-हिंदुओं को आस्था का देना होगा प्रमाण

सुनवाई के दौरान हाईकोर्ट ने तमिलनाडु के 'आगमिक' मंदिरों में गैर-हिंदुओं के प्रवेश को लेकर अहम फैसला सुनाया है। कोर्ट ने कहा है कि इन मंदिरों में प्रवेश करने की इच्छा रखने वाले गैर-हिंदुओं को एक लिखित वचन पत्र देना होगा। इसमें उन्हें यह स्वीकार करना होगा कि वे मंदिर के देवता में विश्वास रखते हैं और मंदिर के रीति-रिवाजों और परंपराओं का पालन करेंगे। यह अंडरटेकिंग जमा करने के बाद ही गैर-हिंदुओं को मंदिर के एक खास हिस्से के आगे जाने और दर्शन करने की इजाजत दी जाएगी। इसका पूरा रिकॉर्ड एक रजिस्टर में रखा जाएगा। कोर्ट ने बताया कि किस तरह सीएम विजय सितंबर में मीनाक्षी सुंदरेश्वरर मंदिर और अप्रैल में तिरुचेंदुर मुरुगन मंदिर गए थे और एंट्री से पहले इस प्रक्रिया का पालन करते हुए लिखित घोषणा पत्र पर दस्तखत किए थे।

बेंगलुरु-चेन्नई फ्लाइट में यात्री ने इमरजेंसी गेट खोलने की कोशिश

चेन्नई (एजेंसी)। चेन्नई हवाई अड्डे पर इंडिगो के एक यात्री विमान में उस समय हड़कंप मच गया, जब विमान के उतरने के बाद रनवे पर धीमी गति से आगे बढ़ने के दौरान एक यात्री ने कथित तौर पर आपातकालीन निकास द्वार खोलने का बटन दबा दिया। घटना के बाद विमान के चालक दल ने तत्काल कार्रवाई करते हुए यात्री को रोका। बाद में उसे पूछताछ के लिए हवाई अड्डा पुलिस के हवाले कर दिया गया। पुलिस मामले की जांच कर रही है। बेंगलुरु से 142 यात्रियों को लेकर इंडिगो की एक उड़ान मंगलवार रात करीब आठ बजे चेन्नई के घरेलू हवाई अड्डे पर पहुंची थी। विमान के उतरने के बाद जब वह रनवे पर धीमी गति से आगे बढ़ रहा था, तभी कॉकपिट में चेतावनी संकेत सुनाई दिया।

त्योहारों से पहले केंद्रीय कर्मचारियों को मिला तोहफा, महंगाई भत्ते में की 3 प्रतिशत की बढ़ोतरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने त्योहारों से पहले अपने कर्मचारियों को राहत देते हुए महंगाई भत्ते में 3 प्रतिशत की बढ़ोतरी को मंजूरी दी है। बुधवार को केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में इस प्रस्ताव पर मुहर लगाई गई। यह बढ़ोतरी जुलाई 2026 से प्रभावी होगी। इससे पहले अप्रैल में सरकार ने महंगाई भत्ते में 2 प्रतिशत की वृद्धि की थी, जिसके बाद यह मूल वेतन का 60 प्रतिशत हो गया था। नई वृद्धि के बाद महंगाई भत्ते की दर बढ़कर 63 प्रतिशत होने की संभावना है।

महंगाई भत्ते में वृद्धि का उद्देश्य बढ़ती महंगाई के कारण कर्मचारियों पर पड़ने वाले आर्थिक बोझ को कम करना है। दैनिक उपयोग की वस्तुओं और अन्य जरूरी खर्चों की कीमतों में बढ़ोतरी के बीच सरकार के इस फैसले से केंद्रीय कर्मचारियों को राहत मिलने की उम्मीद है। केंद्र सरकार आमतौर पर साल में दो बार, जनवरी और जुलाई में, महंगाई भत्ते की दर में संशोधन करती है। यह भत्ता कर्मचारियों के मूल वेतन के प्रतिशत के आधार पर निर्धारित किया जाता है। इसका उद्देश्य महंगाई बढ़ने के साथ कर्मचारियों की क्रय शक्ति को बनाए रखने में मदद करना है। महंगाई भत्ते में संशोधन का निर्धारण महंगाई से जुड़े आंकड़ों और संबंधित मानकों के आधार पर किया जाता है। इसकी दर बढ़ने से कर्मचारियों के मासिक वेतन में भी वृद्धि होती है। वास्तविक लाभ कर्मचारी के मूल वेतन और लागू नियमों पर निर्भर करता है। सेवानिवृत्त केंद्रीय कर्मचारियों को महंगाई के प्रभाव से राहत देने के लिए महंगाई राहत का प्रावधान है। इसे महंगाई भत्ते की तरह ही पेंशनभोगियों की आर्थिक सहायता के उद्देश्य से दिया जाता है।

उत्तर प्रदेश एमएलसी चुनाव 2026 : भाजपा ने जीती 4 सीटें, समाजवादी पार्टी को भी बढ़त

लखनऊ (एजेंसी)।

उत्तर प्रदेश विधान परिषद की 11 सीटों के लिए हुए द्विवार्षिक चुनाव की मतगणना के दौरान भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) ने चार सीटों पर जीत दर्ज की है, जबकि समाजवादी पार्टी (सपा) को एक सीट पर सफलता मिली है। शेष छह सीटों पर मतगणना के रुझान सामने आए हैं, जिनमें सपा के प्रत्याशी चार सीटों पर आगे बताए जा रहे हैं। हालांकि, इन सीटों पर अंतिम परिणाम घोषित होने तक स्थिति में बदलाव संभव है।

वर्ष 2027 में होने वाले उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव से पहले विधान परिषद की इन सीटों के परिणामों को दोनों प्रमुख दलों के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है। भाजपा और सपा के लिए यह चुनाव अपने संगठनात्मक प्रदर्शन और मतदाता समर्थन का आकलन करने का अवसर है। अब तक घोषित परिणामों के अनुसार, भाजपा के दिनेश कुमार गोयल ने मेरठ स्नातक सीट, श्रीचंद शर्मा ने मेरठ शिक्षक सीट, हरि सिंह ढिल्लों ने बरेली-मुरादाबाद शिक्षक सीट और उमेश द्विवेदी ने लखनऊ शिक्षक सीट पर जीत हासिल की है। वहीं, समाजवादी पार्टी के लाल बिहारी यादव ने वाराणसी मंडल शिक्षक सीट पर लगातार दूसरी बार जीत दर्ज की है। इस परिणाम को सपा के लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जा रहा है। मतगणना के दौरान गोरखपुर शिक्षक और आगरा स्नातक सीट पर भाजपा के प्रत्याशी बढ़त बनाए हुए बताए गए हैं। दूसरी ओर, वाराणसी स्नातक, आगरा शिक्षक, लखनऊ स्नातक और झांसी स्नातक सीटों पर सपा के प्रत्याशियों के आगे होने की सूचना है। यदि ये रुझान अंतिम परिणामों में बदलते हैं, तो सपा का प्रदर्शन पिछले चुनाव की तुलना में बेहतर हो सकता है। वर्ष 2020 में हुए पिछले चुनाव में भाजपा ने 11 में से छह सीटें जीती थीं, जबकि सपा को तीन सीटों पर सफलता मिली थी। दो सीटों पर निर्दलीय प्रत्याशियों ने जीत हासिल की थी। मतगणना के दौरान कुछ स्थानों पर राजनीतिक तनाव और विवाद की घटनाएं भी सामने आईं। आगरा में भाजपा और सपा कार्यकर्ताओं के बीच तीखी झड़प होने की खबर है। वहीं, गोरखपुर-फैजाबाद शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र से सपा प्रत्याशी संजयायन त्रिपाठी ने मतगणना का बहिष्कार करते हुए धांधली के आरोप लगाए। त्रिपाठी का दावा था कि मतगणना के तीसरे दौर तक निर्दलीय प्रत्याशी राजीव यादव 450 मतों से आगे चल रहे थे, लेकिन इसके बाद अचानक उनकी स्थिति बदल गई। ये आरोप प्रत्याशी की ओर से लगाए गए हैं। इस संबंध में आधिकारिक पुष्टि की जानकारी सामने नहीं आई है। वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव में उत्तर प्रदेश में भाजपा को अपेक्षा के अनुरूप सफलता नहीं मिली थी। राज्य की 80 लोकसभा सीटों में से भाजपा ने 33 सीटें जीती थीं, जबकि कांग्रेस और सपा के गठबंधन को कुल 43 सीटों पर जीत मिली थी। अब 2027 के विधानसभा चुनाव से पहले विधान परिषद की इन सीटों के परिणामों पर राजनीतिक दलों की नजर है। भाजपा इन चुनावों के जरिए अपने संगठनात्मक आधार का आकलन करना चाहती है, जबकि सपा अपने समर्थन को मजबूत करने के प्रयास में है।



कुशवाहा की आरएलएम में बगावत थमी, भाजपा अपना बागी नहीं मना पाई; एमएलसी चुनाव में जेडीयू को नुकसान



पटना (संवाददाता)।

बिहार विधान परिषद चुनाव में एनडीए के नेता भले ही एकजुटता का दावा करते रहे, लेकिन सत्ताधारी गठबंधन को बगावत की वजह से एक सीट का नुकसान झेलना पड़ गया। पूर्व केंद्रीय मंत्री उपेंद्र कुशवाहा की पार्टी राष्ट्रीय लोक मोर्चा ने तो अपनी बगावत रोक ली, मगर भारतीय जनता पार्टी अपने बागी को नहीं मना पाई। इस वजह से पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की पार्टी जनता दल यूनाइटेड को नुकसान उठाना पड़ा। यहां बात सारण शिक्षक एमएलसी सीट की हो रही है। जहां भाजपा के बागी राहुल राज ने जेडीयू प्रत्याशी आनंद पुष्कर को हरा दिया। इस सीट पर पहले कुशवाहा की पार्टी रालोमो से रामपुकार सिन्हा भी मैदान में थे, लेकिन बाद में उन्होंने एनडीए को अपना समर्थन दे दिया था।

सारण शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र का चुनाव कई मायनों में रोचक रहा। यह सीट एक समय में लेफ्ट का गढ़ मानी जाती थी। सीपीआई के दिग्गज शिक्षक नेता केदारनाथ पांडेय यहां से चार बार एमएलसी रहे।

उनके निधन के बाद जन सुराज समर्थित आफाक अहमद यहां से एमएलसी बने। हाल ही में चुनाव में केदार पांडेय के बेटे आनंद पुष्कर एनडीए प्रत्याशी के रूप में जेडीयू के टिकट से मैदान में उतरे, मगर गठबंधन में ही भितरघात की वजह से वह जीत नहीं दर्ज कर पाए।

सारण शिक्षक एमएलसी चुनाव के मंगलवार को घोषित नतीजे में निर्दलीय प्रत्याशी राहुल राज ने बाजी मारी। 32 साल के राहुल रिविलगंज प्रखंड प्रमुख हैं। वह भारतीय जनता पार्टी के नेता रह चुके हैं। वह लंबे समय से एमएलसी चुनाव की तैयारी में जुटे थे और शिक्षकों के बीच अपनी पकड़ मजबूत कर रहे थे। राहुल राज एनडीए प्रत्याशी के तौर पर सारण शिक्षक से चुनाव लड़ना चाहते थे, मगर गठबंधन में यह सीट जेडीयू के खाते में चली गई और नीतीश की पार्टी ने आनंद पुष्कर को प्रत्याशी बना दिया।

रालोमो ने रामपुकार सिन्हा को बैठा दिया

सारण शिक्षक सीट पर हालिया चुनाव में एनडीए से एक और बागी मैदान में उतर गए थे। उपेंद्र कुशवाहा की रालोमो के प्रदेश महासचिव रामपुकार सिन्हा ने यहां से निर्दलीय नामांकन कर दिया। रालोमो के चार में से तीन विधायकों का उन्हें समर्थन भी मिल गया। हालांकि, बाद में रामपुकार ने अपनी दावेदारी वापस ले ली और चुनावी मैदान से बाहर हो गए। रामपुकार समेत रालोमो के तीनों विधायकों ने जेडीयू के आनंद पुष्कर को अपना समर्थन देते हुए एनडीए के पक्ष में रहने का फैसला लिया।

भाजपा के बागी राहुल राज ने जेडीयू के आनंद को 1815 वोटों से हराया

सारण शिक्षक एमएलसी सीट चुनाव में निर्दलीय उतरे भाजपा के बागी राहुल राज को कुल 4965 वोट मिले, जबकि जेडीयू प्रत्याशी आनंद पुष्कर 3150 वोट पाकर दूसरे नंबर पर रहे। जेडीयू को 1815 वोटों से हार का सामना करना पड़ा। जन सुराज पार्टी के आफाक अहमद अपनी सीट नहीं बचा पाए और इस मुकाबले में वह 2454 वोट पाकर तीसरे नंबर पर रहे।

इसके बाद राहुल राज ने बागी होकर निर्दलीय चुनाव लड़ने का फैसला लिया। भाजपा उन्हें मनाने में विफल रही। राहुल राज के निर्दलीय उतरने पर भाजपा ने उन्हें पार्टी से 6 साल के लिए निष्कासित कर दिया। इसके बावजूद चुनावी मैदान में राहुल राज ने जलवा दिखाया और अपने दम पर निर्दलीय जीत गए।

दरभंगा से कांग्रेस के मदन मोहन झा हारे, जन सुराज के सुरेश राय जीते

बेगूसराय को फिर मिला एमएलसी



पटना (संवाददाता)।

बिहार विधान परिषद की दरभंगा टीचर सीट से कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और मौजूदा एमएलसी मदन मोहन झा चुनाव हार गए हैं। जन सुराज पार्टी के उम्मीदवार सुरेश प्रसाद राय ने 324 वोट के अंतर से कांग्रेस से दरभंगा शिक्षक सीट छीनकर प्रशांत किशोर की झोली में डाल दी है। सुरेश राय 2020 में भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर एमएलसी चुनाव लड़े और हार गए थे। इस चुनाव से कुछ समय पहले ही सुरेश राय जन सुराज पार्टी में शामिल हुए थे और उन्हें पीके ने कैंडिडेट बनाया था। बीजेपी नेतृत्व वाले एनडीए गठबंधन में दरभंगा शिक्षक सीट नीतीश कुमार की पार्टी जनता दल यूनाइटेड को मिली थी और उसने घनश्याम राय को लड़ाया था। नतीजों में घनश्याम राय चौथे नंबर पर रहे, जबकि तीसरे नंबर पर सीपीएम के रामदेव राय को वोट मिला। बीजेपी को दरभंगा ग्रेजुएट सीट मिली थी, जिस पर उसने मौजूदा विधान पार्षद सर्वेश कुमार को उतारा है और वो राजद के अनिल झा से आगे चल रहे हैं।

सुरेश प्रसाद राय की जीत से दरभंगा टीचर सीट कई साल और बहुत लंबे अंतराल के बाद बेगूसराय जिला के हिस्से गई है। बिहार माध्यमिक शिक्षक संघ के अध्यक्ष व महासचिव रहे शत्रुघ्न प्रसाद सिंह ने सीपीआई के लिए यह सीट दो बार जीती थी, जो बेगूसराय के हैं। उनके बाद बेगूसराय के ही दूसरे शिक्षक नेता वासुदेव सिंह ने सीपीएम के लिए यह सीट जीती। उनके बाद दरभंगा टीचर एमएलसी सीट बेगूसराय के हिस्से नहीं आ रही थी। हालांकि बेगूसराय के ही सर्वेश कुमार दरभंगा स्नातक से एमएलसी हैं। मतगणना के शुरुआती रुझान में वह राष्ट्रीय जनता दल के अनिल झा से आगे चल रहे हैं। अब तक गिने गए 6447 वैलिड वोट में सर्वेश कुमार को 1884 और अनिल झा को 1647 वोट मिला है। रंजीत कुमार राम को 935, दिलीप कुमार को 540, रजनीकांत पाठक को 414, धर्मांश रंजन को 240 वोट मिले हैं। और भी कैंडिडेट मैदान में हैं जो इससे नीचे हैं। दरभंगा टीचर सीट से मदन मोहन झा की हार से कांग्रेस को मिथिलांचल में बड़ा झटका लगा है। यह प्रदेश कांग्रेस के अंदर के समीकरण पर भी असर डालेगा।

ट्रैफिक डीएसपी को घूस लेते निगरानी ने दबोचा, डर से रोने लगा पुलिस अफसर



मधुबनी (संवाददाता)।

बिहार में निगरानी विभाग की टीम ने एक डीएसपी को घूस लेते रंगेहाथ धर लिया है। दरअसर मधुबनी के ट्रैफिक डीएसपी सुजीत कुमार को 30 हजार रुपये रिश्वत लेते रंगे हाथ गिरफ्तार कर लिया गया है। पटना से आई टीम ने शाम करीब चार बजे नगर भवन के सामने स्थित ट्रैफिक डीएसपी कार्यालय में कार्रवाई की। आरोप है कि ट्रिपर संचालक से शहर में गाड़ियां चलाने के एवज में रिश्वत मांगी गई थी। निगरानी विभाग की इस कार्रवाई से डीएसपी कार्यालय और आसपास के इलाके में हलचल मच गई।

निगरानी टीम का नेतृत्व कर रहे डीएसपी पवन कुमार ने बताया कि पंडौल थाना क्षेत्र के गंधवार गांव निवासी ट्रिपर संचालक रोहित मिश्रा ने शिकायत दर्ज कराई थी। उनका आरोप था कि शहर में ट्रिपर (डंपर) चलाने के एवज में ट्रैफिक डीएसपी सुजीत कुमार रिश्वत मांग रहे थे। शिकायत मिलने के बाद निगरानी विभाग ने उसका सत्यापन कराया, जिसमें आरोप सही पाए गए। इसके बाद योजनाबद्ध तरीके से कार्रवाई की गई। ट्रैफिक डीएसपी ने जैसे ही रोहित मिश्रा से रिश्वत के 30 हजार रुपये स्वीकार किए, निगरानी टीम ने उन्हें गिरफ्तार कर लिया। मधुबनी के एसएसपी योगेंद्र कुमार ने बताया कि पटना से आई निगरानी विभाग की टीम ने 30 हजार रुपए रिश्वत लेने के आरोप में ट्रैफिक डीएसपी सुजीत कुमार को गिरफ्तार किया है।

ट्रैफिक डीएसपी सुजीत कुमार के गिरफ्तार होते ही यह चर्चा तेज हो गई कि बस साल बदला दिन वही, तारिख वही, कार्रवाई भी एक जैसी। बता दें कि 27 अक्टूबर 2016 को निगरानी विभाग की टीम ने जयनगर अनुमंडल कार्यालय में कार्रवाई कर तत्कालीन एसडीएम गुलाम मुस्तफा अंसारी और तत्कालीन डीएसपी चंदन पुरी को रिश्वत लेते रंगे हाथ गिरफ्तार किया था। डीएसपी चंदन पुरी पर 50 हजार और एसडीएम गुलाम मुस्तफा अंसारी पर एक लाख रुपये रिश्वत लेने का आरोप था। 10 वर्ष बाद 27 को सुजीत को रंगे हाथ पकड़ा गया। पंडौल क्षेत्र के गंधवार गांव निवासी रोहित मिश्रा ने कुछ दिन पूर्व ट्रिपर चलाने के नाम पर ट्रैफिक डीएसपी सुजीत द्वारा रिश्वत मांगने की शिकायत की थी।

बेहोशी हालत में सदर अस्पताल में भर्ती कराए गए डीएसपी

मंगलवार शाम गिरफ्तारी के बाद कार्यालय से बाहर निकले डीएसपी सुजीत कुमार जमीन पर फफक-फफक कर रोने लगे। उन्हे बेहोशी की हालत में सदर अस्पताल लाया गया। इमरजेंसी में निगरानी विभाग के डीएसपी एवं अन्य पुलिस कर्मी मौजूद थे। लाइन डीएसपी जितेन्द्र प्रसाद एवं सदर एसडीपीओ अमित कुमार सदर अस्पताल पहुंचकर उनके स्वास्थ्य के बारे में जानकारी ली। सदर अस्पताल के चिकित्सक डॉ. कुणाल ने कहा कि उच्च रक्तचाप के कारण डीएसपी सुजीत की हालत बिगड़ गई। उन्हें आईसीयू में भर्ती किया गया है। इलाज जारी है।

बीपीएससी ने जारी किए एएसओ मुख्य परीक्षा के नतीजे



पटना (संवाददाता)।

बिहार में सरकारी नौकरी का सपना देखने वाले युवाओं के लिए एक बेहद शानदार और राहत भरी खबर सामने आई है। लंबे समय से अपने नतीजों की राह देख रहे उम्मीदवारों का इंतजार अब खत्म हो गया है। बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) ने विज्ञापन संख्या 37/2025 के तहत सहायक प्रशाखा पदाधिकारी (एएसओ - एसोसिएट सेक्शन ऑफिसर) की भर्ती के लिए आयोजित मुख्य प्रतियोगी परीक्षा के फाइनल नतीजे घोषित कर दिए हैं। 27 अक्टूबर 2026 को जारी किए गए इस रिजल्ट ने दीवाली से ठीक पहले कई घरों में खुशियों के चिराग रोशन कर दिए हैं। आयोग ने इस बार की चयन प्रक्रिया को बेहद पारदर्शी और तेज रखा है। अगर आप भी उन उम्मीदवारों में से एक हैं जिन्होंने यह परीक्षा दी थी, तो आपके लिए यह जानना बेहद जरूरी है कि इस बार मुकाबला कितना कड़ा था और कट-ऑफ ने किस तरह से चौंकाया है। आइए तफसील से इस पूरे नतीजे और इससे जुड़ी अहम बातों पर नजर डालते हैं।

क्या रही मेरिट लिस्ट?

आयोग ने सामान्य ज्ञान में मिले अंकों के आधार पर 594 उम्मीदवारों की एक संयुक्त मेरिट लिस्ट तैयार की है। अक्सर ऐसा होता है कि कई उम्मीदवारों के नंबर बिल्कुल बराबर आ जाते हैं। ऐसे में फैसला कैसे हो? इसके लिए बीपीएससी ने एक बेहद सुलझा हुआ नियम अपनाया। अगर दो उम्मीदवारों के नंबर बराबर हैं, तो उम्र में बड़े उम्मीदवार को तरजीह दी गई। और अगर इत्तेफाक से दोनों की जन्मतिथि भी एक ही निकल गई, तो उनके नामों को हिंदी वर्णमाला के हिसाब से रखकर रैंकिंग तय की गई। यह तरीका पूरी तरह से इंसानी दखल से दूर और निष्पक्ष है। सरकारी नौकरियों में अक्सर कानूनी पेंच भी देखने को मिलते हैं। इस नतीजे में ईडब्ल्यूएस कैटेगरी के तहत चुने गए रिशु कुमार (रोल नंबर 817089, मेरिट सीरियल नंबर 31) का मामला थोड़ा अलग है। आयोग ने साफ किया है कि रिशु कुमार पर क्रिमिनल केस (कांड संख्या 995/2019) दर्ज है। यह मामला मुजफ्फरपुर के तृतीय अपर सत्र न्यायालय में सत्र वाद संख्या 153/2025 के रूप में लंबित है। इसलिए, उनकी नियुक्ति पूरी तरह से अदालत के अंतिम फैसले पर निर्भर करेगी।

दिव्यांगता के दावों पर आयोग की सख्ती

इस पूरी भर्ती प्रक्रिया में एक बात जिसने सबका ध्यान खींचा, वह थी बीपीएससी की सख्ती। परीक्षा में 13 ऐसे उम्मीदवार शामिल हुए थे, जिन्होंने दिव्यांग कोटे से फॉर्म भरा था। नियम के मुताबिक, इनकी दिव्यांगता की जांच के लिए इन्हें पटना के मशहूर आईजीआईएमएस अस्पताल भेजा गया। अस्पताल की रिपोर्ट जब आयोग के पास पहुंची, तो कई दावों की पोल खुल गई। 5 उम्मीदवार ऐसे पाए गए जिनकी दिव्यांगता तय मानक (40 प्रतिशत) से कम थी। वहीं, 6 अन्य उम्मीदवार तो मेडिकल जांच के लिए अस्पताल पहुंचे ही नहीं। ऐसे में कुल 11 उम्मीदवारों की दिव्यांगता साबित नहीं हो सकी। बीपीएससी ने इस मामले में कड़ा रुख अपनाते हुए न सिर्फ इन्हें दिव्यांग कोटे के फायदों से बाहर कर दिया, बल्कि इनकी प्रारंभिक परीक्षा (प्री) का रिजल्ट भी सीधे तौर पर रद्द कर दिया।

एएसओ मुख्य परीक्षा में कुल 609 उम्मीदवारों ने अपनी किस्मत आजमाई थी। कॉपियों की चेकिंग के बाद इनमें से सिर्फ 57 उम्मीदवारों को ही अगले पड़ाव यानी डॉक्यूमेंट वेरिफिकेशन (कागजातों की जांच) के लिए शॉर्टलिस्ट किया गया। जब दस्तावेजों की जांच का वक्त आया, तो 54 उम्मीदवार ही इस प्रक्रिया को पूरा कर पाए। इन सभी जांच-पड़ताल और फाइनल छंटनी के बाद, आयोग ने कुल 41 खाली पदों को भरने के लिए अपनी अंतिम मुहर लगा दी है। यानी परीक्षा में पास होना लोहे के चने चबाने जैसा होता है। इस बार 41 होनहारों को एएसओ के पद पर तैनाती मिलने का रास्ता पूरी तरह से साफ हो गया है।

जो उम्मीदवार इस परीक्षा में शामिल हुए थे (असफल उम्मीदवारों को छोड़कर), वे अपनी मार्कशीट बीपीएससी की आधिकारिक वेबसाइट bpsc.gov.in पर जाकर देख सकते हैं। इसके लिए उन्हें अपने लॉगिन आईडी और पासवर्ड का इस्तेमाल करना होगा। अगर आपने भी यह परीक्षा दी थी, तो बिना देरी किए वेबसाइट पर जाएं और अपना स्कोरकार्ड डाउनलोड कर लें।

टेंडर घोटाले में श्रम संसाधन के विशेष सचिव से 6 घंटे पूछताछ, ईडी ने आनंद किशोर समेत कई आईएएस अफसरों को बुलाया

पटना (संवाददाता)। चर्चित टेंडर घोटाला जांच मामले में प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने एक बार फिर अपनी कार्रवाई तेज की है। मामले में आधा दर्जन वरिष्ठ आईएएस अधिकारियों को समन जारी कर पूछताछ के लिए बुलाया गया है। अब तक दो अधिकारियों से पूछताछ किए जाने की जानकारी है। वहीं, शेष चार अफसरों को अलग- अलग तारीखों पर पूछताछ के लिए बुलाया गया है। सूत्रों के मुताबिक, महिला आईएएस अधिकारी अभिलाषा शर्मा से सोमवार को पूछताछ हुई। जबकि श्रम संसाधन विभाग में विशेष सचिव पद पर तैनात आईएएस अधिकारी सुनील यादव से मंगलवार को करीब छह घंटे तक पूछताछ की गई। वहीं, बुधवार को धर्मेंद्र कुमार से पूछताछ की जाएगी। सूत्रों ने बताया कि आईएएस अधिकारी योगेश सागर ने अगले सप्ताह तक का समय मांगा है।

वहीं, 29 अक्टूबर को संतोष कुमार मल्ल से पूछताछ की जाएगी जबकि 30 अक्टूबर को वरिष्ठ आईएएस अधिकारी आनंद किशोर को पूछताछ के लिए समन भेजकर ईडी कार्यालय में उपस्थित होने के लिए कहा गया है। ईडी की इस कार्रवाई को टेंडर घोटाले की जांच के अगले महत्वपूर्ण चरण के रूप में देखा जा रहा है। जांच एजेंसी टेंडर आवंटन की प्रक्रिया, कथित अनियमितताओं और इसमें संबंधित अधिकारियों की भूमिका की पड़ताल कर रही है। अधिकारियों से पूछताछ के जरिए यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि सरकारी टेंडरों को कथित तौर पर प्रभावित करने में किन लोगों की क्या भूमिका रही। पूछताछ के निष्कर्षों के आधार पर जांच एजेंसी आगे की कार्रवाई तय कर सकती है।



हाईकोर्ट की टिप्पणी के बाद बढ़ी सक्रियता

इस मामले में जांच की गति उस समय चर्चा में आई, जब पटना हाईकोर्ट ने हाल ही में सुनवाई के दौरान ईडी की जांच और अब तक की कार्रवाई पर सवाल उठाए। अदालत की टिप्पणियों के बाद वरिष्ठ अधिकारियों से पूछताछ की कार्रवाई को अहम माना जा रहा है।

जानकारी के अनुसार, जांच एजेंसी का जोर टेंडर प्रक्रिया में कथित हेराफेरी के पूरे नेटवर्क को समझने और संबंधित लोगों की भूमिका स्पष्ट करने पर है। हालांकि, समन जारी होने या पूछताछ किए जाने मात्र से किसी अधिकारी की संलिप्तता साबित नहीं होती।

रिशुश्री की अग्रिम जमानत याचिका पर सुनवाई के दौरान पटना हाईकोर्ट ने मामले के कुछ अहम पहलुओं पर सवाल उठाए थे। अदालत ने कहा कि ईडी याचिकाकर्ता को सरकारी टेंडरों में हेराफेरी के जरिये मनी लॉन्ड्रिंग का मुख्य सूत्रधार बता रही है, लेकिन उपलब्ध तथ्यों से प्रथम दृष्टया ऐसा प्रतीत होता है कि याचिकाकर्ता महज एक मोहरा हो सकता है और वास्तविक सूत्रधार पर्दे के पीछे हैं। ईडी ने अपने जवाब में अदालत को बताया था कि उसने छह वरिष्ठ अधिकारियों के खिलाफ विश्वसनीय जानकारी साझा की थी। इसके बाद तीन अधिकारियों—मुमुक्षु चौधरी, तरणी दास और उमेश कुमार—के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज हुई। इस पर अदालत ने सवाल उठाया कि जब ईडी ने छह वरिष्ठ अधिकारियों के नाम साझा किए थे, तो सभी को संबंधित प्राथमिकी में आरोपित क्यों नहीं बनाया गया। हाईकोर्ट की इस टिप्पणी के बाद जांच एजेंसी की कार्रवाई पर निगाहें टिकी हैं।

वंदे भारत के इंजन में फंसा लोहे का बैंड, बाल-बाल बची ट्रेन, रेलवे ने गठित की जांच टीम

गया (संवाददाता)। गया-डीडीयू रेलखंड पर रफीगंज और इस्माइलपुर स्टेशन के बीच टाटा-पटना वंदे भारत एक्सप्रेस के इंजन में पटरी पर छूटा लोहे का बैंड फंस गया. सिग्नल विभाग के काम में इस्तेमाल होने वाला यह बैंड रेल पटरी पर रह गया था. घटना के बाद ट्रेन कुछ देर तक रुकी रही, हालांकि कोई बड़ा हादसा नहीं हुआ. रेलवे ने मामले की जांच के लिए विशेष टीम गठित की है, जो यह पता लगा रही है कि बैंड पटरी पर कैसे छूटा और सुरक्षा मानकों का पालन हुआ था या नहीं. गया-डीडीयू रेलखंड स्थित रफीगंज-इस्माइलपुर रेलवे स्टेशन के बीच टाटा-पटना वंदे भारत एक्सप्रेस हादसे का शिकार होने से बाल-बाल बच गयी. ट्रेन संख्या 21893 के गुजरने के दौरान रेल पटरी पर छूटा लोहे का बैंड इंजन में फंस गया. घटना के बाद ट्रेन कुछ देर तक रुकी रही. रेलवे ने मामले को गंभीरता से लेते हुए जांच के लिए विशेष टीम गठित की है. मिली जानकारी के अनुसार, संबंधित रेलखंड पर सिग्नल विभाग की ओर से कामकाज किया जा रहा था. इसी दौरान काम में इस्तेमाल होने वाला लोहे का एक बैंड रेल पटरी पर ही छूट गया.

बीजेपी के लिए खतरे की घंटी! 30 साल से था जिस सीट पर दबदबा अब उसपर मिली हार

पटना (संवाददाता)।

'बिहार की एक खासियत है—जब-जब आपको लगता है कि आप बिहार को समझ गए हैं, तब-तब बिहार आपको झटका देता है', जब-जब बिहार में चुनावी माहौल बनता है तब-तब सोशल मीडिया पर महरानी वेब सीरीज का ये डायलॉग काफी चर्चा में आ जाता है। बिहार में इस समय एक ऐसे चुनाव के नतीजे सामने आए हैं, जिसने सत्ताधारी भारतीय जनता पार्टी को भी झटका दिया है। बिहार विधान परिषद चुनाव में शिक्षक निर्वाचन सीटों पर हुए चुनाव में शिक्षकों ने बड़ा उलटफेर कर दिया है। वहीं बीते 30 सालों से राजधानी पटना में अजेय रहे भारतीय जनता पार्टी को करारी शिकस्त मिली है।

बता दें कि, विधान परिषद चुनाव के नतीजों में बिहार की राजधानी पटना में बीजेपी के अपराजेय होने का मिथक भी धीरे-धीरे टूटता भी दिखाई दे रहा है। भाजपा के सबसे मजबूत वोट बैंक माने जाने वाले पटना और उसके आसपास के शहरी मतदाताओं का भगवा पार्टी से मोहभंग होता दिख रहा है। बिहार के शिक्षक निर्वाचन के सभी चार सिटिंग विधान पार्षद अपना चुनाव हार गए हैं। इसमें सबसे बड़ा झटका भाजपा के लिए है, जिसके 30 साल से विधान पार्षद रहे पार्टी के कद्दावर नेता नवल किशोर यादव चुनाव हार गए हैं। राजद के उम्मीदवार डॉ. संजीव कुमार सिंह ने उन्हें 1,057 वोटों से हरा दिया। इस जीत के साथ ही पटना शिक्षक सीट पर नवल किशोर यादव का लंबे समय से चला आ रहा दबदबा खत्म हो गया।

बिहार में भाजपा नेता नवल किशोर यादव की गिनती जमीनी नेताओं में होती है। केंद्र और राज्य में भाजपा की सरकार होने से उनके पक्ष में माहौल होने की बात कही जा रही थी, लेकिन राजद के डॉ. संजीव कुमार ने नवल किशोर यादव को हराकर बड़ा उलटफेर किया है। बता दें कि, नवल किशोर यादव साल 1996 में पहली बार पटना शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र से एमएलसी चुने गए थे इसके बाद नवल किशोर लगातार चुनाव जीतते आ रहे थे। वहीं साल 2026 में बीजेपी का वर्चस्व पटना सीट पर इस बार टूट गया। बिहार की 8 विधान परिषद सीटों में से 6 शिक्षक निर्वाचन सीटों पर रिजल्ट आ गया है। शिक्षक निर्वाचन क्षेत्र के चार सीटों में शिक्षकों ने किसी एक पार्टी पर भरोसा नहीं जताया है। इस वजह से भाजपा, राजद, जन सुराज के साथ-साथ एक सीट पर निर्दलीय को भी जीत मिली है।

पटना में आरजेडी, तिरहुत में बीजेपी, दरभंगा में जन सुराज और सारण में निर्दलीय उम्मीदवार की जीत हुई है। पटना शिक्षक सीट से आरजेडी के डॉ संजीव जीते हैं। तिरहुत शिक्षक सीट की बात करें तो इसे बीजेपी ने अपने नाम किया है। बीजेपी के नरेंद्र सिंह ने ये सीट जीती है। दरभंगा शिक्षक सीट सजन सुराज के सुरेश प्रसाद राय ने अपने नाम की है। वहीं सारण शिक्षक सीट से BJP के बागी निर्दलीय प्रत्याशी राहुल राज ने जीत हासिल की है। पटना स्नातक सीट से जेडीयू के नीरज कुमार जीते हैं।

वहीं चुनावी रणनीतिकार से राजनेता फिर विधायक बने प्रशांत किशोर ने एमएलसी चुनाव में अपनी ताकत का अहसास करा दिया है। दरभंगा शिक्षक सीट पर जनसुराज के प्रत्याशी ने जीत हासिल की है। यहां जन सुराज पार्टी के सुरेश राय ने कांग्रेस एमएलसी मदन मोहन झा को 324 वोटों से हरा दिया। दरभंगा के अलावा दूसरी सीटों पर भी जनसुराज बड़ी ताकत के रूप में उभरकर सामने आई है।

बता दें कि, कुछ महीने पहले ही जन सुराज पार्टी के मुखिया प्रशांत किशोर ने बांकीपुर उपचुनाव में जीत हासिल की थी। प्रशांत किशोर ने अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी बीजेपी उम्मीदवार नीरज कुमार को 19,324 वोटों के अंतर से हराया था। वहीं अब पटना शिक्षक कोटे की एमएलसी सीट भी गंवा दी। इस हार के बाद राजनीतिक पंडितों की माने तो उन्होंने इसका ठिकरा बीजेपी के ओवरकॉन्फिडेंस पर फोड़ दिया है। सत्ता में वापसी के साथ ही साथ पटना की शहरी और शिक्षक सीटों को भाजपा ने पूरी तरह 'सुरक्षित' मान लिया था। स्थानीय मुद्दों की अनदेखी करने का बीजेपी पर आरोप लगते रहे हैं। वहीं लगातार अनदेखी के कारण शहरी मतदाताओं का एक बड़ा तबका शायद बदलाव की ओर देखने लगा है।

एमएलसी चुनाव में जिस अनुज के लिए वोट मांगा उनको नहीं जानते अनंत, हार मान कर बोले बाहुबली- नीरज से लड़ाई थी इसलिए...

पटना (संवाददाता)। बिहार MLC चुनाव से पहले पटना स्नातक निर्वाचन सीट पर जिस जन सुराज प्रत्याशी के लिए मोकामा विधायक अनंत सिंह सड़कों पर प्रचार करते और वोट मांगते दिखते थे उनको अनंत सिंह नहीं जानते हैं। यह बात खुद मोकामा विधायक अनंत सिंह ने मीडिया से बातचीत में कही है। विधायक अनंत सिंह ने कहा है कि वो तो अनुज सिंह को जानते भी नहीं हैं सिर्फ नीरज कुमार से उनकी लड़ाई थी इसलिए वो अनुज सिंह के लिए वोट मांग रहे थे। इस सीट पर जनता दल (यूनाइटेड) के प्रत्याशी नीरज कुमार ने अपनी जीत का दंभ भरा है और उनके समर्थकों ने भी उन्हें बधाई दी। दिलचस्प बात यह भी है कि नतीजे घोषित होने से पहले ही अनंत सिंह ने कहा कि हां वो हार गए हैं।

अनंत सिंह ने मीडिया से बातचीत में कहा कि इसमें लगने की बात कहां है और तीसरा, चौथा की बात कहां है। हम हार गए हैं। दुकान से लाए थे क्या



हम वोट। जनता मालिक है, जिसको दिया वो जीता और जिसको नहीं दिया वो हारा। अनंत सिंह ने कहा कि पार्टी ही मालिक है जो करेगा वो पार्टी ही करेगा। नीरज सिंह को क्या कहेंगे, वो जीत गए हम हार गए। पार्टी से कभी नाराजगी नहीं है। हम नीरज कुमार को बधाई नही देंगे। अगर उनका फोन आएगा तो उसके बाद देखा जाएगा।

अनंत सिंह ने कहा कि कुछ वोट कम मिला। वो अपना कुछ वोट पहले से बनाए हुए थे। नीरज कुमार ने दुलारचंद वाला केस दिल्ली पहुंचा दिया तब हम भिड़े। हमको समय ही नहीं मिला। हमारे कैंडिडेट ने वोट कम बनाया था। इसलिए मालिक ने इतना ही दिया तो काफी दिया। हम दुकान से वोट खरीद कर तो लाए नहीं थे। जनता मालिक है, भगवान है और रहेगी। उसमें कोई दिक्कत नहीं है। दुकान से वोट लाते तब ना कहते लेकिन दुकान से तो लाए नहीं थे। हार-जीत तो होता रहता है।

अनंत सिंह ने आगे कहा कि यह जनता का तो वोट था नहीं। जितना जिसने बनाया उतना ही वोट था। इतना ही वोट बहुत आया। हम पार्टी के बारे में कुछ नहीं बोले हैं। वो मेरे बारे में सबकुछ बोले लेकिन हम कुछ नहीं बोले। हम हार गए हैं। हमको समय कम मिला। हमको पता चला कि नीरज मेरा केस दिल्ली लेकर गए हैं। उनकी बेटी वकील हैं। हमको पता चला तो हमसे जो बन सका वो हम किए। हमको कोई निराशा नहीं है। हमको बिहार की जनता प्यार करती है। इसमें जो लोग वोट बनाते हैं उनको वोट मिलता है। नीरज भी बनाए था वोट, दिलीप भी बनाए था वोट। हम तो वोट बनाए नहीं थे। हम तो चिढ़ में थे कि दिल्ली में मेरा केस ले गए तो हम चले गए। हां, हम नाराजगी में यह सब कुछ किए। ना तो हमारे बेटा खड़ा था और ना हमारा भतीजा कि हम लोभ में जाते।

अनुज कुमार को नहीं पहचानते- अनंत सिंह

अनंत सिंह ने बार-बार दोहराया कि पार्टी से उनकी कोई नाराजगी नहीं है। नीतीश कुमार पर अनंत सिंह ने कहा कि अगर वो अच्छे रहते तो हमारे साथ कोई ऐसा काम नहीं करता। वो जब तक जिंदा रहेंगे तब तक हम उनसे मिलते रहेंगे। जब अनंत सिंह से पूछा गया कि क्या पार्टी में आने की चाहत है क्या? इसपर अनंत सिंह ने कहा कि हमने पार्टी के खिलाफ कभी कुछ बोला ही नहीं है। अनंत सिंह ने यह भी कहा कि वो अनुज सिंह को जानते भी नहीं हैं। हमें पार्टी से निकाले जाने का कोई दर्द नहीं है। पार्टी में वापस आने की कोई चाहत नहीं है। पार्टी हमको वापस लेगी या नहीं यह उनका निर्णय है। अनंत सिंह ने कहा कि अभी हमने आगे का कुछ नहीं सोचे हैं। नीरज जब मेरे केस को दिल्ली ले गए तब हम भिड़ गए, अनुज को तो हम पहचाने तक नहीं हैं। नीरज से नाराजगी के कारण ही तो यह सबकुछ हुआ है इसलिए हम नीरज को बधाई कैसे देंगे, हम बधाई नहीं देंगे।

सारण शिक्षक सीट भितरघात से हारा एनडीए, भाजपा के बागी राहुल राज निर्दलीय एमएलसी बने

छपरा (संवाददाता)। बिहार विधान परिषद की सारण शिक्षक एमएलसी सीट पर निर्दलीय राहुल राज की जीत ने सियासी समीकरणों को चौंका दिया। 5 जिलों में फैले इस निर्वाचन क्षेत्र में उन्होंने एनडीए प्रत्याशी आनंद पुष्कर और निर्वतमान विधान परिषद सदस्य जन सुराज के प्रत्याशी आफाक अहमद को बड़े अंतर से हरा दिया। इस जीत के पीछे एनडीए में भितरघात और राहुल राज की जमीनी पैठ अहम कारक माने जा रहे हैं। राहुल भारतीय जनता पार्टी से टिकट के दावेदार थे। जब उन्हें एनडीए से मौका नहीं मिला तो बागी होकर निर्दलीय मैदान में उतरे और चुनाव जीतकर एमएलसी बन गए।



राहुल राज साल 2023 से ही शिक्षकों के बीच सक्रिय हैं। लगातार संपर्क और शिक्षक हितों के मुद्दों पर उनकी सक्रियता ने उन्हें प्रतिद्वंद्वियों के मुकाबले बढ़त दिलाई। वहीं, एनडीए के भीतर संभावित असंतोष का लाभ भी उनके पक्ष में गया। उनकी जीत में सारण जिले के मतदाताओं की भूमिका निर्णायक रही। यहां मतदाताओं की संख्या सर्वाधिक थी।

36 वर्षीय राहुल राज रिविलगंज के मुककरेरा गांव के रहने वाले हैं। वह रिविलगंज के मौजूदा प्रखंड प्रमुख हैं। राहुल ने खुद को सारण का बेटा और चंपारण में ननिहाल होने का भावनात्मक रिश्ता जोड़कर शिक्षकों को अपने पक्ष में लामबंद किया। एलएलएम कर कानून और डॉक्टरेट की डिग्री हासिल करने वाले राहुल शैक्षणिक संस्थानों के संचालक भी हैं। इनके पक्ष में आए एमएलसी चुनाव के नतीजों ने साबित किया कि शिक्षक निर्वाचन में केवल राजनीतिक समर्थन नहीं, बल्कि व्यक्तिगत संपर्क, भरोसा और स्थानीय जुड़ाव भी निर्णायक साबित होते हैं।

सारण शिक्षक से चुनाव जीतकर पहली बार विधान परिषद सदस्य बनने वाले राहुल राज ने जीत के बाद शिक्षकों के हितों के लिए संघर्ष जारी रखने का संकल्प जताया। उन्होंने कहा कि शिक्षकों के सातवें वेतनमान की मांग को लेकर वैशाख से लेकर सदन तक उनकी लड़ाई जारी रहेगी। उन्होंने अपनी जीत का श्रेय सभी वर्गों के शिक्षकों को देते हुए कहा कि इस चुनाव की कमान पूरी तरह शिक्षकों के हाथों में रही। दल, जाति और धर्म से ऊपर उठकर शिक्षकों ने उन्हें अपना प्रतिनिधि चुना है। उन्होंने कहा कि सारण के बेटा और चंपारण के नाती को शिक्षकों का भरपूर आशीर्वाद मिला है।

राहुल राज भाजपा के नेता रहे हैं। वह भाजपा की प्रदेश कार्यसमिति के सदस्य रह चुके हैं। सारण शिक्षक सीट एनडीए में जेडीयू के खाते में आई। जेडीयू ने पूर्व एमएलसी एवं दिग्गज शिक्षक नेता केदारनाथ पांडे के बेटे आनंद पुष्कर को मैदान में उतारा। इसके बाद राहुल ने निर्दलीय चुनाव लड़ने का फैसला लिया। भाजपा से बगावत करने पर उन्हें 6 साल के लिए पार्टी से निष्कासित कर दिया। इसके बावजूद उन्होंने अपने दम पर जीत हासिल करने में कामयाब रहे। सारण शिक्षक एमएलसी सीट पर राहुल राज ने 1815 वोटों के बड़े अंतर से चुनाव जीता। उन्हें कुल 4965 वोट मिले।

तिरहुत में भूषण झा के बागी तेवर से बदले समीकरण, बीजेपी के नरेंद्र प्रसाद सिंह जीते



मुजफ्फरपुर (संवाददाता)। बिहार विधान परिषद की तिरहुत शिक्षक पर भाजपा प्रत्याशी नरेंद्र प्रसाद सिंह उर्फ एनपी सिंह ने लेफ्ट पार्टी सीपीआई के कैंडिडेट संजय सिंह को लगभग 594 वोटों से हरा दिया है। तिरहुत एमएलसी सीट पर चुनाव सिर्फ राजनीतिक दलों की प्रतिष्ठा का मुकाबला नहीं रहा। शिक्षकों के वेतनमान, लंबित प्रमोशन, तबादले, चिकित्सा सुविधा और सेवा सुरक्षा जैसे सवालों ने चुनावी चर्चा के केंद्र में जगह बनाई। वहीं, स्नातक मतदाताओं के बीच रोजगार, बेरोजगारी और पलायन जैसे मुद्दे उठे।

CPI के संजय कुमार सिंह के हारने के प्रमुख कारणों में सबसे अहम यह रहा कि उन्हें अपने सहयोगी गठबंधन दलों के सहयोगियों से अपेक्षित मदद नहीं मिली। यहां तक कि घटक दलों के परंपरागत वोटर्स ने भी उनका साथ नहीं दिया। जनसुराज के प्रत्याशी श्यामनंदन कुमार यादव को कुल 1458 मत मिले। श्यामनंदन की दावेदारी ने भी संजय कुमार सिंह को ही नुकसान पहुंचाया।

जन सुराज में बगावत ने बदला शिक्षक सीट का समीकरण

शिक्षक निर्वाचन में एक महत्वपूर्ण घटनाक्रम जन सुराज के उम्मीदवार चयन के बाद सामने आया। पार्टी ने पहले भूषण झा को प्रत्याशी बनाया, लेकिन उन्होंने निर्दलीय चुनाव लड़ने का फैसला कर लिया। इसके बाद पार्टी ने श्यामनंदन यादव को उम्मीदवार बनाया। भूषण झा ने पार्टी छोड़ने के पीछे संगठन की कार्यप्रणाली और अपनी बात रखने को लेकर असहमति जताई थी। इससे मुकाबला और बहुकोणीय हो गया। चुनाव के दौरान प्रत्याशियों के बदलते समीकरण, नेताओं के वादों और आरोप-प्रत्यारोप ने मुकाबले को नया मोड़ दिया। मंगलवार को शिक्षक सीट पर भाजपा प्रत्याशी नरेंद्र प्रसाद सिंह की जीत के बाद यह बहस और तेज हुई कि शिक्षकों ने राजनीतिक समर्थन के साथ अपनी अपेक्षाओं को भी कितना महत्व दिया। शिक्षक निर्वाचन में सबसे प्रमुख मुद्दा सातवें वेतनमान का रहा। शिक्षकों के साथ वित्तरहित शिक्षण संस्थानों के कर्मियों की समस्याएं, लंबित प्रमोशन, तबादले और सेवा सुरक्षा भी चुनावी विमर्श में शामिल रहे। इससे पहले स्नातक क्षेत्र से एनडीए प्रत्याशी अभिषेक झा के समर्थन में आए शिक्षा मंत्री मिथिलेश तिवारी ने शिक्षकों को सातवां वेतनमान और तबादले की समस्या दूर करने का भरोसा दिया था। इस तरह वेतनमान का सवाल सिर्फ प्रत्याशियों के घोषणापत्र तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सरकार की प्रतिबद्धता पर भी चर्चा होती रही।

प्रशांत किशोर को सारण में झटका, मिथिला में जीत; दरभंगा शिक्षक पर सुरेश राय जन सुराज के एमएलसी बने



पटना (संवाददाता)। बिहार विधान परिषद चुनाव के नतीजों में प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी को एक तरफ सारण में झटका लगा, तो दूसरी तरफ मिथिला में पार्टी का खाता खुल गया है। सारण शिक्षक सीट से मौजूदा एमएलसी एवं जन सुराज प्रत्याशी आफाक अहमद बुरी तरह चुनाव हार गए। वहीं, मिथिला क्षेत्र की दरभंगा शिक्षक सीट पर सुरेश प्रसाद राय ने जीत दर्ज कर पीके की पार्टी को औपचारिक तौर पर विधान परिषद में एंट्री दिला दी है। जन सुराज ने आठों एमएलसी सीटों पर चुनाव लड़ा था, जिनमें से तीन पर पार्टी के कैंडिडेट हार गए। बाकी चार सीटों के अंतिम नतीजे आना बाकी हैं, लेकिन वहां पर भी मतगणना में जन सुराज उम्मीदवार पिछड़े हुए हैं।

सारण शिक्षक एमएलसी चुनाव की मतगणना के दौरान मंगलवार को जन सुराज पार्टी के उम्मीदवार आफाक अहमद प्रथम वरीयता की गिनती में ही तीसरे नंबर पर पहुंच गए। पहली वरीयता में निर्दलीय लड़े भाजपा के बागी राहुल राज को सर्वाधिक 2723 वोट मिले, जबकि जेडीयू के आनंद पुष्कर को 2440 और आफाक को 1999 वोट ही मिले। फिर दूसरी वरीयता के मतों की गिनती में भी आफाक अहमद तीसरे नंबर पर ही रहे। राहुल राज ने 1815 वोटों के बड़े अंतर से चुनाव जीत लिया। अंतिम नतीजों में राहुल राज को 4965, आनंद पुष्कर को 3150 और आफाक अहमद को 2454 वोट मिले।

सारण टीचर सीट को दिग्गज वाम शिक्षक नेता केदार पांडेय गढ़ माना जाता था। उनके निधन के बाद 2023 में जब उपचुनाव हुआ, तो अपने पिता की विरासत को आगे बढ़ाने के लिए केदार के बेटे आनंद पुष्कर सीपीआई के टिकट पर मैदान में उतरे थे। उनके खिलाफ आफाक अहमद ने निर्दलीय ताल ठोकी। उस समय बिहार में पदयात्रा निकाल रहे प्रशांत किशोर का भी उन्हें समर्थन मिला था। 2023 में जन सुराज पार्टी का गठन नहीं हुआ था, तो पीके ने निर्दलीय आफाक को अपना समर्थन दिया था।

उपचुनाव में आफाक अहमद ने आनंद पुष्कर को 674 वोटों से हराकर ऐतिहासिक जीत दर्ज की थी। अब 2026 के एमएलसी चुनाव में प्रशांत किशोर ने एक बार फिर आफाक अहमद पर भरोसा जताते हुए सारण शिक्षक से उन्हें जन सुराज का उम्मीदवार बनाया। मगर वह अपनी सीट नहीं बचा पाए। भाजपा से बगावत कर निर्दलीय लड़े राहुल राज ने इस बार बाजी मार ली। वहीं, केदार पांडेय के बेटे आनंद पुष्कर ने इस चुनाव में जेडीयू से टिकट लेकर एनडीए प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़ा लेकिन वे भी दूसरे नंबर पर रहे।

बिहार विधान मंडल के दोनों सदनों में अब जन सुराज पार्टी की मौजूदगी देखने को मिली थी। लगभग 3 महीने पहले पटना की बांकीपुर सीट से उपचुनाव जीतकर जन सुराज के सूत्रधार प्रशांत किशोर ने विधानसभा में अपनी पार्टी को प्रवेश दिलाया था। अब सुरेश प्रसाद राय ने विधान परिषद में जन सुराज की एंट्री करा दी है। सुरेश राय मुख्य रूप से बेगूसराय के रहने वाले हैं। उन्होंने लगभग 324 वोटों से कांग्रेस के मदन मोहन झा को मात दी। जन सुराज से पहले वह भाजपा में रह चुके हैं। रिपोर्ट्स के अनुसार वह भाजपा के शिक्षक प्रकोष्ठ के प्रदेश सह-संयोजक रहे। सरकारी शिक्षक के रूप में उन्होंने सेवा दी। रिटायरमेंट के बाद पूरी तरह रानजीति में उतर गए। एमएलसी चुनाव से पहले उन्होंने भाजपा छोड़ जन सुराज का दामन थाम लिया। प्रशांत किशोर ने सुरेश राय को मैदान में उतारा और वह जीतने में कामयाब रहे।

मिथिला से जन सुराज की विधान परिषद में एंट्री

बिहार एमएलसी चुनाव 2026 में भले ही सारण शिक्षक सीट जन सुराज हार गई, मगर मिथिला से प्रशांत किशोर को खुशखबरी मिली है। दरभंगा शिक्षक सीट पर जन सुराज पार्टी के प्रत्याशी सुरेश प्रसाद राय ने कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष एवं निवर्तमान एमएलसी मदन मोहन झा को हरा दिया। सुरेश राय ने औपचारिक रूप से जन सुराज पार्टी की विधान परिषद में एंट्री करा दी है। वैसे तो जन सुराज समर्थित आफाक अहमद विधान परिषद के सदस्य रह चुके हैं, लेकिन वह निर्दलीय चुनाव जीत कर गए थे।

शराबबंदी और मजबूती से लागू होगी, सम्राट चौधरी बोले- राजस्व की चिंता नहीं



पटना (संवाददाता)। मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने दो-टूक कहा कि बिहार में शराबबंदी और मजबूती से लागू होगी। इसके साथ ही अब सूखे नशे के विरुद्ध भी सख्त कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने पुलिस और मद्य निषेध विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिया कि नशीले पदार्थों की तस्करी और अवैध कारोबार में शामिल लोगों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई करें। सम्राट ने कहा कि शराबबंदी से होने वाले राजस्व के नुकसान की चिंता नहीं है। पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने जनता के हित में इसे लागू किया था।

सीएम सम्राट चौधरी ने मंगलवार को पटना के अधिवेशन भवन में 'नशामुक्त बिहार अभियान' का शुभारंभ और व्हाट्सऐप चैटबोट एवं हेल्पलाइन की शुरुआत की। साथ ही जन-जागरूकता वाहनों को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। ये वाहन 26 नवंबर तक गांव-गांव जाकर ऑडियो-विजुअल माध्यम से लोगों को नशे के दुष्परिणामों और नशामुक्त जीवन के लाभों के प्रति जागरूक करेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि युवाओं को नशे से बचाना राज्य के भविष्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। नशे की लत के कारण प्रतिभाशाली विद्यार्थी भी अपना भविष्य बर्बाद कर लेते हैं। इस अभियान में अधिक-से-अधिक युवाओं को जोड़ें। उन्होंने कहा कि शराबबंदी के बाद राज्य में सूखा नशा अपना पैर पसारने की कोशिश में लगा है, जिसे हर हाल में रोकना है।

सम्राट ने कहा कि साल 2024 में बिहार में 282 किलोग्राम चरस जब्त हुई थी, जबकि 2025 में यह मात्रा बढ़कर 400 किलोग्राम हो गई। 2024 में 42 किलोग्राम हेरोइन जब्त हुई, जो 2025 में बढ़कर 65 किलोग्राम हो गई। अफीम की जब्ती वर्ष 2025 में 77 किलोग्राम हुई। सूखे नशे के बढ़ते प्रचलन को देखते हुए संबंधित जिलों में विशेष अभियान चलाने की आवश्यकता है।

पदाधिकारियों को दिलाई शपथ

मुख्यमंत्री ने कार्यक्रम में मौजूद लोगों तथा वीसी से जुड़े विभिन्न जिलों के पदाधिकारियों एवं आमजनों को नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करने, दूसरों को जागरूक करने, नशीले पदार्थों के अवैध कारोबार को रोकने तथा बिहार को नशामुक्त बनाने की दिशा में सक्रिय योगदान देने की शपथ दिलाई। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के विकसित भारत के संकल्प और केंद्रीय गृह मंत्री के 2029 तक देश को नशामुक्त बनाने के लक्ष्य की दिशा में यह अभियान बड़ी भूमिका निभाएगा। कार्यक्रम को डिप्टी सीएम बिजेंद्र प्रसाद यादव, मद्य निषेध, उत्पाद एवं निबंधन मंत्री मदन सहनी, उच्च शिक्षा मंत्री संजय सिंह टाइगर और मद्य निषेध, उत्पाद एवं निबंधन विभाग के सचिव संजय कुमार सिंह ने भी संबोधित किया। मौके पर मुख्य सचिव प्रत्यय अमृत, डीजीपी प्रीता वर्मा, एडीजी रत्न संजय, सूचना एवं जन-संपर्क विभाग के सचिव नवीन कुमार, जीविका के सीईओ हिमांशु शर्मा आदि उपस्थित रहे।

राजस्व की चिंता नहीं, जनहित को प्राथमिकता

मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने कहा कि वर्ष 2016 में तत्कालीन सीएम नीतीश कुमार ने जनहित में शराबबंदी कानून लागू की थी। तब राज्य का बजट आकार करीब 50 से 55 हजार करोड़ रुपये था। इसके बावजूद राजस्व की चिंता किए बिना जनहित को प्राथमिकता दी गई।

पुलिस को पूरी आजादी

सीएम ने कहा कि अपराधियों के नेटवर्क को ध्वस्त करने के लिए हमने पुलिस को पूरी आजादी दी है। बिहार में नशीले पदार्थों के अवैध कारोबार के खिलाफ अब 20 गुणा से अधिक मामले दर्ज हो रहे हैं। करीब 1700 मामले दर्ज हुए हैं जिनके निपटारे के लिए कई जिलों में विशेष न्यायालयों की व्यवस्था की गई है।

जन सुराज पार्टी के डिजिटल कम्युनिकेशन मैनेजर चलती ट्रेन से गायब

पटना (संवाददाता)। प्रशांत किशोर की जन सुराज पार्टी के 31 वर्षीय डिजिटल कम्युनिकेशन मैनेजर देवपालिक गुप्ता रांची से पटना जाते समय चलती ट्रेन से लापता हो गए। अधिकारियों ने बताया कि देवपालिक गुप्ता मूलरूप से उत्तर प्रदेश के कुशीनगर जिले के रहने वाले थे। वह दिल्ली के आईआईएमसी के पूर्व छात्र हैं।

देवपालिक गुप्ता के दोस्त और सहकर्मी गौतम कुमार ने बताया कि वे रांची रेलवे स्टेशन से जनशताब्दी एक्सप्रेस में सवार हुए थे और ट्रेन दोपहर करीब 2:25 बजे रवाना हुई थी। गौतम ने बताया कि करीब 10 मिनट बाद देवपालिक ने उनसे कहा कि वह कुछ खाने का सामान लेने के लिए पैंट्री कार जा रहे हैं, लेकिन इसके बाद वह वापस नहीं लौटे। उन्होंने कहा कि इसके बाद हम अपनी बर्थ से उठकर अपने कोच के पास स्थित पैंट्री कार में गए, लेकिन देवपालिक वहां नहीं मिले। फिर हमने ट्रेन के सभी कोच में उनकी तलाश की, लेकिन वह कहीं नहीं मिले। गौतम कुमार ने बताया कि ट्रेन के मुरी जंक्शन पर रुकने के बाद उन्होंने राजकीय रेलवे पुलिस (जीआरपी) में इसकी शिकायत दर्ज कराई।

नीरज कुमार से बदला लेने के चक्कर में जेडीयू के ही दुश्मन बन बैठे अनंत सिंह



पटना (संवाददाता)। पटना स्नातक एमएलसी सीट के नतीजे लगभग तय हो चुके हैं। जेडीयू उम्मीदवार नीरज कुमार ने शानदार जीत दर्ज की है। पहली वरीयता में लगातार आगे रहने के बाद उन्होंने दूसरी वरीयता में भी बढ़त बनाई। उनका मुकाबला भले ही राष्ट्रीय जनता दल द्वारा घोषित उम्मीदवार से था, लेकिन हार मोकामा से जेडीयू के ही बाहुबली विधायक अनंत सिंह ने मानी है। इस चुनाव में उन्होंने अपना सबकुछ दांव पर लगा दिया। इसका सबसे बड़ा कारण यही था कि उन्हें नीरज कुमार से बदला लेना था। अनंत सिंह अक्सर आरोप लगाते रहते हैं कि उनके चुनाव में नीरज कुमार ने विरोध किया था। चुनाव के दौरान ललन सिंह ने भी उनके इस बयान को दोहराया था।

नीरज कुमार से बदला लेने की जिद के कारण उन्होंने इस एमएलसी चुनाव में प्रशांत किशोर की पार्टी जनसुराज के उम्मीदवार अनुज सिंह को अपना समर्थन दिया। इसके लिए उन्होंने खुलकर प्रचार भी किया। एक इंटरव्यू के दौरान तो अनंत सिंह ने नीरज कुमार की हार निश्चित बताते हुए 20 करोड़ रुपये की शर्त लगाने की बात भी कही थी।

पूरे चुनाव के दौरान जेडीयू खामोशी से पटना स्नातक चुनाव की सियासी गतिविधियों को देखती रही। जेडीयू के अंदरखाने दबी जुबान अनंत सिंह की बगावत के पीछे ललन सिंह की भूमिका की भी चर्चा होने लगी। इससे उस समय और बल मिल गया जब खबर आई कि ललन सिंह ने नीरज कुमार के लिए चुनाव प्रचार करने से साफ इनकार कर दिया। वहीं, इस चुनाव में नीतीश कुमार के उत्तराधिकारी और बिहार के स्वास्थ्य मंत्री निशांत कुमार ने नीरज के पक्ष में प्रचार किया और लोगों से वोट देने की अपील की। आपको यह भी बता दें कि बीते विधानसभा चुनाव के दौरान ललन सिंह ने अनंत सिंह के लिए प्रचार किया था।

ललन सिंह ने हस्तक्षेप से किया था इनकार

चुनाव प्रचार के दौरान ही विवाद बढ़ता देख जेडीयू के कार्यकारी अध्यक्ष संजय झा ने कहा था कि यह मामला केंद्रीय मंत्री ललन सिंह के क्षेत्र से जुड़ा हुआ है। पार्टी ने इसे सुलझाने की जिम्मेदारी उन्हें ही दी है। बाद में खबर आई कि ललन सिंह ने इस मामले में किसी भी तरह से हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया। नीरज कुमार के विरोध में जेडीयू से बगावत करने वाले अनंत सिंह को खामियाजा भुगतना पड़ रहा है। पहले तो उन्हें छह साल से पार्टी से निकाल दिया गया। वहीं, उनकी विधायकी खत्म करने के लिए जेडीयू के प्रदेश अध्यक्ष उमेश कुशवाहा ने विधानसभा स्पीकर से मिलकर सबूत दिखाए हैं। अनंत सिंह पर पार्टी विरोधी गतिविधियों में शामिल होने का आरोप है। यही वजह है कि बतौर दर्जा प्राप्त राज्य मंत्री के तौर पर मिला सरकारी बंगला खाली करने का भी आदेश दिया गया है।

चुनाव संपन्न होने के बाद अनंत सिंह से जब ललन सिंह को लेकर सवाल पूछा तो उन्होंने उनसे दूरी बनाकर एक संदेश देने की कोशिश की। उन्होंने कहा कि बिहार में 100 ललन सिंह हैं, मैं उन्हें नहीं जानता हूं। उनके इस बयान को दो मायने हो सकते हैं। या तो इस पूरे प्रकरण में अनंत सिंह खुद को ठगा हुआ महसूस कर रहे हैं या फिर वह यह साबित करने की कोशिश कर रहे हैं कि इस लड़ाई में ललन सिंह की कोई भूमिका नहीं है। हालांकि, जेडीयू के अंदरखाने ललन सिंह की भूमिका की चर्चा शुरू हो चुकी है। केंद्र में मंत्रिमंडल विस्तार का इंतजार हो रहा है।

पुरुलिया में 256 एकड़ में बनेगा बंगाल का पहला बड़ा रक्षा विनिर्माण हब

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के औद्योगिक परिदृश्य में एक बड़े बदलाव के तहत पुरुलिया का रघुनाथपुर क्षेत्र रक्षा विनिर्माण के एक नए केंद्र के रूप में उभरने जा रहा है। राज्य सरकार ने रघुनाथपुर के जंगल सुंदरी कर्म नगरी फेज-2 औद्योगिक पार्क में जुपिटर डिफेंस प्राइवेट लिमिटेड को लगभग 256 एकड़ जमीन आवंटित की है। यहां राज्य का पहला बड़ा एकीकृत रक्षा विनिर्माण परिसर स्थापित किया जाएगा, जो आत्मनिर्भर भारत अभियान को नई गति प्रदान करेगा।

ज्ञातव्य है कि यह परियोजना भारत सरकार का सरकारी आयुध कारखाना नहीं है, बल्कि जुपिटर डिफेंस प्राइवेट लिमिटेड द्वारा स्थापित निजी क्षेत्र की पहल है। कोलकाता के मिलन मेला प्रांगण में बीते 23 सितंबर को मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी की उपस्थिति में आयोजित भूमि आवंटन समारोह में जुपिटर वैगन्स के चेयरमैन एमेरिटस मुरारी लाल लोहिया को जमीन के दस्तावेज सौंपे गए। जंगल सुंदरी इंडस्ट्रियल पार्क-2 में बनने वाला यह इंटीग्रेटेड एम्युनिशन मैन्युफैक्चरिंग एंड फिलिंग कॉम्प्लेक्स होगा, जहां गोला-बारूद के निर्माण से लेकर उसकी फिलिंग तक का काम एक ही परिसर में किया जाएगा। इसे बंगाल के गैर-जहाज निर्माण क्षेत्र का पहला निजी रक्षा विनिर्माण प्रोजेक्ट बताया जा रहा है, जिसे तीन साल के भीतर पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

इस रक्षा कारखाने के स्थापित होने से पुरुलिया, बंगाल और पूरे देश को बहुआयामी लाभ मिलने की उम्मीद है। कारखाने में सीधे नौकरियों के अलावा परिवहन, सुरक्षा, रखरखाव और सेवा क्षेत्रों में अप्रत्यक्ष रोजगार पैदा होने की भारी संभावना है। रक्षा उपकरणों के पुर्जे, पैकेजिंग, मशीनिंग और लॉजिस्टिक्स से जुड़ी स्थानीय सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम इकाइयों के लिए व्यापार के नए दरवाजे खुलेंगे। इसके साथ ही



स्थानीय युवाओं के लिए तकनीकी प्रशिक्षण के रास्ते खुलेंगे और आईटीआई एवं पॉलिटेक्निक जैसी संस्थाओं का उद्योग के साथ सीधा जुड़ाव बढ़ेगा।

रघुनाथपुर-2 ब्लॉक के रुकनी इलाके में वाम शासन के दौरान इस्पात उद्योग के लिए दी गई जमीन लंबे समय से खाली पड़ी थी, जिससे स्थानीय लोगों में भारी नाराजगी थी। अब उसी जमीन पर रक्षा उद्योग लगने की खबर से क्षेत्र में खुशी का माहौल है। इस परियोजना के सफल होने से राज्य के अन्य औद्योगिक पार्कों में भी आपूर्तिकर्ताओं और निवेशकों का आकर्षण बढ़ेगा, जिससे पूर्वी भारत में बंगाल रेल-आधारित उद्योग से आगे बढ़कर रक्षा विनिर्माण का प्रमुख केंद्र बन सकेगा। राष्ट्रीय स्तर पर यह परिसर देश की रक्षा जरूरतों को घरेलू स्तर पर पूरा करने में अहम भूमिका निभाएगा। वित्त वर्ष 2025-26 में भारत का रक्षा उत्पादन 15.6 प्रतिशत की वृद्धि के साथ रिकॉर्ड एक लाख 78 हजार करोड़ रुपये रहा। देश के रक्षा उत्पादन में निजी क्षेत्र की हिस्सेदारी बढ़कर लगभग 24 प्रतिशत (करीब 42 हजार करोड़) हो गई है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने इसे आने वाले समय में 50 प्रतिशत तक ले जाने का लक्ष्य रखा है, जिसमें यह एकीकृत परिसर अपना सीधा योगदान देगा। इस परियोजना के सामरिक और राष्ट्रीय महत्व पर जाने-माने रक्षा विशेषज्ञ सत्यम सिंह ने हिन्दुस्थान समाचार को बताया कि यह कारखाना केवल एक निर्माण इकाई नहीं है, बल्कि पूर्वी भारत में रक्षा उत्पादन का एक नया और मजबूत पारिस्थितिकी तंत्र विकसित करेगा। उनके अनुसार, भारत इस समय अपनी रक्षा जरूरतों के लिए पूर्ण स्वदेशीकरण पर जोर दे रहा है और ऐसे में जुपिटर डिफेंस का यह एकीकृत परिसर सैन्य आयात पर हमारी निर्भरता कम करने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगा। सत्यम सिंह ने यह भी स्पष्ट किया कि जब गोला-बारूद के निर्माण और उसकी फिलिंग का काम एक ही परिसर में होता है, तो इससे आपूर्ति श्रृंखला बेहद सुचारू हो जाती है और सशस्त्र बलों को आपातकालीन स्थिति में भी निर्बाध रूप से गुणवत्तापूर्ण आयुध मिल पाता है।

उन्होंने कहा कि देश का रक्षा निर्यात 38,424 करोड़ रुपये के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच चुका है। जुपिटर डिफेंस जैसी कंपनियों के रक्षा क्षेत्र में उतरने से भविष्य में भारत के रक्षा निर्यात को और बढ़ावा मिलेगा, जिसका लक्ष्य 2028-29 तक 10 हजार करोड़ का कारोबार करना है। उद्योग मंत्री तापस रॉय के अनुसार, 23 सितंबर को राज्य में आवंटित कुल 33 परियोजनाओं में करीब 60 हजार करोड़ का निवेश होगा और लगभग 62 हजार रोजगार पैदा होने की संभावना है। इस महात्वाकांक्षी रक्षा परियोजना से न सिर्फरोजगार के नए अवसर उपलब्ध होंगे बल्कि बंगाल में लंबे समय से सुस्त पड़े औद्योगिक विकास को नई रफ्तार मिलने की प्रबल संभावना है।

पीएम मोदी ने साझा किया सुभाषित

जो संकटों का सामना कर आगे बढ़ता है, वही सफलता के शिखर तक पहुंचता है



नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया पर एक सुभाषित शेयर किया है, जिसमें चुनौतियों का सामना कर सफलता के शिखर तक पहुंचने का संदेश दिया गया है। पीएम मोदी की ओर से संस्कृत श्लोक, न संशयमनारुह्य नरो भद्राणि पश्यति। संशयं पुनरारुह्य यदि जीवति पश्यति॥ शेयर किया गया है, जिसका हिंदी भावार्थ है कि जो मनुष्य चुनौतियों का सामना करने का साहस नहीं रखता, उसके लिए सफलता का मार्ग कठिन बना रहता है। किंतु जो व्यक्ति साहस, धैर्य और आत्मविश्वास के साथ संकटों का सामना करते हुए निरंतर आगे बढ़ता है, वही जीवन में सफलता के शिखर तक पहुंचता है।

प्रधानमंत्री की ओर से साझा किया गया यह प्रसिद्ध संस्कृत श्लोक महाभारत के शांतिपर्व के 138वें अध्याय के 34वें श्लोक से लिया गया है। इस श्लोक के माध्यम से संदेश दिया गया है कि महान सफलता या लक्ष्य प्राप्ति के लिए जीवन में जोखिम लेना अनिवार्य है। बिना जोखिम उठाए बड़ी उपलब्धियां नहीं मिलती। इस श्लोक के माध्यम से कहा गया है कि मनुष्य बिना किसी खतरे या जोखिम (संशय) में पड़े कभी कल्याण या श्रेष्ठ फल नहीं देख पाता, और अगर वह संकट या जोखिम मोल लेता है और जीवित बच जाता है, तभी उसे वास्तविक सफलता या सुख देखने को मिलते हैं। यानी जीवन में बड़ी उपलब्धियां या तरक्की बिना किसी अनिश्चितता या जोखिम का सामना किए संभव नहीं हैं।

अमृतसर में आप सरपंच के बेटे की गोलियां मारकर हत्या, दोस्त भी घायल; पुरानी रंजिश में हुई वारदात

अमृतसर (एजेंसी)। पंजाब के अमृतसर जिले के चीता कलां गांव में आम आदमी पार्टी (आप) की सरपंच के बेटे की गोली मारकर हत्या कर दी गई। हमलावरों ने तीरथ सिंह और उसके दोस्त रणजीत सिंह पर ताबड़तोड़ फायरिंग की। इस दौरान करीब 7 से 8 राउंड गोलियां चलाई गईं। दोनों घायलों को अस्पताल पहुंचाया गया, जहां इलाज के दौरान तीरथ सिंह की मौत हो गई। रणजीत सिंह के पैर में गोली लगी है और उसका उपचार चल रहा है। पुलिस के मुताबिक, शुरुआती जांच में वारदात के पीछे पुरानी व्यक्तिगत रंजिश सामने आई है।

एसएसपी देहाती कंवलप्रीत सिंह चाहल के मुताबिक, घटना शाम करीब साढ़े सात बजे की है। चीता कलां निवासी तीरथ सिंह अपने दोस्त रणजीत सिंह के साथ एक स्थान पर मौजूद था। इसी दौरान गांव के कुछ लोग वहां पहुंचे और दोनों पर अचानक गोलियां चलानी शुरू कर दीं। फायरिंग में तीरथ सिंह को दो गोलियां लगीं, जबकि रणजीत सिंह के पैर में गोली लगी। हमले के बाद दोनों को गंभीर हालत में अस्पताल ले जाया गया। हालांकि, तीरथ सिंह को बचाया नहीं जा सका। रणजीत सिंह की हालत खतरे से बाहर बताई जा रही है। मृतक तीरथ सिंह का परिवार स्थानीय राजनीति में सक्रिय है। उसकी मां चीता कलां गांव की सरपंच हैं, जबकि उसका भाई कर सिंह आम आदमी पार्टी से जुड़ा ब्लॉक समिति सदस्य है। हालांकि, शुरुआती पुलिस जांच में हत्या के पीछे किसी राजनीतिक विवाद या गैंगवार की पुष्टि नहीं हुई है। पुलिस इसे पुरानी व्यक्तिगत रंजिश से जुड़ा मामला मानकर जांच कर रही है।

परिजनों का आरोप है कि दोनों पक्षों के बीच पहले से विवाद चल रहा था। कुछ दिन पहले नशा बेचने या उसकी बिक्री रोकने को लेकर भी कहासुनी हुई थी। आशंका जताई जा रही है कि इसी विवाद के चलते तीरथ सिंह और उसके दोस्त पर हमला किया गया। हालांकि, पुलिस का कहना है कि हत्या की असली वजह जांच पूरी होने के बाद ही स्पष्ट होगी। एसएसपी कंवलप्रीत सिंह चाहल के मुताबिक, मामले में गुरजंट सिंह, गुरदित सिंह, हरकीरत सिंह उर्फ हाकी और गोरा समेत अन्य लोगों के नाम सामने आए हैं। पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ नामजद एफआईआर दर्ज कर ली है। आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए सीआईए और तकनीकी टीमों को लगाया गया है। पुलिस उनके संभावित ठिकानों पर छापेमारी कर रही है। एसएसपी ने आरोपियों को जल्द गिरफ्तार करने का दावा किया है।

टीएमसी बंगाल को 'ग्रेटर बांग्लादेश' बनाना चाहती थी, काकरोचों को पनपने न दें : शुभेंदु अधिकारी

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल की राजनीति में आज उस समय बयानबाजी तेज हो गई, जब मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने तमलुक में भाजपा के नए सांगठनिक जिला कार्यालय के भूमिपूजन कार्यक्रम के बाद तृणमूल कांग्रेस (टीएमसी) और वामपंथी दलों पर तीखा हमला बोला। उन्होंने आरोप लगाया कि टीएमसी के 15 वर्षों के शासनकाल में राज्य की सांस्कृतिक पहचान और राष्ट्रवाद की भावना को नुकसान पहुंचा तथा बंगाल को 'ग्रेटर बांग्लादेश' बनाने की कोशिश की गई। हालांकि, यह उनका राजनीतिक आरोप है, जिसकी पुष्टि के लिए उन्होंने सार्वजनिक रूप से कोई ठोस प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया।

पूर्व मेदिनीपुर जिले के तमलुक सांगठनिक क्षेत्र के काकगाछिया में भाजपा के प्रस्तावित जिला कार्यालय का भूमिपूजन वैदिक रीति-रिवाजों, हवन और मंत्रोच्चार के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी और पार्टी के अन्य नेता व कार्यकर्ता उपस्थित रहे। प्रस्तावित कार्यालय को जिले में भाजपा के संगठनात्मक कार्यों के लिए महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में देखा जा रहा है। पार्टी को उम्मीद है कि स्थायी कार्यालय बनने से संगठनात्मक गतिविधियों, कार्यकर्ताओं के समन्वय और स्थानीय स्तर पर राजनीतिक कार्यक्रमों को मजबूती मिलेगी।

कार्यक्रम के बाद पत्रकारों से बातचीत में शुभेंदु अधिकारी ने टीएमसी के पिछले 15 वर्षों के शासन पर सवाल उठाए। उन्होंने आरोप लगाया कि तत्कालीन सरकार ने राष्ट्रवाद की भावना को पर्याप्त महत्व नहीं दिया और तुष्टीकरण की राजनीति को बढ़ावा दिया। मुख्यमंत्री ने दावा किया कि राज्य के लिए अलग गीत तैयार करने, ध्वज बनाने और पड़ोसी देश बांग्लादेश के 'जय बांग्ला' नारे को अपनाने जैसे कदम इसी राजनीतिक सोच का हिस्सा थे। इन्हीं मुद्दों का हवाला देते हुए उन्होंने टीएमसी पर बंगाल को 'ग्रेटर बांग्लादेश' बनाने की कोशिश करने का आरोप लगाया। ये आरोप राज्य की राजनीति में विवाद का विषय बन सकते हैं। हालांकि, किसी राजनीतिक नारे, गीत या ध्वज को लेकर मतभेद अपने आप में 'ग्रेटर बांग्लादेश' बनाने की योजना का प्रमाण नहीं हैं। शुभेंदु अधिकारी ने राज्य में 34 वर्षों तक शासन करने वाले वाममोर्चे और माकपा की विचारधारा पर भी हमला बोला। उन्होंने ब्राजील में वामपंथी राजनीति की सफलता का जिक्र करते हुए वामपंथी नेताओं पर कटाक्ष किया। उन्होंने सवाल उठाया कि वामपंथी नेताओं के घरों में स्वामी विवेकानंद, खुदीराम बोस और मातंगिनी हाजरा जैसे बंगाल के महान व्यक्तित्वों के चित्रों के बजाय विदेशी वामपंथी विचारकों की तस्वीरें क्यों दिखाई देती हैं। उनके इस बयान का उद्देश्य वामपंथी विचारधारा और भारतीय सांस्कृतिक विरासत के बीच अंतर को राजनीतिक बहस का मुद्दा बनाना था। मुख्यमंत्री ने वामपंथी नेताओं की पारिवारिक पृष्ठभूमि को लेकर भी टिप्पणी की। इन टिप्पणियों पर संबंधित दलों की प्रतिक्रिया को लेकर राजनीतिक हलकों में चर्चा की संभावना है। दुर्गा पूजा के दौरान विभिन्न पंडालों के पास लगाए गए बुकस्टॉलों और वहां रखी गई किताबों को लेकर पश्चिम बंगाल का सियासी पारा अचानक चढ़ गया है। मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने इस पूरे विवाद पर कड़ा रुख अपनाते हुए कहा है कि दुर्गा पूजा के पावन अवसर पर स्टॉल लगाकर राष्ट्र विरोधी और सनातन विरोधी सामग्री के प्रचार की कोशिश की गई थी, जिसे राज्य के जागरूक नागरिकों ने खुद आगे आकर नाकाम कर दिया है। उन्होंने दो-टूक शब्दों में कहा कि किसी भी सूरत में सनातन धर्म या किसी भी धार्मिक आस्था पर चोट पहुंचाने वाले साहित्य या विचार को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। बहरहाल तमलुक में दिए गए इस संबोधन में शुभेंदु अधिकारी ने टीएमसी और वामपंथी दलों के शासनकाल को एक साथ निशाने पर लिया। उनके भाषण में राष्ट्रवाद, बंगाल की सांस्कृतिक पहचान और ऐतिहासिक महापुरुषों की विरासत प्रमुख मुद्दे रहे। भाजपा के नए जिला कार्यालय का भूमिपूजन जहां संगठनात्मक विस्तार का अवसर बना, वहीं मुख्यमंत्री के बयानों ने राज्य की राजनीति में वैचारिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर बहस को फिर से तेज कर दिया है। यही नहीं सीएम ने 'कॉकरोच जनता पार्टी' (सीजेपी) को निशाने पर लेते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के समर्थन में खड़े होने की अपील की। उन्होंने अपने बयान में 'दिमागी नक्सल', 'टुकड़े-टुकड़े गैंग' और कॉकरोच जैसे शब्दों का इस्तेमाल किया। अधिकारी की यह टिप्पणी सीजेपीको लेकर जारी राजनीतिक बयानबाजी के बीच सामने आई है। सीएम ने कहा कि, लोगों को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ खड़ा होना चाहिए और ऐसे समूहों को पनपने नहीं देना चाहिए, जिन्हें उन्होंने 'दिमागी नक्सल' और 'टुकड़े-टुकड़े गैंग' करार दिया।

ड्राइवर स्क्रीन से लेकर एमसीबी तक... पहली बार आरसीएफ में तैयार वंदे भारत में सामने आईं बड़ी खामियां

कपूरथला (एजेंसी)। देश के सेमी-हाई स्पीड रेल नेटवर्क को विस्तार देने की दिशा में रेलवे बोर्ड ने पंजाब के कपूरथला स्थित रेल कोच फैक्ट्री में तैयार की गई पहली 16 कोच वाली वंदे भारत चेयर कार ट्रेन को पटरी पर उतारने की आधिकारिक मंजूरी दे दी है। हालांकि, तकनीकी जांच और ट्रायल के दौरान ट्रेन में कई संवेदनशील खामियां उजागर हुई हैं, जिन पर रेलवे बोर्ड ने गहरी नाराजगी जताते हुए आरसीएफ प्रशासन को तत्काल सुधार के कड़े निर्देश दिए हैं। इनमें लोको पायलट की टचस्क्रीन डिस्प्ले का ठीक से काम न करना, सर्किट ब्रेकर्स पर मार्किंग न होना और फायर एक्सटिंग्विशर के कवर ढीले मिलना शामिल हैं। इसके अलावा, तकनीकी तौर पर 160 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से दौड़ने की मंजूरी मिलने के बावजूद ट्रैक प्रतिबंधों के कारण इसे फिलहाल 130 किमी प्रति घंटे की रफ्तार तक ही सीमित रखा जाएगा।

देशभर में अब तक दौड़ रहीं सभी वंदे भारत चेयर कार रेक चेन्नई की इंटीग्रल कोच फैक्ट्री द्वारा तैयार की गई थीं। कपूरथला रेल कोच फैक्ट्री में 16 डिब्बों वाली चेयर कार का निर्माण पहली बार किया गया है, जिसमें ट्रेन को ऊर्जा और गति देने के लिए फ्रांसीसी बहुराष्ट्रीय कंपनी 'अल्स्टॉम' का आधुनिक प्रोपल्शन सिस्टम इस्तेमाल किया गया है। रेलवे बोर्ड ने 23 अक्टूबर को रिसर्च डिजाइन एंड स्टैंडर्ड ऑर्गेनाइजेशन, जोनल रेलवेज और चीफ कमिश्नर ऑफ रेलवे सेफ्टी को पत्र जारी कर ट्रेन के संचालन की संस्तुति तो दे दी, लेकिन साथ ही उन तकनीकी पहलुओं की सूची भी थमा दी है जिनका समाधान जरूरी है।

रेलवे बोर्ड के तकनीकी पत्र के अनुसार, ट्रेन के लोको पायलट कैब में लगी ड्राइवर डिस्प्ले यूनिट की टचस्क्रीन ठीक से रिस्पॉन्ड नहीं कर रही है। यह स्क्रीन ट्रेन के तमाम कंट्रोल और सुरक्षा मापदंडों की निगरानी के लिए रीढ़ मानी जाती है, लिहाजा इसकी खराब टच सेंसिटिविटी परिचालन के दौरान गंभीर समस्या खड़ी कर सकती है। इसके अलावा, इलेक्ट्रिकल कंट्रोल कैबिनेट में पूर्व की ट्रेनों की तरह डबल पोल एमसीबी की जगह सिंगल पोल मिनिएचर सर्किट ब्रेकर लगाए गए हैं, जिससे बिजली की तकनीकी खराबी पकड़ना बेहद जटिल हो जाएगा। इन एमसीबी पर कोई स्पष्ट पहचान लेबल भी नहीं चिपकाए गए हैं, जिससे किसी सर्किट के फेल होने पर तकनीशियनों को फॉल्ट खोजने में भारी वक्त लगेगा। बोर्ड ने 270 किलोवाट क्षमता वाली नई ट्रैक्शन मोटर की उपयुक्तता की जांच के आदेश भी दिए हैं, क्योंकि आईसीएफ की पूर्ववर्ती ट्रेनों में 210 से 225 किलोवाट की मोटरें इस्तेमाल होती रही हैं।

आपातकालीन सुरक्षा में भी लापरवाही, 1 नवंबर को स्लीपर वंदे भारत की बारी

तकनीकी खामियों के साथ-साथ यात्री सुरक्षा से जुड़े उपकरणों में भी ढिलाई पाई गई है। डिब्बों में लगे अग्निशामक यंत्रों (फायर एक्सटिंग्विशर) के ऐक्रेलिक बॉक्स के कवर ढीले और असुरक्षित पाए गए हैं, जिन्हें आपात स्थिति में तुरंत इस्तेमाल करने लायक सुरक्षित बनाने के निर्देश दिए गए हैं। दूसरी ओर, रेलवे बोर्ड ने स्पष्ट किया है कि रूट पर मौजूदा स्पीड रिस्ट्रिक्शन के चलते ट्रेन 160 के बजाय 130 की अधिकतम गति पर ही चलेगी। इस बीच, रेलवे बोर्ड ने लंबी दूरी के यात्रियों के लिए वंदे भारत स्लीपर ट्रेनों की शुरुआत की उल्टी गिनती भी शुरू कर दी है। योजना के अनुसार, बेंगलुरु-मुंबई रूट पर पहली वंदे भारत स्लीपर 1 नवंबर को लॉन्च की जा सकती है, जबकि चेन्नई आईसीएफ 10 नवंबर तक 24 कोच वाली वंदे भारत स्लीपर का अंतिम डिजाइन फाइनल कर लेगी।

जम्मू-कश्मीर में उमर अब्दुल्ला कैबिनेट का विस्तार, उपराज्यपाल ने 4 नए मंत्रियों को दिलाई शपथ

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने मंगलवार को मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला के नेतृत्व वाली केंद्र जम्मू-कश्मीर सरकार के चार नए मंत्रियों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। शपथ लेने वाले चार नए मंत्रियों में जम्मू और कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस (जेकेएनसी) के वरिष्ठ नेता और श्रीनगर के खानयार विधानसभा क्षेत्र से विधायक अली मोहम्मद सागर शामिल हैं। सागर अब तक रिकॉर्ड सात बार विधानसभा चुनाव जीत चुके हैं। श्रीनगर के हब्बा कदल विधानसभा क्षेत्र से दो बार विधायक रही शमीमा फिरदौस को भी कैबिनेट मंत्री के रूप में शपथ दिलाई गई। इसके अलावा कुपवाड़ा जिले के त्रेहगाम क्षेत्र से विधायक मीर सैफुल्लाह और अनंतनाग जिले के पहलगाम क्षेत्र से विधायक अल्ताफ अहमद वानी उर्फ अल्ताफ कालू ने भी मंत्री पद की शपथ ली।

शपथ लेने वाले चारों विधायक सत्तारूढ़ नेशनल कॉन्फ्रेंस से हैं। जिन मंत्रियों को बरकरार रखा गया है, उनमें उपमुख्यमंत्री सुरिंदर चौधरी, सकीना इटू, जावेद राणा और जावेद अहमद डार शामिल हैं। शपथ ग्रहण के साथ जम्मू-कश्मीर कैबिनेट की कुल संख्या मुख्यमंत्री सहित नौ हो गई है। पुनर्गठन अधिनियम 2019 के बाद कैबिनेट की यह अधिकतम संख्या है। जम्मू-कश्मीर कैबिनेट में 90 सदस्यों वाली विधानसभा की संख्या का अधिकतम 10 प्रतिशत यानी 9 मंत्री हो सकते हैं।

पार्टी सूत्रों के अनुसार, कैबिनेट में फेरबदल और विस्तार बेहतर शासन और लोगों तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए किया गया है ताकि उनकी शिकायतों का तुरंत और जल्दी निवारण हो सके। उमर अब्दुल्ला ने पार्टी अध्यक्ष डॉ. फारूक अब्दुल्ला के परामर्श से अली मोहम्मद सागर, मीर सैफुल्लाह और शमीमा फिरदौस जैसे वरिष्ठ नेताओं को शामिल करना सुनिश्चित किया है।

शपथ ग्रहण समारोह श्रीनगर शहर के चश्मा शाही इलाके में लोक भवन ऑडिटोरियम में आयोजित किया गया था। समारोह में मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला, एनसी अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री फारूक अब्दुल्ला, बरकरार रखे गए मंत्री, मुख्यमंत्री के सलाहकार नासिर असलम वानी, एनसी के वरिष्ठ नेता और विधायक मुबारक गुल, सिविल और पुलिस अधिकारी तथा उपराज्यपाल द्वारा आमंत्रित कई प्रमुख नागरिक उपस्थित थे। अब जम्मू-कश्मीर सरकार में मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला सहित 9 मंत्री हैं, जिनमें सकीना इटू, जावेद डार, जावेद राणा, अली सागर, शमीमा फिरदौस, अल्ताफ कालू, मीर सैफुल्लाह और सुरिंदर चौधरी शामिल हैं।

यूपी में 2047 तक सपा जनता का भरोसा नहीं जीत पाएगी : केशव प्रसाद मौर्य

अयोध्या (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव से पहले उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने समाजवादी पार्टी पर निशाना साधा। उन्होंने दावा किया कि जिस तरह दिल्ली, हरियाणा, बिहार, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र और असम में भाजपा को सफलता मिली है, उसी तरह उत्तर प्रदेश में भी कमल खिलेगा और भाजपा लगातार तीसरी बार पूर्ण बहुमत की सरकार बनाएगी।



अयोध्या पहुंचे उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने मीडिया से बातचीत में कहा कि वर्ष 2047 तक समाजवादी पार्टी उत्तर प्रदेश की जनता का भरोसा नहीं जीत पाएगी। उन्होंने दावा किया कि देश में कांग्रेस और राहुल गांधी की सत्ता में वापसी नहीं होगी, जबकि उत्तर प्रदेश में समाजवादी पार्टी और अखिलेश यादव भी सत्ता में नहीं आएंगे। अखिलेश यादव के एक बयान पर पलटवार करते हुए डिप्टी सीएम ने कहा कि डॉ. राम मनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण ने समाजवाद के सच्चे आदर्शों को कायम रखा था। जो लोग गुंडों को संरक्षण देते हैं, वे समाजवादी नहीं हो सकते। उन्होंने सपा पर कुछ वर्गों को खुश करने की राजनीति करने और भगवान राम के भक्तों पर गोली चलवाने तथा भगवान शिव के भक्तों पर लाठीचार्ज करवाने का आरोप भी लगाया। उपमुख्यमंत्री ने आरोप लगाया कि दंगाइयों को बचाने वाले लोग समाजवादी, राष्ट्रवादी या हिंदू राष्ट्रवादी होने का दावा नहीं कर सकते। उन्होंने अखिलेश यादव से कहा कि वे अपने बयानों के जरिए अयोध्या की जनता को गुमराह करने की कोशिश न करें, क्योंकि उन्हें इसमें सफलता नहीं मिलेगी।

स्टार्टअप, निवेश और डिजिटल सुधारों से कारोबार को बढ़ावा, विश्वास-आधारित शासन की ओर बढ़ रहा भारत

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने देश में कारोबार को सुगम बनाने, उद्यमिता को प्रोत्साहित करने और निवेश के अनुकूल वातावरण तैयार करने के लिए नियामकीय सुधारों की प्रक्रिया तेज की है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय के अंतर्गत उद्योग संवर्धन और आंतरिक व्यापार विभाग (डीपीआईआईटी) ने स्टार्टअप सहायता, अनुपालन संबंधी नियमों के सरलीकरण, प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को प्रोत्साहन और डिजिटल माध्यम से मंजूरी प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इन पहलों का उद्देश्य अनुमति-आधारित व्यवस्था से विश्वास-आधारित शासन की ओर बढ़ना तथा कारोबारियों पर नियामकीय बोझ कम करना है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, देश में अब तक 2,50,046 स्टार्टअप को मान्यता दी जा चुकी है। इन स्टार्टअप ने 770 से अधिक जिलों और 56 उद्योग क्षेत्रों में 25.42 लाख से अधिक रोजगार सृजित किए हैं। मान्यता प्राप्त स्टार्टअप में 52 प्रतिशत महानगरों से बाहर के शहरों में स्थित हैं, जबकि 48 प्रतिशत स्टार्टअप में कम से कम एक महिला निदेशक है। इससे उद्यमिता के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी और छोटे शहरों में कारोबारी गतिविधियों के विस्तार को भी बढ़ावा मिला है।

स्टार्टअप इंडिया के अंतर्गत नए उद्यमों को वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने के लिए विभिन्न योजनाएं संचालित की जा रही हैं। स्टार्टअप इंडिया सीड फंड योजना के तहत 32 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में 244 इनक्यूबेटरों के माध्यम से 4,194 स्टार्टअप के लिए 775.67 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की गई है। इनमें 2,147 महिला-नेतृत्व वाले स्टार्टअप और टियर-2 एवं टियर-3 शहरों के 2,356 स्टार्टअप शामिल हैं। स्टार्टअप के लिए निधियों की निधि योजना के अंतर्गत भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (सिडबी) ने 166 वैकल्पिक निवेश कोषों के लिए 12,623 करोड़ रुपये की प्रतिबद्धता जताई है। इन कोषों के माध्यम से 1,475 स्टार्टअप में 28,254 करोड़ रुपये का निवेश किया गया है।

वहीं, स्टार्टअप ऋण गारंटी योजना के तहत 532 ऋणों के लिए 1,662.71 करोड़ रुपये की गारंटी प्रदान की गई है। इन ऋणों से लाभान्वित स्टार्टअप में 41,637 लोग कार्यरत हैं। सरकार ने प्रति ऋणकर्ता गारंटी कवर की अधिकतम सीमा 10 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 20 करोड़ रुपये कर दी है। इसके अलावा, 27 चैंपियन क्षेत्रों के लिए वार्षिक गारंटी शुल्क घटाकर एक प्रतिशत कर दिया गया है। स्टार्टअप को प्रोत्साहित करने के लिए अब तक 63 नियामकीय सुधार किए गए हैं।

लगातार गिरावट के बाद सोने-चांदी में लौटी चमक, सिल्वर में 0.74 प्रतिशत की उछाल; फेड बैठक पर निवेशकों की नजर

नई दिल्ली (एजेंसी)। कई दिनों की लगातार गिरावट के बाद हफ्ते के पहले कारोबारी दिन सोमवार को सोने और चांदी की कीमतों में रिकवरी देखने को मिली। पिछले सप्ताह सोना और चांदी दोनों तेज दबाव में रहे थे, लेकिन कारोबारी सप्ताह के पहले दिन अंतरराष्ट्रीय और घरेलू बाजारों में खरीदारी लौटने से दोनों कीमती धातुओं के भाव में तेजी दर्ज की गई। हालांकि बाजार विशेषज्ञों का कहना है कि यह फिलहाल तकनीकी रिकवरी है और निवेशकों की नजर अमेरिकी फेडरल रिजर्व की 27-28 अक्टूबर को होने वाली नीतिगत बैठक और अमेरिका के पीसीई मुद्रास्फीति आंकड़ों पर बनी हुई है।



मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (एमसीएक्स) पर सोने का दिसंबर वायदा भाव करीब 0.50 प्रतिशत यानी 761 रुपए चढ़कर 1,42,733 रुपए प्रति 10 ग्राम के आसपास कारोबार करता दिखाई दिया। वहीं चांदी का दिसंबर वायदा भाव 0.49 प्रतिशत यानी 968 रुपए की तेजी के साथ 1,96,687 रुपए प्रति किलोग्राम तक पहुंच गया।

वहीं दिन के कारोबार में सोना एक समय अपने पिछले बंद भाव 1,42,024 रुपए से 864 रुपए यानी 0.60 प्रतिशत उछलकर 1,42,888 रुपए प्रति 10 ग्राम के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया था, तो वहीं चांदी एक समय अपने पिछले बंद 1,95,719 रुपए से 1,467 रुपए यानी 0.74 प्रतिशत उछलकर 1,97,186 रुपए के दिन के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई थी। पिछले सप्ताह सोना करीब 4 प्रतिशत और चांदी 7 प्रतिशत से अधिक टूट गई थी, ऐसे में निवेशकों ने निचले स्तरों पर खरीदारी दिखाई। अंतरराष्ट्रीय बाजार कॉमेक्स पर भी सोना और चांदी दोनों में सुधार देखा गया। सोमवार सुबह के कारोबार में सोना 0.48 प्रतिशत चढ़कर 4,027 डॉलर प्रति औंस पर ट्रेड करता दिखाई दिया, हालांकि इसने 0.50 प्रतिशत से ज्यादा की बढ़त के साथ 4,032.90 डॉलर प्रति औंस का उच्चतम स्तर छुआ वहीं, सुबह के कारोबार में चांदी 0.74 प्रतिशत की बढ़त के साथ 54.35 डॉलर प्रति औंस पर ट्रेड करती नजर आई। हालांकि कारोबारी सत्र में इसने 0.90 प्रतिशत से ज्यादा की तेजी के साथ 54.47 डॉलर प्रति औंस का उच्चतम स्तर छुआ।

गौरतलब है कि पिछले सप्ताह स्पॉट गोल्ड पहली बार जुलाई के बाद 4,000 डॉलर प्रति औंस के नीचे फिसल गया था, जिससे बाजार में भारी दबाव बन गया था।

विश्लेषकों के अनुसार, 4,000 डॉलर का स्तर सोने के लिए एक महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक समर्थन (सपोर्ट) क्षेत्र साबित हो रहा है। हालिया गिरावट के बाद इस स्तर पर खरीदारी लौटने से कीमतों को सहारा मिला है। हालांकि अभी भी बाजार में सावधानी बनी हुई है क्योंकि ऊंची ऊर्जा कीमतें महंगाई संबंधी चिंताओं को बढ़ा रही हैं।

बाजार की सबसे बड़ी नजर अब अमेरिकी फेडरल रिजर्व की बैठक पर है। विशेषज्ञों के अनुमानों के मुताबिक, अक्टूबर की बैठक में ब्याज दर बढ़ने की संभावना सीमित है, लेकिन दिसंबर में दर बढ़ोतरी की आशंका अभी भी बनी हुई है। यही वजह है कि सोने और चांदी में बड़े निवेशक फिलहाल सतर्क रुख अपना रहे हैं।

बाजार विशेषज्ञों का कहना है कि इस सप्ताह जारी होने वाले अमेरिकी पर्सनल कंजम्प्शन एक्सपेंडिचर (पीसीई) मुद्रास्फीति आंकड़े बाजार की दिशा तय करने में अहम भूमिका निभाएंगे। यदि महंगाई उम्मीद से अधिक रहती है तो ब्याज दरों को लंबे समय तक ऊंचा बनाए रखने की संभावना बढ़ सकती है, जो सोने और चांदी के लिए नकारात्मक संकेत माना जाएगा।

बाजार विश्लेषकों के मुताबिक, चांदी ने सोने की तुलना में बेहतर रिकवरी दिखायी है। कॉमेक्स और एमसीएक्स दोनों में चांदी के भाव में अपेक्षाकृत अधिक तेजी दर्ज की गई। इसके बावजूद तकनीकी संकेत बताते हैं कि चांदी अभी भी ओवरसोल्ड जोन से पूरी तरह बाहर नहीं निकली है।

एमसीएक्स पर चांदी के लिए 2 लाख रुपए से 2.02 लाख प्रति किलोग्राम का स्तर महत्वपूर्ण प्रतिरोध (रेजिस्टेंस) माना जा रहा है, जबकि नीचे की ओर 1.92 लाख रुपए से 1.94 लाख का क्षेत्र मजबूत समर्थन के रूप में देखा जा रहा है।

इस बीच, कच्चे तेल की चाल भी कीमती धातुओं पर असर डाल सकती है। ब्रेंट क्रूड हाल के दिनों में 110 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर पहुंच गया था। ऊंचे तेल दाम महंगाई बढ़ाने का जोखिम पैदा करते हैं, जिससे केंद्रीय बैंक ब्याज दरों में कटौती को टाल सकते हैं। यही कारण है कि ऊर्जा बाजार, डॉलर इंडेक्स और बॉन्ड यील्ड पर निवेशकों की नजर बनी हुई है।

ग्रोथ अनुमान घटाने से श्रीराम फाइनेंस के शेयरों में 6 प्रतिशत से ज्यादा की गिरावट, 11 महीने के निचले स्तर पर पहुंचा स्टॉक

नई दिल्ली (एजेंसी)। सप्ताह के पहले कारोबारी दिन एनबीएफसी कंपनी श्रीराम फाइनेंस के शेयरों में जोरदार बिकवाली देखने को मिली। कंपनी द्वारा ऋण वृद्धि (लोन ग्रोथ) के अनुमान में कटौती और क्रेडिट लागत बढ़ने की आशंका जताने के बाद निवेशकों ने शेयर से दूरी बनाई, जिसके चलते यह निफ्टी का सबसे खराब प्रदर्शन करने वाला शेयर बन गया। दिन के कारोबार के दौरान कंपनी का शेयर 6.33 प्रतिशत तक टूटकर 810.20 रुपए के इंट्रा-डे निचले स्तर पर पहुंच गया। दोपहर करीब 12:10 बजे यह स्टॉक 5.06 प्रतिशत की गिरावट के साथ 821.20 रुपए पर कारोबार करता नजर आया।



शेयर में गिरावट ऐसे समय आई है जब कंपनी ने दूसरी तिमाही में उम्मीद से बेहतर मुनाफा दर्ज किया है। हालांकि निवेशकों का ध्यान कंपनी के भविष्य के आउटलुक पर रहा। श्रीराम फाइनेंस ने वित्त वर्ष 2026-27 के लिए अपने एसेट्स अंडर मैनेजमेंट (एयूएम) वृद्धि अनुमान को 18 प्रतिशत से घटाकर 15-17 प्रतिशत कर दिया है। कंपनी ने इसके पीछे कमजोर मानसून, भू-राजनीतिक अनिश्चितताओं और सूखा प्रभावित क्षेत्रों में कर्जदारों पर बढ़ते वित्तीय दबाव को प्रमुख कारण बताया है।

विश्लेषकों का कहना है कि कंपनी की परिसंपत्ति गुणवत्ता (एसेट क्वालिटी) को लेकर चिंताएं बनी हुई हैं। वैश्विक ब्रोकरेज जैफरीज के अनुसार महाराष्ट्र, कर्नाटक और तेलंगाना जैसे राज्यों में दबाव के कारण अगले एक-दो तिमाहियों तक क्रेडिट लागत ऊंची बनी रह सकती है। वहीं घरेलू ब्रोकरेज फर्म मोतीलाल ओसवाल ने कहा कि बढ़ते स्लिपेज और राइट-ऑफ यह संकेत देते हैं कि कई क्षेत्रों में सूखा जैसी परिस्थितियों का असर उधारकर्ताओं की भुगतान क्षमता पर पड़ा है। हालांकि संस्था का मानना है कि कुल मिलाकर कंपनी की एसेट क्वालिटी अभी भी अपेक्षाकृत स्थिर बनी हुई है। ब्रोकरेज ने अपनी रिपोर्ट में कहा, कंपनी के तिमाही नतीजे मिश्रित रहे। उच्च नेट इंटरेस्ट मार्जिन (एनआईएम) और कम परिचालन खर्च के कारण प्री-प्रोविजन ऑपरेटिंग प्रॉफिट (पीपीओपी) अनुमान से बेहतर रहा, लेकिन अधिक क्रेडिट लागत के कारण अंतिम मुनाफा उम्मीदों के अनुरूप रहा। एयूएम में 17 प्रतिशत की सालाना वृद्धि भी अनुमान से बेहतर रही।

इसी तरह, जेएम फाइनेंशियल ने भी शुरुआती डिफॉल्ट मामलों में बढ़ोतरी और ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय दबाव को प्रमुख चिंता बताया है। ब्रोकरेज के अनुसार, सूखा जैसी परिस्थितियों के कारण एसेट क्वालिटी संकेतकों में गिरावट देखने को मिल रही है, जो आने वाले समय में चुनौती बनी रह सकती है। हालांकि विशेषज्ञों का यह भी मानना है कि हालिया इक्विटी निवेश और कंपनी की क्रेडिट रेटिंग का एएए स्तर तक सुधरना भविष्य में मार्जिन पर दबाव को कुछ हद तक कम करने में मदद कर सकता है। शेयर बाजार के आंकड़ों के अनुसार, श्रीराम फाइनेंस के शेयर में पिछले एक महीने के दौरान करीब 14 प्रतिशत की गिरावट आ चुकी है। बीएसई पर शेयर का 52 सप्ताह का उच्चतम स्तर 1,153.65 रुपए और न्यूनतम स्तर 710.40 रुपए दर्ज किया गया है। कंपनी के आउटलुक को लेकर बढ़ी चिंताओं के कारण फिलहाल निवेशकों का रुख सतर्क बना हुआ है।

भारत-नीदरलैंड्स आर्थिक रिश्तों को नई मजबूती, व्यापार और निवेश बढ़ाने पर जोर : पीयूष गोयल

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने नीदरलैंड्स के साथ व्यापार, निवेश और आर्थिक सहयोग को और मजबूत बनाने की भारत की प्रतिबद्धता दोहराई है। अपनी नीदरलैंड्स यात्रा के दौरान उन्होंने समुद्री परिवहन, लॉजिस्टिक्स, सप्लाई चेन और भारतीय समुदाय से जुड़े कई कार्यक्रमों में हिस्सा लिया तथा दोनों देशों के बीच नई आर्थिक संभावनाओं पर चर्चा की।

एक आधिकारिक बयान के अनुसार, अपनी यात्रा के दौरान गोयल ने यूरोप के सबसे बड़े बंदरगाह पोर्ट ऑफ रॉटरडैम का दौरा किया, जहां उनके साथ बंदरगाह के मुख्य कार्यकारी अधिकारी (सीईओ) बोडेवाइन सीमोंस भी मौजूद थे। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि रॉटरडैम यूरोपीय बाजारों तक भारतीय उत्पादों की पहुंच का एक महत्वपूर्ण प्रवेश द्वार है और वैश्विक व्यापार तथा आपूर्ति श्रृंखलाओं में इसकी रणनीतिक भूमिका बेहद अहम है।

गोयल ने कहा कि दोनों पक्षों के बीच पोर्ट-आधारित विकास, लॉजिस्टिक्स दक्षता में सुधार, सप्लाई चेन कनेक्टिविटी को मजबूत करने और व्यापार एवं निवेश के नए अवसरों को बढ़ावा देने पर विचारों का आदान-प्रदान हुआ। उन्होंने कहा कि भारत अपने बंदरगाहों के आधुनिकीकरण और विश्वस्तरीय समुद्री अवसंरचना के विकास पर तेजी से काम कर रहा है तथा इस क्षेत्र में नीदरलैंड्स की विशेषज्ञता भारत के लिए काफी उपयोगी हो सकती है।

उन्होंने कहा कि भारत और नीदरलैंड्स के बीच समुद्री क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने की अपार संभावनाएं हैं, विशेष रूप से ऐसे समय में जब भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) को लेकर बातचीत अंतिम चरण में पहुंच रही है।

भारत-ईयू एफटीए लागू होने के बाद भारतीय निर्यातकों के लिए यूरोपीय बाजारों में बड़े अवसर पैदा होंगे। ऐसे में नीदरलैंड्स के अत्याधुनिक बंदरगाह, मजबूत लॉजिस्टिक्स नेटवर्क और यूरोप के विभिन्न बाजारों से उसकी उत्कृष्ट कनेक्टिविटी भारत-यूरोप व्यापार को नई गति देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

देश की शीर्ष 10 कंपनियों का बाजार पूंजीकरण 1.55 लाख करोड़ रुपए घटा, एचडीएफसी बैंक को सबसे अधिक नुकसान



नई दिल्ली (एजेंसी)। पिछले सप्ताह भारत की 10 सबसे मूल्यवान सूचीबद्ध कंपनियों में से आठ का कुल बाजार पूंजीकरण 1.55 लाख करोड़ रुपए घट गया। इसकी वजह शेयर बाजार में बड़े स्तर पर बिकवाली होना था। इस दौरान एचडीएफसी बैंक और बजाज फाइनेंस के बाजार पूंजीकरण में सबसे अधिक गिरावट दर्ज की गई।

छुट्टियों के कारण कम कारोबारी सत्र वाले सप्ताह के दौरान प्रमुख शेयर सूचकांकों पर भारी दबाव देखने को मिला। सेंसेक्स 1,605.44 अंक यानी 2.15 प्रतिशत गिर गया, जबकि निफ्टी में 546.15 अंक यानी 2.36 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गई।

व्यापक बाजार में कमजोरी का असर दिखाते हुए बीएसई में सूचीबद्ध सभी कंपनियों का कुल बाजार पूंजीकरण चार कारोबारी सत्रों में 20.79 लाख करोड़ रुपए घट गया। यह 16 अक्टूबर के 472.62 लाख करोड़ रुपए से गिरकर 451.83 लाख करोड़ रुपए पर आ गया।

शीर्ष 10 सबसे मूल्यवान कंपनियों में से आठ के बाजार पूंजीकरण में कुल 1,55,671.9 करोड़ रुपए की गिरावट आई। इसके विपरीत, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज (टीसीएस) और लार्सन एंड टुब्रो (एलएंडटी) ऐसी दो कंपनियां रहीं, जिनके बाजार पूंजीकरण में सप्ताह के दौरान बढ़ोतरी दर्ज की गई।

एचडीएफसी बैंक के बाजार पूंजीकरण में सबसे अधिक गिरावट दर्ज की गई। इसका बाजार पूंजीकरण 55,506.95 करोड़ रुपए घटकर 10.67 लाख करोड़ रुपए रह गया। सप्ताह के दौरान बैंक के शेयरों में करीब 5 प्रतिशत की गिरावट आई। बजाज फाइनेंस बाजार पूंजीकरण में गिरावट के मामले में दूसरे स्थान पर रहा। कंपनी का मूल्यांकन 34,180.51 करोड़ रुपए घटकर 5.77 लाख करोड़ रुपए रह गया।

रिलायंस इंडस्ट्रीज के बाजार पूंजीकरण में भी बड़ी गिरावट दर्ज की गई। इसका बाजार पूंजीकरण 27,065.08 करोड़ रुपए घटकर 16.10 लाख करोड़ रुपए रह गया। वहीं, भारतीय जीवन बीमा निगम (एलआईसी) का मूल्यांकन 21,062.24 करोड़ रुपए घटकर 4.81 लाख करोड़ रुपये पर आ गया।

दूरसंचार क्षेत्र की प्रमुख कंपनी भारती एयरटेल का बाजार पूंजीकरण 9,360.75 करोड़ रुपए घटकर 11.79 लाख करोड़ रुपए रह गया, जबकि भारतीय स्टेट बैंक (एसबीआई) का मूल्यांकन 4,338.46 करोड़ रुपए घटकर 8.83 लाख करोड़ रुपए पर आ गया। इसी तरह, इन्फोसिस का बाजार पूंजीकरण 2,881.38 करोड़ रुपए घटकर 4.69 लाख करोड़ रुपए रह गया, जबकि आईसीआईसीआई बैंक के मूल्यांकन में 1,276.53 करोड़ रुपए की गिरावट आई और यह 10.02 लाख करोड़ रुपए पर आ गया। वहीं, बढ़त दर्ज करने वाली कंपनियों में टीसीएस का बाजार पूंजीकरण 23,517.56 करोड़ रुपए बढ़कर 9.15 लाख करोड़ रुपए हो गया। इंजीनियरिंग और बुनियादी ढांचा क्षेत्र की प्रमुख कंपनी एलएंडटी ने भी नकारात्मक रुझान के विपरीत प्रदर्शन किया। इसका बाजार पूंजीकरण 1,788.66 करोड़ रुपए बढ़कर 5.02 लाख करोड़ रुपए पर पहुंच गया।

महिला इंडियन ओपन में जूनियर गोल्फरों का दमदार प्रदर्शन, 21 खिलाड़ियों ने अमेरिकी जूनियर गोल्फ प्रतियोगिताओं में लिया था हिस्सा

गुरुग्राम (एजेंसी)। महिला इंडियन ओपन 2026 में जूनियर गोल्फ से पेशेवर स्तर तक पहुंचने वाले खिलाड़ियों की प्रतिभा और अनुभव की शानदार झलक देखने को मिली। डीएलएफ गोल्फ एंड कंट्री क्लब में आयोजित इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में लेडीज यूरोपियन टूर की 114 खिलाड़ियों में से 21 ऐसी गोल्फर शामिल रहीं, जिन्होंने पहले अमेरिकी जूनियर गोल्फ संस्था 'यूएस किड्स गोल्फ' की प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया था। यह कुल खिलाड़ियों का 18.4 प्रतिशत है। इन 21 खिलाड़ियों में आठ भारतीय और 13 अंतरराष्ट्रीय गोल्फर शामिल हैं। यह आंकड़ा दर्शाता है कि जूनियर स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताएं खिलाड़ियों को पेशेवर गोल्फ की दुनिया तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती हैं।

प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, इस सूची में चेक गणराज्य की सारा कौशकोवा और ऑस्ट्रिया की एम्मा स्पिट्ज जैसी प्रतिभाशाली खिलाड़ी भी शामिल हैं। दोनों ने महिला इंडियन ओपन में अच्छा प्रदर्शन किया। सारा कौशकोवा ने प्रतियोगिता में संयुक्त रूप से चौथा स्थान हासिल किया, जबकि एम्मा स्पिट्ज संयुक्त रूप से 12वें स्थान पर रहीं। इन खिलाड़ियों की उपलब्धियां इस बात को रेखांकित करती हैं कि कम उम्र से ही अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भाग लेने का अनुभव आगे चलकर पेशेवर गोल्फ में उपयोगी साबित हो सकता है।

भारतीय गोल्फर अवनि प्रशांत ने महिला इंडियन ओपन में संयुक्त रूप से 22वां स्थान हासिल किया। उनका जूनियर गोल्फ प्रतियोगिताओं में लंबा अनुभव रहा है। अवनि ने 2014 से 2019 तक विश्व चैंपियनशिप और 2013 से 2018 तक यूरोपीय चैंपियनशिप में हिस्सा लिया था। इन प्रतियोगिताओं में भागीदारी ने उन्हें अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खेलने का अनुभव प्रदान किया। भारतीय खिलाड़ी अन्वी दहिया ने भी संयुक्त रूप से 22वां स्थान हासिल किया। उन्होंने वर्ष 2019 में भारत की स्थानीय गोल्फ प्रतियोगिताओं में भाग लिया था। जूनियर स्तर पर प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेने से खिलाड़ियों को खेल की बारीकियां सीखने, प्रतिस्पर्धा का अनुभव हासिल करने और अपनी क्षमता को बेहतर बनाने का अवसर मिलता है।



महिला इंडियन ओपन में 13 वर्षीय ओजस्विनी सरस्वत ने अपने प्रदर्शन से खास पहचान बनाई। उन्होंने प्रतियोगिता में कट में जगह बनाने के साथ सर्वश्रेष्ठ शौकिया खिलाड़ी का सम्मान भी हासिल किया। गोल्फ में कट पार करने का अर्थ है कि खिलाड़ी शुरुआती दौर के प्रदर्शन के आधार पर अगले दौर में खेलने के लिए निर्धारित मानदंडों को पूरा करने में सफल रहा। ओजस्विनी के जूनियर गोल्फ करियर का रिकॉर्ड भी उल्लेखनीय रहा है। वर्ष 2019 से 2022 के बीच उन्होंने भारत की स्थानीय गोल्फ प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेते हुए 22 टूर्नामेंटों में से 19 में जीत दर्ज की थी। इसके अतिरिक्त, उन्होंने 2022 से 2025 तक विश्व चैंपियनशिप और वर्ष 2022 तथा 2024 में यूरोपीय चैंपियनशिप में भी भाग लिया। कम उम्र में इतनी प्रतियोगिताओं का अनुभव हासिल करना उनके खेल सफर का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है।

ओजस्विनी का प्रदर्शन इस बात का उदाहरण है कि जूनियर स्तर पर लगातार अभ्यास, प्रतियोगिताओं में भागीदारी और अंतरराष्ट्रीय अनुभव खिलाड़ियों को बड़े मंच पर अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर प्रदान कर सकते हैं। महिला इंडियन ओपन जैसी पेशेवर प्रतियोगिता में सर्वश्रेष्ठ शौकिया खिलाड़ी का सम्मान हासिल करना उनके लिए महत्वपूर्ण उपलब्धि है। यूएस किड्स गोल्फ की प्रतियोगिताओं में हिस्सा ले चुकी अन्य खिलाड़ियों में लावण्या गुप्ता, अनन्या सूद, गुंतास कौर संधू, जॉर्जिया ओबोह और कैयूरी मूडली के नाम भी शामिल हैं। इन खिलाड़ियों की मौजूदगी से पता चलता है कि जूनियर गोल्फ प्रतियोगिताएं अलग-अलग देशों के खिलाड़ियों को आगे बढ़ने और अपनी प्रतिभा विकसित करने का अवसर देती हैं।

जूनियर स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं के माध्यम से खिलाड़ियों को कम उम्र में ही प्रतिस्पर्धात्मक माहौल का अनुभव मिलता है। इससे उन्हें अपने खेल में सुधार करने, अलग-अलग परिस्थितियों में खेलने और भविष्य की बड़ी प्रतियोगिताओं के लिए तैयार होने में मदद मिल सकती है। महिला इंडियन ओपन में जूनियर प्रतियोगिताओं से जुड़ी 21 खिलाड़ियों की मौजूदगी इस व्यवस्था की उपयोगिता को सामने लाती है। यूएस किड्स गोल्फ दुनिया भर में हर वर्ष 2,200 से अधिक प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है। इस संस्था का उद्देश्य बच्चों और किशोरों को उनकी उम्र के अनुरूप गोल्फ प्रतियोगिताओं में भाग लेने का अवसर देना तथा उनके खेल विकास को प्रोत्साहित करना है। संस्था की प्रतियोगिताओं में बेहतर प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को प्राथमिकता दर्जा हासिल करने का अवसर मिल सकता है। इससे उन्हें यूरोपीय चैंपियनशिप, विश्व किशोर चैंपियनशिप और विश्व चैंपियनशिप जैसी बड़ी प्रतियोगिताओं में आमंत्रण प्राप्त करने में मदद मिल सकती है।

हालांकि, ऐसी प्रतियोगिताओं में प्रवेश के लिए खिलाड़ियों को संबंधित आयोजन की आयु सीमा, पात्रता और प्रवेश संबंधी शर्तों को पूरा करना आवश्यक होता है। प्राथमिकता दर्जा मिलने का अर्थ अपने आप प्रवेश सुनिश्चित होना नहीं है, बल्कि इससे खिलाड़ियों के लिए आगे बढ़ने के अवसर उपलब्ध हो सकते हैं। वर्ष 1996 में स्थापित यूएस किड्स गोल्फ का प्रमुख उद्देश्य बच्चों के लिए उम्र के अनुरूप प्रतियोगिताएं आयोजित करना, परिवारों की भागीदारी को बढ़ावा देना और जूनियर खिलाड़ियों के विकास में सहायता करना है। इस तरह की व्यवस्था बच्चों को खेल के प्रति रुचि विकसित करने और धीरे-धीरे उच्च स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए तैयार होने में मदद करती है।

नाओमी ओसाका ने घरेलू दर्शकों के सामने दर्ज की जीत, दूसरे दौर में बनाई जगह



टोक्यो (एजेंसी)। जापान की स्टार टेनिस खिलाड़ी नाओमी ओसाका ने पैन पैसिफिक ओपन में इटली की जैस्मीन पाओलिनी को हराकर दूसरे दौर में जगह बना ली। घरेलू दर्शकों के सामने खेलते हुए सातवीं वरीयता प्राप्त ओसाका ने पाओलिनी को 6-3, 7-6 (4) से शिकस्त दी। यह डब्ल्यूटीए 500 स्तर का टूर्नामेंट टोक्यो में खेला जा रहा है।

ओसाका ने इस जीत के साथ पिछले साल मियामी ओपन में पाओलिनी के खिलाफ मिली हार का बदला भी ले लिया। दोनों खिलाड़ियों के बीच यह दूसरा मुकाबला था। इससे पहले दोनों की भिड़ंत में पाओलिनी ने जीत दर्ज की थी। चार बार की ग्रैंड स्लैम चैंपियन ओसाका ने एक घंटे 37 मिनट तक चले मुकाबले में शानदार सर्विस की। उन्होंने सात एस लगाए, जबकि पाओलिनी केवल एक एस लगा सकीं। ओसाका बेटी शाई के जन्म के तीन साल बाद टेनिस में वापसी करने के बाद अपने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन की ओर बढ़ रही हैं। हालांकि, उन्होंने इस सप्ताह कहा था कि अगर उनकी बेटी शाई उनसे टेनिस छोड़ने के लिए कहती है, तो वह खेल से दूरी बना लेंगी। दुनिया की शीर्ष रैंकिंग वाली खिलाड़ी और टूर्नामेंट की शीर्ष वरीयता प्राप्त एलेना रयबाकिना को पहले दौर में बाई मिली है। वहीं, चोट के कारण दूसरी वरीयता प्राप्त माजा चाव्लिंस्का और चौथी वरीयता प्राप्त बेलिंडा बेनचिच टूर्नामेंट से हट गई हैं।

संपादकीय

सिर्फ आर्थिक मोर्चे

संभवत: नरेंद्र मोदी सरकार के नीतिकार इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि तमाम रियायतें देने के बावजूद ट्रंप प्रशासन से न्यूनतम उम्मीदें पूरी करा पाना भी संभव नहीं है। और बात सिर्फ आर्थिक मोर्चे की नहीं है।

वित्त मंत्री ने स्वीकार किया है कि भारत और अमेरिका के बीच अंतरिम व्यापार समझौते की बातचीत 'पठार' पर पहुंच गई है। निर्मला सीतारमण ने कहा कि दोनों पक्ष अब ऐसे बिंदु पर हैं, जहां उनके लिए और रियायतें देना मुश्किल हो रहा है। म्यूनिख सिक्युरिटी कांफ्रेंस जैसे अंतरराष्ट्रीय मंच पर उन्होंने कहा कि अमेरिका ने टैरिफ को हथियार बना लिया है। इससे पहले अमेरिकी व्यापार प्रतिनिधि जेमिसन ग्रियर ने कहा था कि भारत अमेरिका व्यापार समझौते का संपन्न होना तय नहीं है। उन्होंने बताया कि कुछ महत्त्वपूर्ण मुद्दों पर सहमति अभी नहीं बनी है।

इन बयानों का अर्थ है कि डॉनल्ड ट्रंप प्रशासन की एकतरफा रियायतों की मांग पर लगातार राजी होने के बाद आखिर ऐसी सीमा आई है, जिसके आगे झुकना भारत सरकार को मुनासिब महसूस नहीं हो रहा है। संभवत: नरेंद्र मोदी सरकार के नीतिकार इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि तमाम रियायतें देने के बावजूद ट्रंप प्रशासन से न्यूनतम उम्मीदें पूरी करा पाना भी संभव नहीं है। और बात सिर्फ आर्थिक मोर्चे की नहीं है। बीते हफ्ते विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने कहा था अगर अमेरिका (पाकिस्तान प्रायोजित) आतंकवाद और भारत के सुरक्षा हितों के प्रति उदासीनता दिखाता है या पाकिस्तान से सैन्य जुड़ाव बढ़ाता है, तो इसका असर भारत-अमेरिका संबंधों पर पड़ेगा।

उसके बाद खबर आई कि ट्रंप परिवार से जुड़ी अमेरिका की एक डिफेंस स्टार्ट-अप कंपनी ने पाकिस्तानी सेना को ड्रोन और काउंटर- ड्रोन तकनीक की आपूर्ति के लिए समझौता किया है। इसी कंपनी ने मुंबई स्थित एक फर्म के साथ काउंटर-ड्रोन इंटरसेप्टर उत्पादन का अनुबंध कर रखा है। यानी भारत में निर्मित अस्त्र पाकिस्तान के पास पहुंच सकते हैं। इसी पृष्ठभूमि में भारतीय रक्षा रणनीतिकारों ने सवाल उठाया है कि क्या अमेरिका पाकिस्तान को फिर सैन्य समर्थन देने की शुरुआत कर रहा है? दरअसल, अनेक भू-राजनीतिक एवं रणनीतिक मामलों में पाकिस्तान को ट्रंप का साथ मिलता रहा है। इससे भारत में नाराजगी बढ़ी है। फिर भी मोदी सरकार ट्रंप की मिज़ाज-पुर्सी में लगी रही। लेकिन नतीजा शून्य रहा है। बहरहाल, अब भी अगर सरकार रीढ़ दिखाती है, तो देश में उसका स्वागत किया जाएगा।

स्तरहीनता एवं विरोध की भाषा में उलझती कांग्रेस

"लोकतंत्र में सत्ता और विपक्ष एक-दूसरे के विरोधी अवश्य होते हैं, लेकिन उनकी भाषा शत्रुता की नहीं, वैचारिक प्रतिस्पर्धा की होनी चाहिए। राजनीतिक मतभेद लोकतंत्र की शक्ति हैं, पर जब ये मतभेद व्यक्तिगत कटाक्ष, पारिवारिक टिप्पणियों और अपमानजनक शब्दों में बदलने लगते हैं, तब राजनीति का स्तर गिरता है और लोकतांत्रिक संस्थाओं की गरिमा प्रभावित होती है। भारतीय राजनीति में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के प्रति कांग्रेस के अनेक नेताओं की आक्रामक टिप्पणियों और अब कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे के पटना में दिए गए विवादास्पद बयान ने एक बार फिर भाषाई मर्यादा पर गंभीर सवाल खड़े किए हैं। 25 अक्टूबर 2026 को पटना में बिहार के प्रथम मुख्यमंत्री डॉ. श्रीकृष्ण सिंह की 139वीं जयंती के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में खड़गे की एक टिप्पणी राजनीतिक विवाद का कारण बन गई। कार्यक्रम में उपस्थित एक व्यक्ति की टिप्पणी के जवाब में उन्होंने कहा, 'मोदी का बाप भी जाएगा।"

कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष खड़गे के बयान की भारतीय जनता पार्टी के नेताओं ने तीखी आलोचना की। दूसरी ओर, कांग्रेस ने इस टिप्पणी को वैचारिक संदर्भ में समझाने का प्रयास किया। समाचारों के अनुसार संबंधित व्यक्ति ने भी बाद में कहा कि उसकी पूरी बात नहीं सुनी गई थी। इस घटनाक्रम के विभिन्न पक्ष अपनी-अपनी व्याख्या प्रस्तुत कर रहे हैं, लेकिन विवाद से अलग एक बुनियादी प्रश्न अपनी जगह कायम है-क्या देश के सर्वोच्च राजनीतिक पद पर आसीन व्यक्ति के प्रति विरोध जताने का यही तरीका होना चाहिए?

खड़गे कांग्रेस के वरिष्ठ नेता हैं और लंबे राजनीतिक अनुभव के साथ पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष की जिम्मेदारी निभा रहे हैं। ऐसे व्यक्ति से सार्वजनिक मंच पर अधिक संयम और विवेक की अपेक्षा स्वाभाविक है। राजनीतिक सभा में कोई प्रतिकूल टिप्पणी हो जाए, तो उसका उत्तर तर्क, तथ्य और आत्मविश्वास से दिया जा सकता है। लेकिन जब जवाब व्यक्तिगत संबंधों और परिवार तक पहुंच जाए, तब मुद्दे की गंभीरता पीछे छूट जाती है और शब्दों का विवाद मुख्य समाचार बन जाता है। राजनीति में शब्द केवल वक्ता की तत्काल प्रतिक्रिया नहीं होते, वे उसकी सार्वजनिक जिम्मेदारी और लोकतांत्रिक संस्कारों की भी परीक्षा लेते हैं। कांग्रेस की राजनीति में नरेंद्र मोदी को लेकर तीखे और विवादास्पद वक्तव्यों का इतिहास भी इस बहस को व्यापक संदर्भ देता है। वर्ष 2007 में सोनिया गांधी ने गुजरात विधानसभा चुनाव के दौरान मोदी के लिए 'मौत का सौदागर' शब्द का प्रयोग किया था। वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में मणिशंकर अय्यर की 'चायवाला' संबंधी टिप्पणी ने भी बड़ा राजनीतिक विवाद पैदा किया। बाद के वर्षों में राहुल गांधी के 'चौकीदार चोर है' नारे ने राजनीतिक बहस को व्यक्तिगत आरोपों की दिशा में मोड़ा। इन बयानों के पीछे अपने-अपने राजनीतिक संदर्भ और वक्ताओं की दलीलें रही हैं, लेकिन इनका सार्वजनिक प्रभाव इस प्रश्न को सामने लाता है कि क्या किसी नेता की आलोचना उसके कामकाज तक सीमित रखी जा सकती है, अथवा उसे व्यक्तिगत उपहास का विषय बनाना आवश्यक समझा जाने लगा है?

प्रियंका गांधी सहित कांग्रेस के अन्य नेताओं ने भी मोदी और उनकी सरकार के विरुद्ध कई अवसरों पर तीखे राजनीतिक हमले किए हैं। यह ध्यान रखना जरूरी है कि तीखी आलोचना अपने आप में अमर्यादित नहीं होती। सरकार की नीतियों, बेरोजगारी, महंगाई, सामाजिक सद्भाव, लोकतांत्रिक



संस्थाओं और प्रशासनिक निर्णयों पर कठोर सवाल उठाना विपक्ष का संवैधानिक दायित्व है। समस्या तब उत्पन्न होती है, जब नीतिगत असहमति को व्यक्तिगत अपमान से जोड़ दिया जाता है और तर्क के स्थान पर कटाक्ष को राजनीतिक प्रभाव का माध्यम बनाया जाने लगता है। किसी नेता के प्रत्येक बयान को एक ही श्रेणी में रखना उचित नहीं, लेकिन बार-बार होने वाले विवादों से राजनीतिक भाषा के स्तर पर विचार करने की आवश्यकता अवश्य पैदा होती है। यहां कांग्रेस के सामने एक बड़ी चुनौती है। विपक्ष के रूप में उसकी सार्थकता इस बात से तय होगी कि वह जनता के जीवन से जुड़े प्रश्नों पर कितना प्रभावी विमर्श खड़ा करती है। किसानों की समस्याएं, युवाओं के रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक असमानता और सामाजिक न्याय जैसे मुद्दों पर ठोस विकल्प प्रस्तुत करना उसकी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। यदि सार्वजनिक चर्चा बार-बार प्रधानमंत्री पर व्यक्तिगत टिप्पणियों तक सिमट जाती है, तो नीतिगत बहस पीछे छूटने का खतरा रहता है। इससे विपक्ष की आलोचना का वास्तविक आधार भी कमजोर पड़ सकता है। राजनीतिक विमर्श में मुद्दों की जगह व्यक्तियों को केंद्र में रख देने से लोकतंत्र को अपेक्षित लाभ नहीं मिलता।

दूसरी ओर नरेंद्र मोदी का व्यक्तित्व और उनकी वैश्विक सक्रियता भारतीय राजनीति के महत्वपूर्ण पहलू हैं। प्रधानमंत्री के रूप में उनकी विदेश यात्राएं, विभिन्न देशों के नेतृत्व के साथ संवाद, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भारत की भागीदारी और आर्थिक एवं रणनीतिक साझेदारियों को आगे बढ़ाने के प्रयास देश की वैश्विक भूमिका से जुड़े हैं। उनके समर्थक इन गतिविधियों को भारत की प्रतिष्ठा और प्रभाव में वृद्धि के रूप में देखते हैं। साथ ही, किसी भी प्रधानमंत्री के कार्यकाल का निष्पक्ष आकलन केवल अंतरराष्ट्रीय छवि से नहीं, बल्कि घरेलू नीतियों, आर्थिक परिणामों, सामाजिक समावेशन और शासन के रिकॉर्ड से भी किया जाना चाहिए। लोकतंत्र की सुंदरता इसी में है कि नेतृत्व की उपलब्धियों का सम्मान हो और उसके निर्णयों की आलोचनात्मक समीक्षा भी संभव बनी रहे। यह भी विचारणीय है कि किसी नेता के विरुद्ध जितनी अधिक व्यक्तिगत और अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल होता है, उतना ही उसके समर्थकों में प्रतिक्रिया की भावना पैदा हो सकती है। नरेंद्र मोदी के संदर्भ में कांग्रेस की आलोचना का राजनीतिक असर हमेशा एक जैसा रहा हो, ऐसा निष्कर्ष निकालना तथ्यों से परे होगा। चुनावी परिणाम अनेक कारणों से प्रभावित होते हैं-नेतृत्व, संगठन, स्थानीय मुद्दे, उम्मीदवार, गठबंधन और मतदाताओं की अपेक्षाएं। फिर भी, यह एक महत्वपूर्ण राजनीतिक जोखिम है कि यदि विपक्ष अपनी आलोचना को प्रमाण और नीतिगत विकल्पों के बजाय व्यक्तिगत टिप्पणियों पर आधारित करता है, तो वह अपनी बात जनता तक प्रभावी ढंग से पहुंचाने का अवसर खो सकता है। इसके विपरीत भाजपा को भी केवल विरोधियों के विवादास्पद बयानों पर प्रतिक्रिया देने के बजाय अपने कामकाज और नीतियों के आधार पर जनता के सामने जवाबदेह रहना चाहिए।

राजनीति की भाषा समाज के व्यवहार को प्रभावित करती है। जब शीर्ष नेता सार्वजनिक मंचों पर संयम खोते हैं, तब उनके समर्थकों और राजनीतिक कार्यकर्ताओं के बीच भी कटुता बढ़ने की आशंका रहती है। सोशल मीडिया इस प्रवृत्ति को और तेज कर देता है, जहां किसी बयान का छोटा-सा अंश पूरे विमर्श पर हावी हो सकता है। इसलिए नेताओं को बोलने से पहले शब्दों के सामाजिक प्रभाव और पद की गरिमा पर विचार करना चाहिए। राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी को अपमानित करना और उसके तर्क को पराजित करना दो अलग बातें हैं, लोकतंत्र में दूसरी बात अधिक महत्वपूर्ण है।

अगर आपके 'थर्ड स्पेस' में अकेलापन है तो यह खतरनाक है

दुनियाभर में स्क्रीन-फोकस्ड आबादी को यह एहसास हो गया है कि आधुनिक समाज में सबसे मुश्किल से मिलने वाली चीज 'दोस्त' हैं। चूंकि अकेलापन अब कई लोगों के लिए शर्म से भरा एक सीक्रेट बन गया है, इसलिए अब वे हजारों अनजान लोगों के सामने अपना अकेलापन स्वीकार रहे हैं- इस उम्मीद में कि शायद इनमें से कोई उनके साथ दोस्त की तरह वक्त बिताना चाहे।

एक क्लासिफाइड विज्ञापन में लिखा है कि 'मैं अकेलेपन से थक चुका हूं। यह सुनने में दुखद लग सकता है, लेकिन मुझे सच में कुछ दोस्त बनाने हैं।' अमेरिका में सैकड़ों लोग ऐसे विज्ञापन पोस्ट करके अपनी भावनाएं खुलकर जाहिर कर रहे हैं और प्रयासरत हैं कि उन्हें कुछ गैर-रोमांटिक कनेक्शन मिल जाएं। कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी में सेंटर फॉर फ्रेंडशिप रिसर्च की डायरेक्टर जैमी क्रेम्स कहती हैं कि 'इस तरह की गुहार लगाना किसी की दोस्ती वाली 'टैक्सी लाइट' की तरह है, जो अकेलेपन को लेकर उनकी ईमानदारी को बताती है।' 'टैक्सी लाइट' शब्द एविएशन इंडस्ट्री का एक यूनिवर्सल टर्म है, जिसका इस्तेमाल तब किया जाता है, जब रनवे पर लगी कलर-कोडेड नीली लाइटों की मदद से विमान को उतारा जाता है। यह स्पष्ट करता है कि बहुत से लोग अपनी जिंदगी की भी सुरक्षित लैंडिंग चाहते हैं।



क्रेम्स कहती हैं कि 'अगर दोस्ती कोई दवा है, तो शायद यह सबसे ज्यादा लिखी जाने वाली दवा होगी।' एडल्ट फ्रेंडशिप पर विशेषज्ञता रखने वाली क्लिनिकल साइकोलॉजिस्ट मिरियम किर्मायर कहती हैं कि 'ऑनलाइन नए दोस्त बनाने के लिए टेक्नीक चाहिए। बेहतर होगा कि आप अपनी जरूरत साफ बताएं। जैसे, मैं हर शुक्रवार जिम जाने के लिए दोस्त तलाश रहा हूं।' हैरानी नहीं कि टिकटॉक जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर 'फ्रेंडशिप एप्लिकेशन' उपलब्ध हैं। 33 साल की टॉट्श तब बहुत उलझन में पड़ गईं, जब उनकी सबसे अच्छी दोस्त को बच्चा हो गया और वह अपने पैरेंट्स के घर चली गई। वह ऐसे दोस्त बनाना चाहती थीं, जिनके बच्चे न हों। उन्हें पहला रिप्लाई मिला, 'यह अजीब है।' टॉट्श ने जवाब दिया कि 'हां, यह अजीब है। और इसीलिए मैं यह वीडियो बना रही हूं, ताकि अपने जैसे दूसरे अजीब लोग ढूंढ सकूं।' उनकी पोस्ट को जल्द ही हजारों लाइक्स मिले।

कमेंट्स में जवाब देने वालों में से आज उनकी दो बेस्ट फ्रेंड्स हैं। तब से वे उनके साथ घूमने गई हैं। वे साथ में कॉन्सर्ट और शो देखने जाती हैं और अपनी शामें अच्छे-से बिताती हैं। मीडिया को दिए एक इंटरव्यू में टॉट्श कहती हैं कि 'मुझे पता था कि मुझे जानने वाले लोग मुझे मूर्ख समझ सकते हैं। लेकिन मुझे नहीं लगता कि अपनी चाहत बताने में कोई शर्म की बात है।' यह उन लोगों के लिए चेतावनी है, जो एक-दो दशक पहले की तुलना में अब कम सोशलाइज होते हैं और उनके करीबी दोस्त भी कम हैं। सोशल साइकोलॉजिस्ट इसकी वजहों में घर और ऑफिस से इतर 'थर्ड स्पेस' के घटने, स्क्रीन के हमारे समय पर हावी होने और वयस्क जीवन में शादी, पैरेंटहुड और अपना घर होने जैसी जिम्मेदारियों के देर से आने या शायद ही आने जैसी चीजें गिनाते हैं। 'थर्ड स्पेस' उस सामाजिक माहौल को कहते हैं, जो उन दो प्राथमिक जगहों से अलग होता है, जहां लोग अपना ज्यादातर समय बिताते हैं- पहली जगह घर और दूसरी ऑफिस या स्कूल। अर्बन सोशियोलॉजिस्ट रे ओल्डेनबर्ग द्वारा ईजाद यह शब्द 'थर्ड स्पेस' कम्युनिटी लाइफ का आधार है और व्यापक व रचनात्मक सामाजिक मेलजोल को बढ़ावा देता है। अमेरिकन एंटरप्राइज इंस्टीट्यूट के सर्वे सेंटर ऑफ अमेरिकन लाइफ के मुताबिक, मोबाइल-ऑब्सेस्ड आबादी में ज्यादा से ज्यादा लोग यह महसूस करने लगे हैं कि संतोषपूर्ण जीवन के लिए दोस्त उतने ही जरूरी हैं, जितनी शादी या बच्चे। लेकिन ऑनलाइन बने बहुत-से रिश्ते शायद ही स्थायी दोस्ती में बदल पाते हैं। जेसिका लेच जैसी महिलाएं भी हैं, जिनकी पोस्ट पर 800 लोगों ने दिलचस्पी दिखाई, लेकिन सिर्फ एक ही उनकी सच्ची दोस्त बन सकी। फंडा यह है कि हमें गहराई से सोचना चाहिए कि क्या हमें अपना जीवन आज की स्क्रीन-फोकस्ड एकाकी आबादी की तरह जीना चाहिए, जो अब दोस्तों के लिए विज्ञापन दे रही है। या फिर, हमें बचपन से ही ऐसे दोस्त बनाने चाहिए, जो हमारी जिंदगी को सार्थक बना सकें। दूसरा विकल्प हमारे 'थर्ड स्पेस' को उद्देश्यपूर्ण बनाए रखेगा।

नेताओं को सार्वजनिक मंचों पर शालीनता का परिचय देना होगा

उत्तराखंड के मंत्री सुबोध उनियाल हाल ही में उस समय चर्चाओं में आए, जब उन्होंने नई टिहरी में सरकार द्वारा प्रायोजित एक पर्यटन मेले में प्रस्तुति दे रहे मशहूर पंजाबी गायक दलेर मेहंदी को सार्वजनिक रूप से अपमानित किया। कार्यक्रम के बीच में ही उनियाल मंच पर चढ़ गए और मेहंदी पर आरोप लगाया कि वे नशे में हैं, ठीक से खड़े नहीं हो पा रहे हैं या बोल नहीं पा रहे हैं और लाइव गाने के बजाय रिकॉर्ड किए हुए गाने पर केवल होंठ हिला रहे हैं। उन्होंने यह आरोप भी लगाया कि मेहंदी इस कार्यक्रम के लिए उन्हें दी गई 35 लाख रुपये की राशि का सम्मान नहीं कर रहे हैं।

घटना का वीडियो वायरल होने के बाद बॉलीवुड की कई प्रमुख हस्तियों ने इस व्यवहार की आलोचना की। इनमें अनुपम खेर के साथ दलेर मेहंदी के भाई व गायक मीका सिंह भी शामिल हैं। उन्होंने कहा एक प्रतिष्ठित व लोकप्रिय कलाकार के साथ इस तरह का दुर्व्यवहार अनुचित है, वह भी उन दर्शकों के सामने जो उनका गायन सुनने के लिए वहां इकट्ठा हुए थे। हर कहानी के दो पहलू होते हैं। हो सकता है कि उस रात दलेर मेहंदी का गायन अपेक्षित स्तर का न रहा हो। यह भी सच है कि अगर उनका स्वास्थ्य ठीक नहीं था तो उन्हें इस कार्यक्रम का निमंत्रण स्वीकार नहीं करना चाहिए था। लेकिन लोगों को दलेर मेहंदी के सार्वजनिक अपमान ने ज्यादा हैरान किया है।

उन पर न केवल नशे में होने के अपुष्ट आरोप लगाए गए, बल्कि कार्यक्रम के लिए उन्हें दी गई पारिश्रमिक राशि का सार्वजनिक रूप से उल्लेख करने में भी शालीनता नहीं थी। अगर दलेर मेहंदी की प्रस्तुति स्तरीय नहीं थी और दर्शक इसको लेकर खुश नहीं थे, तो इस स्थिति को कहीं बेहतर ढंग से संभाला जा सकता था। मसलन, कार्यक्रम के मध्यांतर में मेहंदी को मंच के पीछे ले जाकर विनम्रता से उनसे पूछा जा सकता था कि क्या वे ठीक हैं?

संभवत: यह पहली बार है, जब किसी नेता ने किसी प्रतिष्ठित कलाकार के साथ ऐसा व्यवहार किया हो। आमतौर पर ऐसे व्यवहार का निशाना नौकरशाह बनते हैं, खासकर स्थानीय प्रशासनिक अधिकारी, जिनका अपने निर्वाचन क्षेत्रों की विकास परियोजनाओं को लेकर राजनेताओं से टकराव होता रहता है। अधिकारियों को लेकर मिल रही शिकायतों के कुछ वाजिब कारण भी हो सकते हैं। लेकिन नेताओं के अभद्र आचरण की खबरें चिंताजनक रूप से लगातार सामने आ रही हैं।

कभी-कभी ऐसे टकराव केवल तीखी बहस और ऊंची आवाज में कहासुनी तक सीमित रहते हैं। लेकिन अब तो अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल, निलंबन और अन्य दंडात्मक कार्रवाइयों की धमकियां भी बढ़ती दिखाई दे रही हैं। उदाहरण के लिए कांग्रेस के पूर्व विधायक नीतेश राणे और उनके समर्थकों ने एक बार महाराष्ट्र में भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण के एक डिप्टी इंजीनियर को पुल की रेलिंग से बांध दिया था और उन पर कीचड़ उड़ेला गया था। इसकी वजह मुंबई-गोवा राजमार्ग का खराब रखरखाव और सड़क पर मौजूद गड्ढे थे। भाजपा सांसद कंगना रनौत भी मंडी में स्थानीय अधिकारियों को अपमानित करती रही हैं।

78 साल का इतिहास... इज़राइल में कभी किसी पार्टी को नहीं मिला पूर्ण बहुमत, क्या इस चुनाव में बदलेगा पुराना इतिहास?

27 अक्टूबर 2026 यानी आज ही के दिन इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू की सबसे बड़ी परीक्षा है। 68 लाख इजरायली वोटर्स नई सरकार चुनने के लिए वोट डाल रहे हैं। गाजा और ईरान वॉर के बीच यह इजरायल का पहला चुनाव है। दोनों मोर्चों पर नेतन्याहू कहीं ना कहीं असफल रहे हैं। पहले वो हमास का हमला रोकने में नाकाम रहे। फिर ईरान की बारी आई। लेकिन वो ना तो तख्ता पलट करा आ पाए और ना ही न्यूक्लियर प्रोग्राम बंद हुआ। उल्टा ईरान ने स्ट्रेट ऑफ होर्मुज पर ताला लगा दिया है। इसके अलावा नेतन्याहू पर घूसखोरी और पद के दुरुपयोग से जुड़े मुकदमे चल रहे हैं। उनके कई अफसर जांच के दायरे में हैं। कई पुराने अफसरों ने उनके खिलाफ मोर्चा खोल रखा है। नेतन्याहू की विरोधी पार्टियों ने आपस में हाथ मिल लिया है। जबकि सहयोगी पार्टियां उनसे किनारा करने लगी हैं। इलेक्शन पोल्स में नेतन्याहू की हार तय बताई जा रही है।

चर्चा है कि इस बार उनका करियर खत्म हो सकता है। लेकिन इन दावों में कुछ भी नया नहीं है। नेतन्याहू पिछले 30 वर्षों में से 20 बरस प्रधानमंत्री रहे हैं। पहली बार 1996 से 1999 तक दूसरी बार 2009 से 2021 तक और उनका तीसरा कार्यकाल दिसंबर 2022 में शुरू हुआ था। जब-जब उनको कुर्सी छोड़नी पड़ी तब-तब कहा गया कि उनकी वापसी नहीं होगी। मगर नेतन्याहू हर बार फिनिक्स की तरह राख से उगाए हैं। इसी वजह से लोग उनको किंग बीबी भी कहते हैं। लेकिन नेतन्याहू इतने ताकतवर बने कैसे? इजरायल की पॉलिटिक्स को उन्होंने कैसे बदला? नेतन्याहू का पावर पैटर्न क्या कहता है? इस चुनाव में उनकी पोजीशन कमजोर क्यों है? और क्या यह चुनाव उनका करियर खत्म कर सकता है? तमाम सवालों का एमआरआई स्कैन करते हैं।

एक लोकतंत्र होने के नाते, जहाँ चुनाव 'आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली' से होते हैं, इज़राइल में कई पार्टियाँ और सूचियाँ मौजूद हैं। पार्टियों और सूचियों के बीच अंतर यह है कि एक पार्टी एक ऐसा संगठन है जो चुनाव के तय नियमों के दायरे में रहकर सत्ता हासिल करना चाहती है, जबकि एक 'सूची' का मतलब वही है जो इसके नाम से पता चलता है। यह किसी पार्टी या पार्टियों के समूह द्वारा चुनाव के लिए तैयार की गई उम्मीदवारों की एक सूची होती है। कोई भी पंजीकृत पार्टी या सूची चुनाव लड़ सकती है। 'बेसिक लॉ: द नेसेट' की धारा 7A के तहत, सेंट्रल इलेक्शंस कमिटी या सुप्रीम कोर्ट किसी राजनीतिक पार्टी की सूची या किसी उम्मीदवार को अयोग्य घोषित कर सकते हैं, यदि उनके एजेंडे या कार्यों से यह झलकता हो कि वे इज़राइल राज्य के एक यहूदी और लोकतांत्रिक देश के रूप में अस्तित्व को नकारते हैं, नस्लवाद को बढ़ावा देते हैं, या इज़राइल के खिलाफ किसी शत्रु देश या आतंकवादी संगठन द्वारा किए जा रहे सशस्त्र संघर्ष का समर्थन करते हैं। जब रजिस्ट्रार यह तय कर लेता है कि किसी पार्टी का प्लेटफॉर्म और व्यवहार लोकतंत्र के अनुरूप है और वह अपने खातों का उचित रिकॉर्ड रखती है, तो उस पार्टी को चुनाव लड़ने की मंजूरी दे दी जाती है। कार्यकारी शक्तियां प्रधानमंत्री के पास होती हैं। सरकार सीधे तौर पर नेसेट के विश्वास पर टिकी होती है और शासन चलाने के लिए उसे बहुमत (कम से कम 61 सीटें) बनाए रखना जरूरी होता है। न्यायपालिका, जिसका नेतृत्व सुप्रीम कोर्ट करता है, स्वतंत्र रूप से काम करती है। यह बुनियादी कानूनों की व्याख्या करती है और कानूनों की समीक्षा करती है। इजरायल में राष्ट्रीय चुनावों का संचालन और देखरेख CEC (केंद्रीय चुनाव आयोग) द्वारा की जाती है।

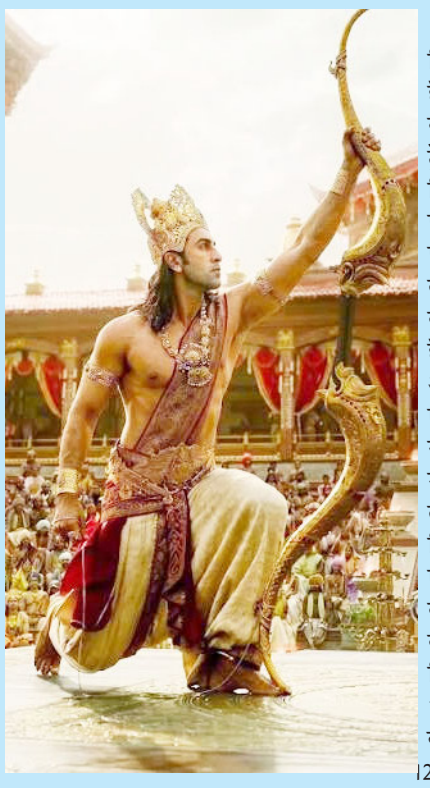


इज़राइल की 'पार्टी-लिस्ट आनुपातिक प्रतिनिधित्व' प्रणाली में 'चुनावी थ्रेशोल्ड' वह न्यूनतम प्रतिशत है जो किसी राजनीतिक दल को संसद में प्रवेश करने के लिए कुल राष्ट्रीय वोटों में से हासिल करना होता है। वर्तमान में यह सीमा 3.25% तय की गई है — यह मानक 2014 में नेसेट (इज़राइली संसद) के कानून द्वारा स्थापित किया गया था। इस सीमा को पार करने पर, किसी दल को नेसेट की कुल 120 सीटों में से कम से कम 4 सीटें मिल जाती हैं। यदि कोई दल 3.25% के इस आंकड़े तक नहीं पहुँच पाता है, तो उसे मिले सभी वोट रद्द कर दिए जाते हैं। इस तरह ये वोट 'बेकार' हो जाते हैं और इन्हें उन दलों के बीच फिर से बांट दिया जाता है जो सफल रहे हैं। इस थ्रेशोल्ड (सीमा) का मुख्य उद्देश्य संसद के अत्यधिक बिखराव को रोकना और बहुत छोटे दलों को बाहर रखकर, प्रतिनिधित्व और राजनीतिक स्थिरता के बीच संतुलन बनाना है। इज़रायली डेमोक्रेसी इंस्टीट्यूट के शोधकर्ता प्रो. ओफ़र केनिग बताते हैं कि 1951 में यह सीमा केवल 1% थी, जिसे धीरे-धीरे बढ़ाकर 1.5% (1992), 2% (2003) और अंतत: 3.25% (2014) कर दिया गया। यह ऊँची सीमा छोटे वैचारिक समूहों या विशिष्ट दलों को चुनाव के दिन से पहले आपस में मिलकर एक साझा चुनावी सूची (इलेक्टोरल स्लेट) बनाने के लिए प्रेरित करती है, ताकि वे मिलकर इस थ्रेशोल्ड को पार कर सकें। वे आगे कहते हैं कि इस वजह से, 3.25% का यह नियम गठबंधन के समीकरण तय करने और यह निर्धारित करने में निर्णायक भूमिका निभाता है कि कौन-सा राजनीतिक गुट सरकार बना सकता है।

इज़राइल के राजनीतिक इतिहास में आज तक किसी भी पार्टी को अपने दम पर 61 सीटों का स्पष्ट बहुमत नहीं मिला है। यही वजह है कि वहां हमेशा गठबंधन सरकार ही बनती आई है। ऐसे में पुराने और नए सहयोगियों को साधकर सरकार बनाने की प्रक्रिया में अक्सर काफी समय लगता है। मतदान के बाद केंद्रीय चुनाव समिति (घ्श्वष्ट) अंतिम परिणाम और सीटों के वितरण को प्रमाणित करती है। इसके बाद राष्ट्रपति उन सभी दलों के प्रतिनिधियों से बातचीत करते हैं जिन्होंने चुनावी सीमा (इलेक्टोरल थ्रेशोल्ड) पार की है। इस चर्चा का मुख्य उद्देश्य प्रधानमंत्री पद के संभावित उम्मीदवारों पर राय लेना होता है। दलों से विचार-विमर्श के बाद राष्ट्रपति उस उम्मीदवार को सरकार बनाने का न्योता (जनादेश) सौंपते हैं, जिसके पास 61 सीटों का जादुई आंकड़ा जुटाने की सबसे अधिक संभावना होती है। नामित उम्मीदवार को गठबंधन तैयार करने के लिए शुरुआत में 28 दिनों का समय दिया जाता है। जरूरत पड़ने पर राष्ट्रपति इसे 14 दिनों के लिए और बढ़ा सकते हैं। यदि पहला उम्मीदवार तय समय में बहुमत जुटाने में असमर्थ रहता है, तो राष्ट्रपति यह जनादेश किसी दूसरे उम्मीदवार को सौंप सकते हैं, जिसे 28 दिनों का समय मिलता है। गठबंधन समझौता तय होने के बाद, नामित प्रधानमंत्री अपनी नई सरकार, नीतिगत दिशा-निर्देशों और कैबिनेट मंत्रियों की सूची को संसद (नेसेट) के सामने औपचारिक विश्वास मत के लिए पेश करते हैं। संसद में कम से कम 61 सदस्यों का समर्थन हासिल होते ही नई सरकार और उसके मंत्री पद की शपथ लेते हैं।

रामायण एडवांस बुकिंग में बिकी ढाई लाख से ज्यादा टिकटें, देश-विदेश का कलेक्शन कर देगा हैरान

रामायण एडवांस बुकिंग में बिकी ढाई लाख से ज्यादा टिकटें



रणबीर कपूर की फिल्म 'रामायण' के रिलीज होने में अब बस कुछ ही दिन बचे हैं। फिल्म दिवाली से पहले दुनियाभर में बड़ा धमाका करने जा रही है। फिल्म के ट्रेलर और म्यूजिक ने पहले ही कमाल किया हुआ है और अब बस थिएटर तक पहुंचने का इंतजार हो रहा है। एक हफ्ते पहले रामायण की एडवांस बुकिंग शुरू कर दी गई थी। अगर अब तक के कलेक्शन की बात करें तो कोई बड़ी कमाई नहीं हुआ है। लेकिन माना जा रहा है भारत में आखिरी मौके पर टिकट बुक की जाती हैं। ऐसे में बड़ी ओपनिंग की उम्मीद की जा रही है। जानिए 4000 करोड़ रुपये के बजट में बनी फिल्म ने एडवांस बुकिंग में अब तक कितना कलेक्शन किया है। फिल्म डिस्कोर्स के मुताबिक भारत में रामायण की एडवांस बुकिंग में अब तक कुल ग्रॉस कलेक्शन 26.65 करोड़ रुपये हुआ है। ये कलेक्शन ब्लॉक टिकट के साथ का है। बिना ब्लॉक टिकट के ग्रॉस कलेक्शन 14.83 करोड़ रुपये हुआ है। और कुल नेट कमाई, बिना ब्लॉक टिकट के अब तक 12.54 करोड़ रुपये हुआ है। रिलीज से पहले कमाई का ये आंकड़ा तेजी से बढ़ सकता है। इसी रिपोर्ट के मुताबिक पिछले तीन दिनों में देश के 179 शहरों में फिल्म रामायण की 2.57 लाख टिकटें बेची जा चुकी है। सबसे ज्यादा टिकट दिल्ली-एनसीआर में बिकी हैं। दूसरे नंबर पर मुंबई है। ब्रिटेन और आयरलैंड में हुई अब तक की कमाई की बात करें तो यहां फिल्म ने 268,800 डॉलर यानी 2.56 करोड़ का कलेक्शन किया है। यहां रामायण की 15,022 टिकट बेची जा चुकी हैं। ऑस्ट्रेलिया में फिल्म की कमाई 248,300 ऑस्ट्रेलियाई डॉलर यानी 1.66 करोड़ रुपये। इसके अलावा फिल्म जर्मनी और दुनियाभर में भी कमाई कर रही है। ओवरसीज कुल कलेक्शन 24.54 करोड़ रुपये हुआ है और इन देशों में 138,986 टिकटें बेची जा चुकी हैं।

रामायण का दिवाली से पहले धमाका

बता दें, नितेश तिवारी के डायरेक्शन में बनी फिल्म रामयाण 5 नवंबर को थिएटर में दस्तक देने वाली है। फिल्म में पहली बार रणबीर राम बने दिखेंगे। यश ने रावण का किरदार निभाया है और वो नमित मल्होत्रा के साथ इस फिल्म को प्रोड्यूस भी कर रहे हैं। अब इस फिल्म को थिएटर पर देखने का इंतजार हो रहा है।

बिग बॉस- 20 : स्काउट ने लव गिल को किया नोमिनेट



फूट-फूटकर रोईं एक्ट्रेस, कहा- 'मैंने जाल बिछाया है...'

बिग बॉस- 20 : सलमान खान होस्टेड कॉन्ट्रोवर्शियल रिएलिटी शो 'बिग बॉस 20' लगातार सुर्खियों में बना हुआ है। ये शो अपने कंटेंट को लेकर सोशल मीडिया पर छाया है। आज इस शो को शुरू हुए 51 दिन हो चुके हैं। ऐसे में अब कंटेस्टेंट्स अपने गेम को और भी स्ट्रॉन्ग करते नजर आ रहे हैं। बीते दिनों वीकेंड का वार काफी धमाकेदार रहा। शो पर रोहित शेट्टी होस्ट बनकर आये थे और घरवालों की जमकर क्लास लगाई। रोहित ने स्काउट और लव गिल के रिश्ते पर ना सिर्फ सवाल उठाया बल्कि उन्हें बताया की जो वो घर के अंदर कर रहे है वो बाहर अच्छा नहीं दिख रहा है। ऐसे में शो का नया प्रोमो सामने आया है, जिसमें लव बुरी तरह से रोती नजर आईं हैं। उन्हें रोता देख घर के बाकी सदस्य भी दुखी होते दिखे। दरअसल, वीकेंड का वार पर रोहित ने बताया कि लोग उन्हें ट्रोल कर रहे हैं और उनके भाई-बहन के रिश्ते को अलग ही नजर से देखा जा रहा है। वहीं शो पर स्काउट की गर्लफ्रेंड काशवी भी पहुंची, जिसे देखकर स्काउट के होश उड़ गए। कशवी ने स्काउट को जमकर सुनाया और लव से दूर रहकर अपने गेम पर ध्यान देने को कहा। काशवी की बात सुनने के बाद स्काउट ने पूरी तरह से लव से किनारा कर लिया, लेकिन इस बात ने लव को अंदर तक तोड़कर रख दिया। बिग बॉस 20 में मंगलवार को नॉमिनेशन टास्क हुआ। इस टास्क में लव गिल तब इमोशनल हो जाती हैं, जब स्काउट उन्हें नॉमिनेट करते हैं। इसके बाद लव इमोशनल हो जाती है और रोने लगती है। काजी उन्हें समझाने की कोशिश करते हैं, लेकिन उनके आंसू रुकते नहीं। ऐसे में अब जो प्रोमो सामने आया है, उसमें लव को जब नॉमिनेट करने लिए बुलाया जाता है, तो वो अपने आप रोक नहीं पाई और सबके सामने बुरी तरह से रोने लगती हैं। वो कहती हैं सब समझा रहे हैं। कोई बोल रहा मूव ऑन कर ले। कोई कुछ बोल रहा। इतने दिन साथ थे, ऐसे थोड़ी होता है कि एक दिन में सब खत्म। मुझे थोड़ा समय तो दो। लव करो रोता देख आम्रपाली भी अपने आंसू रोक नहीं पाती हैं। आगे क्या होगा ये कल के एपिसोड में दिखाया जाएगा। बिग बॉस 20 के घर में 16 कंटेस्टेंट ने एंट्री की है। वहीं, घर से रोहेद खान और ईशा रिखी बाहर हो गए हैं। ऐसे में बीते दिनों रीति तिवारी भी मिड एविक्शन का शिकार हुईं। शो से अमन गांधी और वाइल्ड कार्ड कंटेस्टेंट नकुल धुल (मिट्ठू डॉन) भी बाहर हो चुके हैं। वहीं, शो से मैरी कॉम बाहर हो गई हैं।

साई पल्लवी ने डॉक्टरी छोड़ एक्टिंग को क्यों चुना?



रामायण फिल्म के प्रमोशन खूब जोर-शोर से हो रहे हैं। अब फिल्म की स्टार कास्ट रणबीर कपूर, साई पल्लवी और रवि दुबे, अमिताभ बच्चन के शो कौन बनेगा करोड़पति में। गेम खेलते हुए तीनों स्टार्स ने बिग बी के साथ खूब मस्ती की। अब इस शो का एक प्रोमो वीडियो सामने आया है जहां बिग बी ने साई से पूछा कि मेडिकल की पढ़ाई के बाद वह एक्ट्रेस क्यों बनीं? तो जानें उन्होंने क्या कहा। बिग बी पूछते हैं कि आपने डॉक्टर की पढ़ाई की और फिर अब आप यहां हो तो ऐसे कैसे? साई बोलती हैं, भगवान ने लिखा है ये सब। इस पर रणबीर तुरंत बीच में बोलते हैं, भगवान का प्रिस्क्रिप्शन था सर कि इन्हें एक्ट करना है। रणबीर की बात सुनकर सब हंसने लग जाते हैं।

वहीं दूसरे प्रोमो में साई ने बताया था कि जब उन्हें रामायण फिल्म ऑफर हुई थी तो उनका पहला रिएक्शन क्या था। वह बोलती हैं, 'मैं उस वक्त अपना दिमाग नहीं यूज करना चाहती थी। जब भी मैं किरदार निभाती हूं मैं सोचती हूं कि मैं एक किरदार को क्या दे सकती हूं, लेकिन इस बार पहली बार ऐसा हुआ कि मैंने सोचा कि कैसे मैं सीता मां का किरदार निभा सकती हूं? मतलब इससे क्या ज्ञान मिलेगा तो मैं प्रोसेस को ट्रांसपेरेंट रखना चाहती थी। मैं ज्यादा इस बारे में नहीं सोचना चाहती थी। मैंने सीता मां की प्रार्थना की और इसी के साथ आगे बढ़ गए।

बता दें कि केबीसी का ये स्पेशल एपिसोड 29 और 30 अक्टूबर को टेलिकास्ट होगा। वहीं फिल्म की बात करें तो रामायण 5 नवंबर को रिलीज होगी दिवाली से 3 दिन पहले। रामायण को नितेश तिवारी ने डायरेक्ट किया है। फिल्म में रणबीर ने राम, साई पल्लवी ने सीता, यश ने रावण, रवि दुबे ने लक्ष्मण, सनी देओल ने हनुमान का किरदार निभाया है। इनके अलावा फिल्म में अरुण गोविल, लारा दत्ता, रकुल प्रीत सिंह, काजल अग्रवाल और विवेक ओबेरॉय भी हैं। फिल्म के प्रोड्यूसर नमित मल्होत्रा ने खुद एक पॉडकास्ट में बताया था कि दोनों पार्ट्स को मिलाकर फिल्म का टोटल बजट 4000 करोड़ है। इस बजट के साथ रामायण भारत की सबसे महंगी फिल्म है।

गोंधलः भारत की ऑस्कर एंट्री फिल्म का ट्रेलर रिलीज

मराठी फिल्म 'गोंधल' की खूब चर्चा हो रही है। यह इस साल एकेडमी अवॉर्ड्स में भारत की आधिकारिक प्रविष्टि है। अब यह 12 नवंबर 2026 को सात भाषाओं में वर्ल्डवाइड रिलीज हो रही है। इस बीच फिल्म के ट्रेलर ने दस्तक दी है। इसमें लोक परंपरा और सांस्कृतिक आयोजन की झलक है।

कहां-कहां रिलीज होगी फिल्म?

फिल्म 'गोंधल' हिंदी, मराठी, तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़ और अंग्रेज़ी भाषाओं में दुनियाभर के सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए तैयार है। यह एक ऐतिहासिक कदम है, क्योंकि पहली बार किसी मराठी फिल्म को वैश्विक स्तर पर सात भाषाओं में दोबारा रिलीज किया जा रहा है। फिल्म भारत, अमेरिका, ब्रिटेन, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, दुबई और अफ्रीका सहित कई क्षेत्रों में रिलीज होगी।

कैसा है फिल्म का ट्रेलर?

सामने आए ट्रेलर से अंदाजा लगाया जा सकता है कि यह एक साइकोलॉजिकल थ्रिलर फिल्म है। इसमें विजुअल्स हैं। सांस्कृतिक माहौल है। सस्पेंस की परते हैं और साथ ही रोमांच है। महाराष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत की पृष्ठभूमि पर आधारित 'गोंधल' सुमन और आनंद राव नाम के नवविवाहित जोड़े की कहानी है। इनकी जिंदगी में एक परेशान कर देने वाला मोड़ आता है। ख्वाहिशें, कर्तव्य और आस्था आपस में टकराने लगते हैं। एक दुल्हन की चाहत, पति की जिम्मेदारियां और रहस्यमयी घटनाओं की एक सीरीज धीरे-धीरे इस जोड़े को ऐसे जाल में उलझा देती है, जहां दिखाई देने वाली हर चीज सच नहीं होती।



थिएटर में कब दस्तक देगी रहस्य और रोमांच से भरपूर कहानी?

बॉक्स ऑफिसः पांचवें दिन 'उड़ता तीर' का कैसा रहा मंगल? 'जेलर 2' की धमक जारी

जानिए 'प्रहार'- 'नई नवेली' का हाल

सुपरस्टार रजनीकांत की फिल्म 'जेलर 2' का जलवा जारी है। देश ही नहीं, बल्कि दुनियाभर में इसने डंका बजा दिया है। इसके अलावा सिनेमाघरों में 'उड़ता तीर', 'नई नवेली' और 'प्रहार' जैसी फिल्में भी लगी हुई हैं। कमाई के मामले में आज मंगलवार को किसने कैसा प्रदर्शन किया है? समझते हैं आंकड़ों से रजनीकांत की फिल्म 'जेलर 2' की रिलीज को आज मंगलवार को 13 दिन पूरे हो गए हैं। यह फिल्म 15 अक्तूबर को थिएटर्स में रिलीज हुई थी। वीकएंड पर शानदार प्रदर्शन करने के बाद कल सोमवार को कमाई में गिरावट आई थी। फिल्म जेलर 2 का टोटल नेट कलेक्शन 413.91 करोड़ रुपये हो चुका है। वर्ल्डवाइड भी इसकी धमक जारी है। यह वर्ल्डवाइड 700 करोड़ क्लब में एंट्री ले चुकी है। इसी के साथ फिल्म का वर्ल्डवाइड कारोबार 733.35 करोड़ रुपये हो चुका है।





'उड़ता तीर' ने कितने कमाए?

आयुष्मान खुराना और सारा अली खान अभिनीत फिल्म 'उड़ता तीर' की रिलीज को पांच दिन हो गए हैं। कल मंडे टेस्ट में इस फिल्म ने 3.25 करोड़ रुपये का कारोबार किया था। वहीं, आज मंगलवार को पांचवें दिन कलेक्शन 2.26 करोड़ रुपये हो गया है। इसी के साथ इस फिल्म का टोटल नेट कलेक्शन 25.06 करोड़ रुपये हो गया है।

मेरे पास कोई ऐसा पिता नहीं था जो...नेपोटिज्म पर सारा अली खान का पलटवार



स्टार किड्स को हमेशा नेपोटिज्म को लेकर सवाल किया जाता है। ये एक ऐसा सब्जेक्ट है जिस पर सालों से डिबेट चल रही है। अब सैफ अली खान और अमृता सिंह की बेटी सारा अली खान ने नेपोटिज्म पर बात करते हुए बतया कि कैसे उनके पिता ने कभी किसी से उन्हें काम दिलवाने के लिए नहीं कहा। उन्होंने कहा कि हमारे प्रिविलेज को ज्यादा ना दिखाते हुए ये भी सोचना चाहिए कि हम कितनी मेहनत करते हैं अपने करियर को बनाने में। फिल्मफेयर से बात करते हुए सारा ने कहा कि उनकी जो फैमिली लीगेसी है इसके फायदे और नुकसान दोनों हैं। सारा ने माना कि इससे उनके लिए रास्ते खुले हैं, जिससे उन्हें एक्टर बनने से पहले ही अवसर, पहचान और शोहरत मिल गई। लेकिन इसके साथ ही उम्मीदें भी काफी होती हैं। सारा ने आगे कहा कि उन्होंने, जाह्नवी कपूर और अनन्या पांडे ने खुद इस परिवार को नहीं चुना, उनका बस जन्म हुआ है और ये किस्मत की बात है। वह इस बात को भी मानती हैं कि उन्हें इससे फायदा भी होता है जिसमें डेब्यू के मौके भी शमिल हैं जिसकी कई एस्पायरिंग उम्मीद करते हैं।

अपनी जर्नी को लेकर सारा बोलीं, 'मैं सिंगल मदर के साथ रही हूं। मेरे पास कोई ऐसा पिता नहीं था जो ऑफिस के चक्कर लगाता, मेरे कॉन्ट्रैक्ट्स देखता या फिर लोगों से मुझे अपनी फिल्मों में लेने की गुजारिश नहीं की। जब केदारनाथ में मुझे दिक्कत हो रही थी तो मुझे खुद ही सब देखना पड़ा क्योंकि मेरा इंडस्ट्री में कोई गॉड फादर नहीं था।' सारा की फिल्म उड़ता तीर हाल ही में रिलीज हुई है। फिल्म में सारा के साथ आयुष्मान खुराना लीड रोल में हैं। उड़ता तीर को मिक्स रिस्पॉन्स मिला है। लास्ट वह इसी साल रिलीज हुई पति, पत्नी और वो दो में नजर आई थीं। इस फिल्म में सारा के साथ आयुष्मान खुराना, रकुल प्रीत सिंह और वामिका गब्बी लीड रोल में थे। ऐसी रिपोर्ट्स हैं कि सारा, गोलमाल 5 में भी नजर आ सकती हैं। रोहित शेट्टी द्वारा निर्देशित इस फिल्म में अजय देवगन, अक्षय कुमार, शरमन जोशी, श्रेयस तलपड़े, तुषार कपूर, कुणाल खेमू लीड रोल में हैं।

मेरे यार बजरंगी दिवाली से पहले रवि किशन ने दिया प्रशंसकों को तोहफा

'बजरंगी के यार' बनेंगे रवि किशन

भाजपा सांसद और अभिनेता रवि किशन माइथोलॉजिकल फिल्म में नजर आने वाले हैं। पोस्टर के साथ फिल्म का एलान किया गया है। 'मेरे यार बजरंगी दोस्ती हो तो ऐसी' टाइटल वाली इस फिल्म में रवि किशन पर्दे पर बजरंगी के दोस्त बनकर छाने वाले हैं। कब रिलीज होगी फिल्म?

फिल्म 'मेरे यार बजरंगी' का एलान इस दिवाली से पहले किया गया है। मगर, यह रिलीज अगले साल दिवाली पर होगी। रवि किशन परदे पर 'बजरंगी के यार' बनकर दर्शकों के बीच पहुंचने वाले हैं। यह फिल्म दिवाली 2027 में रिलीज होगी। इस भक्ति ड्रामा फिल्म को महावीर जैन फिल्म्स प्रोड्यूस कर रहे हैं। फिलहाल तो फिल्म के पोस्टर ने पर्याप्त दिलचस्पी पैदा कर दी है।पोस्टर में रवि किशन एक दमदार, लेकिन सादगी भरे अवतार में हैं। पोस्टर में उनका चेहरा नहीं नजर आ रहा है, सिर्फ मुट्ठी बांधने की सिंबॉलिक इमेज भी है। एक हाथ रुद्राक्ष और रक्षा सूत्र पहने शख्स का है। वहीं दूसरा हाथ बजरंग बली का है, जो श्री राम नाम का पटका और रुद्राक्ष की माला पहने हुए हैं। दोनों को एक दिव्य चिंगारी जोड़ती है, जो फिल्म की टैगलाइन, 'दोस्ती हो तो ऐसी' को दिखाती है। यह फिल्म एक आम आदमी की बजरंग बली से दोस्ती पर आधारित है। यह एक पर्सनल रिश्ते के नजरिए से आस्था को दिखाती है। प्रोजेक्ट से जुड़े एक सोर्स ने कहा, 'यह सिर्फ एक धार्मिक फिल्म नहीं है। यह एक भक्त और भगवान के बीच के रिश्ते के बारे में है। आज के समय में, जब हर कोई एक सच्चे दोस्त की तलाश में है, तो क्या होगा अगर बजरंग बली खुद आपके यार बन जाएं? यही इस फिल्म के पीछे की भावना है'। फिलहाल पोस्टर को सकारात्मक रिएक्शन मिल रहे हैं।



बक्सर में बाल श्रम के खिलाफ प्रशासन का बड़ा अभियान

इटाढ़ी में कार्यस्थल से मुक्त कराया गया बच्चा; नियोजक पर होगी प्राथमिकी

- जिलाधिकारी साहिला के निर्देश पर दोनों अनुमंडलों में एक साथ चला धावा दल का विशेष अभियान
- श्रम विभाग, पुलिस और सामाजिक संस्था की संयुक्त टीम ने की जांच
- मुक्त कराए गए बाल श्रमिक को जिला बाल कल्याण समिति को सौंपा गया



बक्सर (संवाददाता)। बच्चों से बाल श्रम कराने की घटनाओं पर रोक लगाने, उन्हें शोषण से मुक्त कराने और उनके अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से बक्सर जिला प्रशासन ने बुधवार, 28 अक्टूबर 2026 को जिले के दोनों अनुमंडलों में एक साथ विशेष अभियान चलाया। जिला पदाधिकारी साहिला के निर्देश पर श्रम संसाधन एवं प्रवासी श्रमिक कल्याण विभाग की ओर से गठित धावा दल ने विभिन्न प्रतिष्ठानों और कार्यस्थलों का निरीक्षण किया। इस अभियान के दौरान इटाढ़ी प्रखंड क्षेत्र से एक बाल श्रमिक को मुक्त कराया गया। कार्रवाई के बाद बच्चे को निर्धारित प्रक्रिया के तहत जिला बाल कल्याण समिति, बक्सर के सुपुर्द कर दिया गया। प्रशासन की ओर से बाल श्रमिक को काम पर लगाने वाले दोषी नियोजक के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज करने की कार्रवाई किए जाने की बात कही गई है।

दोनों अनुमंडलों में एक साथ उतरी धावा दल की टीम

बक्सर जिले में बाल श्रम के खिलाफ चलाए गए इस विशेष अभियान के तहत प्रशासन ने दोनों अनुमंडलों में एक साथ जांच और कार्रवाई की। अभियान का उद्देश्य ऐसे प्रतिष्ठानों और कार्यस्थलों की पहचान करना था, जहां बच्चों से काम कराए जाने की आशंका हो सकती है। जिला प्रशासन के निर्देश पर गठित धावा दल ने अलग-अलग स्थानों पर पहुंचकर निरीक्षण किया और बाल श्रम से संबंधित जानकारी जुटाई। इस दौरान संबंधित विभागों के अधिकारियों और कर्मियों ने अपने स्तर पर कार्रवाई की।

बाल श्रम उन्मूलन के लिए गठित धावा दल में जिले के सभी श्रम प्रवर्तन पदाधिकारी, इटाढ़ी थाना के पुलिसकर्मी तथा कन्हाई शुक्ला सेवा संस्थान के कार्यकर्ता शामिल रहे। अलग-अलग विभागों और सामाजिक संस्था के प्रतिनिधियों की संयुक्त भागीदारी के साथ चलाए गए इस अभियान में बाल श्रमिकों की पहचान करने और उन्हें काम से मुक्त कराने पर जोर दिया गया। प्रशासन के निर्देशानुसार टीम ने विभिन्न प्रतिष्ठानों और कार्यस्थलों की जांच की। अभियान के दौरान इटाढ़ी प्रखंड क्षेत्र से एक बाल श्रमिक को मुक्त कराया गया। यह कार्रवाई बाल श्रम से जुड़े मामलों की जांच के क्रम में की गई। हालांकि, उपलब्ध जानकारी में उस प्रतिष्ठान का नाम, जहां बच्चा काम कर रहा था, और बच्चे की उम्र या उससे कराए जा रहे काम के संबंध में विस्तृत विवरण नहीं दिया गया है। प्रशासन की ओर से पुष्टि की गई है कि अभियान के दौरान एक बाल श्रमिक को विमुक्त कराया गया। बाल श्रमिक को मुक्त कराने के बाद उसे निर्धारित प्रक्रिया के तहत जिला बाल कल्याण समिति, बक्सर के सुपुर्द किया गया। इसके बाद बच्चे के संरक्षण, देखभाल और पुनर्वासन को लेकर नियमानुसार आवश्यक कार्रवाई की जाएगी।

इस प्रक्रिया का उद्देश्य बच्चे को सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराने के साथ उसके हितों की रक्षा करना है। बाल श्रम से मुक्त कराए गए बच्चों के मामले में उनकी देखभाल और भविष्य से जुड़े आवश्यक कदम संबंधित प्रक्रिया के अनुसार उठाए जाते हैं।

जिला प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि बाल श्रमिक को नियोजित करने वाले दोषी नियोजक के विरुद्ध प्राथमिकी दर्ज करने की कार्रवाई की जाएगी। प्रशासन के अनुसार, बाल श्रम से संबंधित मामलों में नियमानुसार कठोर कदम उठाए जाएंगे। इसका उद्देश्य बच्चों को काम पर लगाने की प्रवृत्ति पर रोक लगाना और उनके अधिकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। बाल श्रम से जुड़े मामलों में केवल बच्चे को कार्यस्थल से मुक्त कराना ही कार्रवाई का एकमात्र उद्देश्य नहीं है, बल्कि नियमानुसार जिम्मेदार व्यक्ति के विरुद्ध कार्रवाई करना भी महत्वपूर्ण है। इसी क्रम में इटाढ़ी प्रखंड से मुक्त कराए गए बाल श्रमिक के मामले में संबंधित नियोजक के खिलाफ प्राथमिकी दर्ज करने की कार्रवाई की जाएगी। हालांकि, उपलब्ध जानकारी में संबंधित नियोजक की पहचान और प्राथमिकी दर्ज होने की स्थिति का विवरण नहीं दिया गया है।

प्रशासन के अनुसार, जिले में बाल श्रम उन्मूलन के लिए धावा दलों का लगातार संचालन किया जा रहा है। इन दलों के माध्यम से विभिन्न प्रतिष्ठानों और कार्यस्थलों का निरीक्षण कर बाल श्रम से संबंधित मामलों की जानकारी जुटाई जाती है। जहां इस तरह के मामले सामने आते हैं, वहां नियमानुसार कार्रवाई करने का प्रयास किया जाता है। बुधवार को दोनों अनुमंडलों में एक साथ चलाए गए विशेष अभियान के दौरान इटाढ़ी प्रखंड से एक बाल श्रमिक को मुक्त कराया जाना इस कार्रवाई का प्रमुख परिणाम रहा। प्रशासन की ओर से स्पष्ट किया गया है कि बाल श्रम से जुड़े मामलों में सख्ती बरती जाएगी। इसके साथ ही मुक्त कराए गए बच्चों के संरक्षण, देखभाल और पुनर्वासन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जाएगा।

जिला प्रशासन ने आम नागरिकों से अपील की है कि यदि उनके आसपास किसी प्रतिष्ठान, दुकान या अन्य कार्यस्थल पर बच्चों से बाल श्रम कराया जा रहा हो, तो इसकी सूचना संबंधित विभाग या प्रशासन को दें। समय पर जानकारी मिलने से संबंधित स्थान की जांच कर आवश्यक कार्रवाई करने में मदद मिल सकती है। नागरिकों से सहयोग की अपील का उद्देश्य बाल श्रम से जुड़े मामलों को सामने लाना और बच्चों को शोषण से बचाने के प्रयासों को मजबूत करना है। बाल श्रम उन्मूलन के लिए सरकारी विभागों की कार्रवाई के साथ आम लोगों की जागरूकता भी महत्वपूर्ण है। यदि किसी स्थान पर बच्चों से काम कराए जाने की जानकारी मिलती है, तो उसे संबंधित अधिकारियों तक पहुंचाने से मामले की जांच और नियमानुसार कार्रवाई में सहायता मिल सकती है। प्रशासन ने लोगों से इस दिशा में जिम्मेदारी निभाने और बाल श्रम के मामलों की सूचना देने का आग्रह किया है।

श्रम विभाग, पुलिस और सामाजिक संस्था ने मिलकर चलाया अभियान

इस अभियान में श्रम संसाधन एवं प्रवासी श्रमिक कल्याण विभाग, इटाढ़ी थाना पुलिस और कन्हाई शुक्ला सेवा संस्थान के कार्यकर्ताओं की भागीदारी रही। संयुक्त टीम ने विभिन्न प्रतिष्ठानों और कार्यस्थलों पर जाकर निरीक्षण किया तथा बाल श्रम से संबंधित मामलों की जानकारी एकत्र की। इस तरह के अभियान में विभागीय अधिकारियों और पुलिस की भूमिका के साथ सामाजिक संस्थाओं का सहयोग भी महत्वपूर्ण होता है। जिले के दोनों अनुमंडलों में एक साथ अभियान चलाने का उद्देश्य बाल श्रम के मामलों पर प्रभावी ढंग से निगरानी रखना और सामने आने वाले मामलों में कार्रवाई करना है। प्रशासन की ओर से ऐसे धावा दलों का लगातार संचालन किया जा रहा है। अभियान के माध्यम से बाल श्रमिकों की पहचान, उन्हें काम से मुक्त कराने और नियमानुसार आगे की प्रक्रिया पूरी करने का प्रयास किया जा रहा है।

बच्चों के संरक्षण और पुनर्वासन पर प्रशासन का जोर

बक्सर जिला प्रशासन की ओर से चलाए जा रहे अभियान में बाल श्रमिकों को मुक्त कराने के साथ उनके संरक्षण और पुनर्वासन को भी महत्वपूर्ण माना गया है। इटाढ़ी से मुक्त कराए गए बच्चे को जिला बाल कल्याण समिति के सुपुर्द किया जाना इसी प्रक्रिया का हिस्सा है। समिति के माध्यम से बच्चे की देखभाल और पुनर्वासन के लिए नियमानुसार आवश्यक कार्रवाई की जाएगी। बाल श्रम बच्चों के अधिकारों, शिक्षा और सुरक्षित भविष्य से जुड़ा गंभीर विषय है। बच्चों को कम उम्र में काम में लगाए जाने से उनके विकास और शिक्षा पर असर पड़ सकता है। ऐसे मामलों की पहचान कर बच्चों को श्रम से मुक्त कराना और उन्हें संरक्षण की प्रक्रिया से जोड़ना आवश्यक है। जिला प्रशासन की ओर से चलाए जा रहे अभियान का उद्देश्य भी बाल श्रम की रोकथाम के साथ बच्चों को सुरक्षित भविष्य का अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में काम करना है।

ट्रैक्टर की टक्कर से बाइक सवार हर्षित पांडेय गंभीर घायल, चालक फरार

टोल प्लाजा से आगे चंदा गांव के समीप दोपहर 12 बजे हुआ हादसा



बक्सर (संवाददाता)। बक्सर जिले में बुधवार को टोल प्लाजा से आगे चंदा गांव के समीप एक सड़क दुर्घटना में बाइक सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। दोपहर करीब 12 बजे हुई इस घटना में एक अज्ञात ट्रैक्टर ने बाइक से जा रहे युवक को जोरदार टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि युवक सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से चोटिल हो गया। हादसे के बाद घटनास्थल पर अफरा-तफरी मच गई। स्थानीय लोगों ने तत्काल मदद करते हुए घायल युवक को अस्पताल पहुंचाने की व्यवस्था की। घायल की पहचान हर्षित पांडेय के रूप में हुई है। वह गंगासागर पांडेय के पुत्र हैं और ग्राम इजरी, पोस्ट महदह, थाना मुफस्सिल के निवासी बताए गए हैं। फिलहाल बक्सर सदर अस्पताल में चिकित्सकों की निगरानी में उनका इलाज चल रहा है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, बुधवार दोपहर करीब 12 बजे हर्षित पांडेय बाइक से गुजर रहे थे। इसी दौरान टोल प्लाजा से आगे चंदा गांव के समीप एक अज्ञात ट्रैक्टर ने उनकी बाइक को जोरदार टक्कर मार दी। अचानक हुई इस दुर्घटना के कारण युवक सड़क पर गिर पड़े और उन्हें गंभीर चोटें आईं। हादसे के बाद आसपास मौजूद लोगों का ध्यान घटनास्थल की ओर गया और स्थानीय लोगों ने घायल की सहायता के लिए प्रयास शुरू किए। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, ट्रैक्टर की टक्कर काफी जोरदार थी, जिसके कारण बाइक सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। दुर्घटना के बाद मौके पर कुछ समय के लिए अफरा-तफरी का माहौल बन गया। स्थानीय लोगों ने घायल को तत्काल चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराने की पहल की। इसी दौरान सड़क के सारथी टीम को भी हादसे की सूचना दी गई, जिसके बाद टीम के सदस्य घटनास्थल पर पहुंचे।

समाजसेवी और सड़क के सारथी टीम से जुड़े कृष्णा शर्मा ने बताया कि दुर्घटना की जानकारी मिलते ही उनकी टीम तत्काल मौके पर पहुंची। वहां मौजूद स्थानीय लोगों की मदद से घायल युवक को पहले मेथोडिस्ट अस्पताल ले जाया गया। अस्पताल में युवक का प्राथमिक उपचार शुरू किया गया, ताकि उसे तत्काल चिकित्सा सहायता मिल सके। कृष्णा शर्मा के अनुसार, प्राथमिक उपचार के बाद चिकित्सकों ने युवक को आगे के इलाज के लिए रेफर किया। इसके बाद उसे बक्सर सदर अस्पताल पहुंचाया गया, जहां चिकित्सकों की निगरानी में उसका इलाज जारी है। दुर्घटना के बाद घायल को समय पर अस्पताल पहुंचाने में स्थानीय लोगों और सड़क के सारथी टीम की भूमिका महत्वपूर्ण रही।

कृष्णा शर्मा ने बताया कि घायल युवक को अस्पताल पहुंचाने के दौरान मुन्ना यादव और मुकुल पांडेय ने भी सहयोग किया। मुन्ना यादव एंबुलेंस चालक हैं, जबकि मुकुल पांडेय घायल हर्षित पांडेय के भाई हैं। दोनों के सहयोग से घायल युवक को आगे के उपचार के लिए बक्सर सदर अस्पताल पहुंचाया गया। सड़क दुर्घटना के बाद घायल व्यक्ति को जल्द से जल्द चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराना महत्वपूर्ण होता है। इस घटना में स्थानीय लोगों और सड़क के सारथी टीम ने तत्काल सहायता उपलब्ध कराने की कोशिश की। प्राथमिक उपचार के बाद घायल को सदर अस्पताल पहुंचाया गया, जहां चिकित्सक उसकी स्थिति पर नजर रख रहे हैं।

हादसे में गंभीर रूप से घायल हर्षित पांडेय का फिलहाल बक्सर सदर अस्पताल में इलाज चल रहा है। चिकित्सक उनकी स्थिति को देखते हुए उपचार कर रहे हैं। उपलब्ध जानकारी के अनुसार, बेहतर इलाज की आवश्यकता पड़ने पर उन्हें किसी बड़े अस्पताल में रेफर किया जा सकता है। हालांकि, रेफर किए जाने को लेकर अंतिम निर्णय चिकित्सकों की ओर से लिया जाना है। घायल युवक की गंभीर स्थिति को देखते हुए परिजन भी अस्पताल पहुंच गए हैं। वे चिकित्सकों से उसकी सेहत और उपचार के संबंध में जानकारी ले रहे हैं। अस्पताल में परिजनों की मौजूदगी में आगे के इलाज को लेकर आवश्यक निर्णय लिए जा रहे हैं। दुर्घटना की जानकारी मिलने के बाद हर्षित पांडेय के परिजन अस्पताल पहुंचे। वे घायल के उपचार की जानकारी ले रहे हैं और उसके बेहतर इलाज को लेकर चिकित्सकों के संपर्क में हैं। बताया गया है कि हर्षित के भाई मुकुल पांडेय चिकित्सा क्षेत्र से जुड़े हुए हैं और अस्पताल में इलाज के दौरान मौजूद हैं। परिजनों के अस्पताल पहुंचने के बाद घायल के उपचार से संबंधित जानकारी प्राप्त करने और आगे की चिकित्सा व्यवस्था पर ध्यान दिया जा रहा है। फिलहाल हर्षित का इलाज जारी है। उनकी स्थिति को देखते हुए चिकित्सक आगे की उपचार प्रक्रिया निर्धारित कर सकते हैं।

रेलवे स्टेशन पर पकड़ी गईं दो महिलाओं की पोटली से निकले 20 हजार के चांदी के गहने; ट्रेन में चोरी का आरोप



बक्सर (संवाददाता)। बक्सर रेलवे स्टेशन पर यात्रियों के सामान की चोरी के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के दौरान रेलवे सुरक्षा बल और राजकीय रेल पुलिस की संयुक्त टीम को बड़ी सफलता मिली है। पुलिस ने 27 अक्टूबर 2026 की शाम स्टेशन के प्लेटफॉर्म संख्या-3 से दो महिलाओं को गिरफ्तार किया। तलाशी के दौरान उनके पास मौजूद कपड़े की एक पोटली से चांदी की एक जोड़ी पायल और तीन जोड़ी बिछिया बरामद की गईं। बरामद आभूषणों की अनुमानित कीमत करीब 20 हजार रुपये बताई गई है। पुलिस के अनुसार, प्रारंभिक पूछताछ में दोनों महिलाओं ने कथित तौर पर कोलकाता से आ रही एक ट्रेन में यात्री के बैग से आभूषण चोरी करने की बात स्वीकार की। गिरफ्तार महिलाओं को आगे की कानूनी कार्रवाई के लिए [illegible]बक्सर के सुपुर्द कर दिया गया है।

आरपीएफ इंस्पेक्टर कुंदन कुमार की ओर से जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, यात्रियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने और रेलवे परिसर में चोरी की घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए RPF तथा GRP की संयुक्त टीम लगातार गश्त और निगरानी कर रही थी। इसी दौरान 27 अक्टूबर की शाम करीब 7:30 बजे बक्सर रेलवे स्टेशन के प्लेटफॉर्म संख्या-3 स्थित वेटिंग हॉल के समीप दो महिलाएं संदिग्ध परिस्थितियों में दिखाई दीं।

संयुक्त टीम ने संदेह के आधार पर दोनों महिलाओं को रोककर नियमानुसार तलाशी ली। इस दौरान उनके पास रखी कपड़े की एक पोटली से चांदी की एक जोड़ी पायल और तीन जोड़ी बिछिया बरामद हुईं। इन आभूषणों की अनुमानित कीमत करीब 20 हजार रुपये बताई गई है। बरामदगी के बाद पुलिस ने दोनों महिलाओं को हिरासत में लेकर पूछताछ की।

प्रेस विज्ञप्ति के मुताबिक, प्रारंभिक पूछताछ में दोनों महिलाओं ने कथित रूप से कोलकाता से आ रही एक ट्रेन में यात्री के बैग से बरामद आभूषण चोरी करने की बात स्वीकार की। इसी जानकारी के आधार पर GRP बक्सर को सौंप दिया गया है। अब राजकीय रेल पुलिस मामले की आगे की जांच कर रही है।

रेलवे परिसर और ट्रेनों में यात्रियों के सामान की चोरी रोकने के उद्देश्य से संयुक्त टीम की ओर से निगरानी की जा रही थी। इसी दौरान दोनों महिलाओं को पकड़ा गया। हालांकि, उपलब्ध प्रेस विज्ञप्ति में संबंधित यात्री की पहचान, ट्रेन के नाम और चोरी की घटना के सटीक समय का विस्तृत उल्लेख नहीं किया गया है।

दिवाली में जुआरियों पर पुलिस की रहेगी पैनी नजर, एसपी का निर्देश



बक्सर (संवाददाता)।

दिवाली का त्योहार आने वाला है। ऐसे में जुआरियों के खिलाफ पुलिस सजग रहे और सूचना मिलते ही कार्रवाई करे। इसका सख्त निर्देश मंगलवार को पुलिस कप्तान शुभम आर्य ने डुमरांव एसडीपीओ भास्कर रंजन को दिए। कप्तान डुमरांव अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी के कार्यालय का निरीक्षण करने पहुंचे थे। इस दौरान उन्होंने पूरे अनुमंडल क्षेत्र में हाल में हुई घटनाओं का ब्योरा तलब किया। और समीक्षा के दौरान इस बात के निर्देश दिए। अनुसंधान में लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। सभी थानाध्यक्षों और उनके साथी अधिकारियों को इस बात के निर्देश आप दें दे।

साथ ही मादक पदार्थ का कारोबार करने वालों के खिलाफ कठोर कार्रवाई का निर्देश उन्होंने दिया। पिछले कुछ दिनों के दौरान डुमरांव पुलिस ने बड़े पैमाने पर हेरोइन जैसे मादक पदार्थ की तस्करी करने वालों के खिलाफ ठोस कार्रवाई की है। वहीं दूसरी तरफ सरकार का भी स्पष्ट निर्देश है। ऐसे लोगों के खिलाफ कठोर कार्रवाई करनी है। साथ ही अवैध शराब की तस्करी और कारोबार पर प्रभावी अंकुश लगाने के लिए भी सख्त कार्रवाई करने का निर्देश दिया। संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखने और पर्व के दौरान शांति एवं कानून-व्यवस्था बनाए रखने की हिदायत भी दी गई।

साधु का भेष बनाकर महिला के सोने के गहने ठगने का आरोप, बक्सर में छह संदिग्ध हिरासत में; हरदोई से जुड़े तार



बक्सर (संवाददाता)। बिहार के बक्सर नगर थाना क्षेत्र में साधु का वेश धारण कर महिला को झांसे में लेकर सोने के गहने ठगने का मामला सामने आया है। छोटकी सरिमपुर मोहल्ले में मंगलवार की शाम हुई इस घटना के बाद इलाके में हलचल मच गई। आरोप है कि साधु के भेष में पहुंचे एक व्यक्ति ने अपनी बातों में उलझाकर महिला से सोने के गहने ले लिए और वहां से निकलने लगा। हालांकि, कुछ ही देर बाद महिला को अपने साथ हुई ठगी का एहसास हुआ तो उसने शोर मचाना शुरू कर दिया। महिला की आवाज सुनकर आसपास के लोग मौके पर जुट गए और संदिग्ध व्यक्ति को पकड़ लिया। स्थानीय लोगों ने तत्काल इसकी सूचना नगर थाना पुलिस को दी। सूचना मिलने के बाद पहुंची पुलिस ने पकड़े गए व्यक्ति को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू की। पूछताछ के दौरान मिली जानकारी के आधार पर पुलिस ने कथित तौर पर उसके अन्य साथियों को भी हिरासत में ले लिया। इस मामले में अब तक कुल छह लोगों को पुलिस हिरासत में लिया गया है। पुलिस सभी से पूछताछ कर घटना की पूरी कड़ी का पता लगाने में जुटी है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, मंगलवार की शाम छोटकी सरिमपुर मोहल्ले में एक व्यक्ति साधु के वेश में पहुंचा था। आरोप है कि उसने महिला से बातचीत शुरू की और अपनी बातों में उलझाकर उसका विश्वास जीत लिया। इसी दौरान कथित रूप से महिला के सोने के गहने ठग लिए गए। गहने लेने के बाद वह व्यक्ति वहां से निकलने लगा। शुरुआत में महिला को इस बात का अंदाजा नहीं हुआ कि उसके साथ धोखाधड़ी हुई है, लेकिन कुछ देर बाद जब उसे गहने गायब होने का एहसास हुआ तो उसने शोर मचाकर आसपास के लोगों को बुलाया। महिला की आवाज सुनकर मोहल्ले के लोग घटनास्थल पर पहुंचे और संदिग्ध व्यक्ति को पकड़ लिया। लोगों की तत्परता के कारण वह मौके से भाग नहीं सका।

इसके बाद स्थानीय लोगों ने पुलिस को सूचना देकर उसे पुलिस के हवाले कर दिया। घटना की सूचना मिलने के बाद नगर थाना पुलिस ने मामले को गंभीरता से लेते हुए पकड़े गए व्यक्ति से पूछताछ शुरू की। पुलिस यह जानने का प्रयास करने लगी कि वह अकेले इस घटना को अंजाम दे रहा था या उसके साथ अन्य लोग भी शामिल थे। पूछताछ के दौरान कथित तौर पर कुछ अन्य लोगों के बारे में जानकारी मिली।

हिरासत में लिए गए छह लोगों की पहचान

पुलिस के अनुसार, हिरासत में लिए गए लोगों की पहचान रामकरण (45 वर्ष), लल्लन (32 वर्ष), सुनील (25 वर्ष), राजकुमार (32 वर्ष), कपिल (24 वर्ष) और जितेंद्र (22 वर्ष) के रूप में हुई है। सभी उत्तर प्रदेश के हरदोई जिले के निवासी बताए जा रहे हैं। पुलिस इन लोगों से पूछताछ कर रही है कि वे बक्सर कब पहुंचे थे, उनके बीच क्या संबंध है और छोटकी सरिमपुर मोहल्ले में हुई कथित ठगी की घटना में किसकी क्या भूमिका रही। जांच के दौरान पुलिस यह भी पता लगाने की कोशिश कर रही है कि क्या सभी लोग एक साथ इस तरह की वारदात को अंजाम देते थे या घटना में कुछ लोगों की ही प्रत्यक्ष भूमिका थी।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक मतिउर्रहमान द्वारा अजीमाबाद प्रिंटर्स, आर. सी. एफ./105, ग्राउण्ड फ्लोर, बी. एच. कॉलोनी, भूतनाथ रोड, कंकड़बाग, पटना- 800026 बिहार से मुद्रित एवं अमला टोली, मेन रोड़, बक्सर -802101, बिहार से प्रकाशित, संपादक- मतिउर्रहमान, E-mail:- qalamlok@gmail.com, Regn. No. BIHHIN/2017/72480